दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र

CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION

जम्मू विश्वविद्यालय

UNIVERSITY OF JAMMU

जम्मू

JAMMU

स्व–शिक्षण सामग्री

SELF LEARNING MATERIAL

कला स्नातक–सत्र–द्वितीय

B.A. SEMESTER-II

SESSION – 2025 ONWARDS

पाठ्यक्रम संख्या :HI-201
COURSE CODE:HI-201

इकाई संख्या–एक से पाँच
UNIT 1-V

CREDITS- 06
B.A. HINDI(GENERAL)

आलेख संख्या : 1 से 13 तक
LESSON NO: 1-13

सत्र : द्वितीय
SEMESTER-II

Dr. JASPAL SINGH
COURSE CO-ORDINATOR

इस पाठ्य सामग्री का रचना स्वत्व/प्रकाशनाधिकार
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180006 के पास सुरक्षित है।

http:/www.distanceeducation.in
Printed and published on behalf of the Centre for Distance & Online Education, University of Jammu, Jammu by the Director, CDOE, University of Jammu, Jammu

B.A HINDI (GENERAL) **CREDITS- 06** **COURSE CODE: HI-201**

Course Contributors:

1. **Dr. Madhu Sandhu** **Lesson - 4 to 9**
Retd. Prof., Dept. of Hindi,
Guru Nanak Dev University of Amritsar

2. Dr. Sunita Sharma **Lesson - 10 to 11**
Sr. Assistant Prof., Dept. of Hindi,
Guru Nanak Dev University of Amritsar

3. Dr. Deepika Sharma **Lesson - 1 to 3,12 to 13**
Lecturer in Hindi,
Govt. M.A.M. College, Jammu

PROOF READING/ CONTENT EDITING & REVIEW
Dr. Pooja Sharma, Lecturer in Hindi, CDOE
University of Jammu, Jammu

©Centre for Distance & Online Education, University of Jammu, Jammu
2025

- All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from the CDOE, University of Jammu.

- The script writer shall be responsible for the lesson/ script submitted to the CDOE and any plagiarism shall be his/ her entire responsibility.

Syllabus of B.A. Hindi (हिन्दी)

Semester - 2nd

Course Code-HI-201 **Total Marks : 100**
Credits - 06 **Sessional Assessment : 20**
Time - 3hrs **Semester Examination : 80**

Examination to be held in May 2026,2027,2028

Title - कहानी एवं व्याकरण

भाग–क : कहानी

निर्धारित पुस्तक – गद्य फुलवारी– सम्पादक मंडल, डॉ शहाबुद्दीन शेख एवं अन्य – प्रकाशक – राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

इकाई–एक : आँसुओ की होली, ममता एवं आतिथ्य

1. कहानियों की समीक्षा
2. पात्र–परिचय
3. उद्देश्य / समस्या

इकाई–दो : मवाली, चीफ की दावत एवं पोस्ट मैन

1. कहानियों की समीक्षा
2. पात्र–परिचय
3. उद्देश्य / समस्या

इकाई–तीन : अकेली एवं जगदम्बा बाबू गांव आ रहे हैं

1. कहानियों की समीक्षा
2. पात्र–परिचय
3. उद्देश्य / समस्या

भाग–ख : व्याकरण

इकाई–चार :

1. समास – परिभाषा एवं भेद, समास विग्रह और नाम
2. कारक – परिभाषा एवं भेद
3. विरामादि चिह्न

इकाई–पांच

1. अपठित गद्यांश
2. अशुद्ध शब्दों / वाक्यों को शुद्ध करना
3. अनुच्छेद लेखन

Syllabus of B.A. SHindi (हिन्दी)
Semester - 2nd

Course Code-HI-201 | **Total Marks : 100**

Credits - 06 | **Sessional Assessment : 20**

Time - 3hrs. | **Semester Examination : 80**

Examination to be held in May 2026,2027,2028

प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

1– प्रत्येक इकाई में से एक – एक दीर्घ उत्तरापेक्षी प्रश्न पूछा जाएगा। जिनमें से केवल दो प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500–600 शब्दों में देना होगा।

2x15=30

2– किन्हीं दो इकायों में से शत – प्रतिशत विकल्प के साथ दो सप्रसंग व्याख्या पूछी जाएगी। अन्य तीन इकाइयों में से एक – एक लघु उत्तरापेक्षी प्रश्न (कुल तीन) पूछें जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250–300 शब्दों में देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं दिया जाएगा।

5x7=35

3. प्रत्येक इकाई में से एक – एक अति लघु उत्तरापेक्षी प्रश्न अनिवार्य है। कुल पाँच प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभ 70–80 शब्दों में देना होगा। इसमें कोई विकल्प नहीं दिया जाएगा।

5x3=15

कुल अंक – 80

संस्तुत पुस्तकें –

1. समकालीन हिन्दी कहानी : अंतरंग परिचय – सी.एम. योहन्नान।
2. यशपाल का कहानी संसार : अंतरंग परिचय – सी.एम. योहन्नान।
3. कहानीकार प्रेमचन्द : रचना दृष्टि और रचना शिल्प – शिवकुमार मिश्र।
4. प्रेमचन्द : कहानी का रहनुमा – जाफ़र रज़ा।

ममता, आँसुओं की होली, आतिथ्य कहानियों की सप्रसंग व्याख्या

1.0 रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 'ममता' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

1.3 'आँसुओं की होली' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

1.4 'आतिथ्य' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

1.5 सारांश

1.6 कठिन शब्द

1.7 पठनीय पुस्तकें

1.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप ममता, आँसुओं की होली और आतिथ्य कहानियों की सप्रसंग व्याख्या से परिचित हो सकेंगे।

1.2 ममता कहानी की सप्रसंग व्याख्या

1) **रोहताश्व दुर्ग के एक प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता शौण के तीक्ष्ण गंभीर प्रवाह को देख रही है। ममता विधवा थी। उसका यौवन शौण के समान ही उमड़ रहा है। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात को लिये, वह सुख के कंटक–शयन में विकल थी। वह रोहताश्व–दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असंभव था, परंतु वह विधवा थी– हिंदू विधवा संसार में सबसे तुच्छ और निराश्रय प्राणी है, तब उसकी विडंबना का कहाँ अंत था।**

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक गद्य फुलवारी में संकलित 'ममता' कहानी से ली गई हैं। इस कहानी के रचयिता जयशंकर प्रसाद जी हैं। इसमें लेखक ने भारतीय नारी पात्र ममता की त्याग भावना तथा देश–प्रेम को चित्रित किया है और साथ ही नारी की मनोस्थिति का वर्णन भी किया है।

व्याख्या :– ममता रोहताश्व दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की बेटी थी। वह रोहताश्व दुर्ग फाटक के निकट बैठकर शौण नदी के तेज़ जल–प्रवाह को देख रही थी। चूड़ामणि की बेटी ममता विधवा थी। उसका यौवन शौण नदी के समान ही उमड़ रहा था। ममता के मन में वेदना तथा मस्तक में हलचल थी। इतना ही नहीं आँखों में अश्रु थे। वह सुख के कंटक–शयन में विकल थी अर्थात् सारी सुख–सुविधाओं के पश्चात् भी वह सुखी नहीं है। वह भीतर से दुखी थी। रोहताश्व दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली संतान होने के कारण ममता के पास किसी भी चीज़ की कमी न थी, कमी थी तो केवल इस बात की वह विधवा थी। हमारे समाज में विधवा का जीवन जीना कठिन हो जाता है। हिंदू विधवा का जीवन दयनीय बन जाता है। वह त्रासद भरा जीवन जीते हुए न हँस सकती है और न ही रो सकती है। उसका हँसना निर्लज्जता का सूचक है और रोना अपशकुन का प्रतीक। उसकी विडम्बना तथा दुखों का कहीं अंत नहीं।

विशेष :–

1) लेखक ने भारतीय नारी की विडंबना का चित्रण लाक्षणिक शब्दावली में किया है।

2) खड़ी बोली तथा सरल–भाषा का प्रयोग किया है।

3) शैली भावपूर्ण है।

2) "तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया? पिता जी! यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिए। पिता जी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे? ... पिताजी! क्या भीख न मिलेगी ? ... पिताजी! मैं काँप रही हूँ ... इसकी चमक आँखों को अंधा बना रही है।"

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ 'ममता' कहानी से ली गई हैं। इसमें ममता अपने पिता पर क्रोध प्रकट करती है। शेरशाह सूरी ने अपने स्वार्थ के लिए रोहताश्व दुर्ग पर अपना अधिकार जमाने के लिए लालच देते हुए सोने, चाँदी और हीरे–जवाहरात से भरा थाल रिश्वत के रूप में भिजवाते हैं। यह देखकर ममता को गुस्सा आता है क्योंकि उसे रिश्वत पसंद नहीं है।

व्याख्या :– इसमें ममता क्रोध में अपने पिता से पूछती है कि क्या उन्होंने म्लेच्छ के द्वारा दिए गए लालच को स्वीकार कर लिया है। वह जानती थी यदि ऐसा हुआ तो अनर्थ हो जाएगा क्योंकि दुर्ग को म्लेच्छ के हाथों में सौंपना कदापि उचित न था। वह धन को वापिस लौटाने को कहती है। वह कहती है कि हम लोग ब्राह्मण हैं इसीलिए हमें इतने धन की आवश्यकता नहीं है। इतना ही नहीं वह कहती है क्या हमें भीख भी नहीं मिलेगी। यदि

भीख से जीवन चल सकता है तो रिश्वत की क्या जरूरत है। ममता कांपते हुए कहती है कि सोने तथा धन की चमक आँखों को अंधा बना रही हैं। वह सोने को वहाँ से (यानी की जो उसके पास रखा था) हटाना चाहती थी।

विशेष :–

1 ममता के उच्च चरित्र, निष्ठा तथा स्वाभिमान का चित्रण हुआ है।

2 ममता का आक्रोश भी देखने को मिलता है।

3 भाषा सरल, सहज और भावपूर्ण है।

4 खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

3) मैं नहीं जानती थी कि वह शहंशाह था, वो साधारण मुगल, पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी खुदवाने के भय से भयभीत ही थी। भगवान ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल– मैं अपने चिर विश्राम गृह में जाती हूँ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ कहानी 'ममता' से अवतरित हैं। इसमें जयशंकर ने कहा है कि ममता, हुमायूँ को अपनी झोंपड़ी में आश्रय देकर अपने धर्म का पालन करती है। ममता के इस व्यवहार से हुमायूँ खुश होता है और वृद्ध स्त्री ममता की झोंपड़ी की जगह महल बनवाने का आदेश देता है।

व्याख्या :– घटना को घटित हुए 47 वर्ष बीत गए थे। ममता वृद्ध आवस्था में पहुँच गई थी। अब उसकी उम्र 75 वर्ष की थी। वह रोग से पीड़ित थी। गाँव की स्त्रियाँ उसके आस–पास बैठी थी। अचानक वहाँ एक अश्वारोही आया। वह नक्शे के आधार पर जानना चाहता था कि वह स्थान कौन–सा है जहाँ पर हुमायूँ ने विश्राम किया था। जब वृद्ध ममता उस अश्वारोही के मुँह से सुनती है तो उसे पास बुलाकर कहती है कि मैं नहीं जानती थी आश्रय पाने वाला व्यक्ति सम्राट था या साधारण मुसलमान पर इसमें कोई संदेह नहीं कि वह एक दिन इसी झोंपड़ी में रहे थे। मुझे पता लगा कि वह मेरा घर बनवाना चाहते थे। जिसकी आज्ञा उन्होंने अपने सैनिकों को दी। मैं जीवन भर भयभीत रही कि मेरी झोंपड़ी खुदवाई न जाए और मेरी यह इच्छा ईश्वर ने भी सुन ली। अब मैं इस संसार से विदा ले रही हूँ। अब चाहे इस झोंपड़ी का मकान बनाओ या महल क्योंकि इसमें मेरा कुछ लेना देना नहीं है। यह कहते हुए उसके प्राण–पखेरू अंत में उड़ गए।

विशेष :–

1 इसमें ममता की मनोस्थिति का वर्णन हुआ है।

2 नारी की त्याग भावना का चित्रण हुआ है।

3 खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

4 उूर्द, फारसी शब्दों का मिश्रण मिलता है।

4) "वहाँ एक अष्टकोण मंदिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया– "सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गंगनचुंबी मंदिर बनाया।" पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।

प्रसंग :– इन पंक्तियों में जयशंकर ने दर्शाया है कि जिसने शरण दी उसका कहीं पर भी नाम न था। कहने का अभिप्राय यह है कि हुमायूँ जिस झोंपड़ी में रहे, वहाँ अष्टकोण मंदिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया जिस पर हुमायूँ का ही नाम था। उस वृद्ध स्त्री ममता, जिसने राजा को शरण दी उसका कहीं पर भी नाम न था।

व्याख्या :– लेखक का कथन है कि जिस स्थान या जगह पर कभी हुमायूँ ने चौसा के युद्ध से भागकर एक रात विश्राम किया। उस स्थान या जगह पर रहने वाली वृद्ध स्त्री ममता ने उसके प्राणों की रक्षा की थी। इसलिए हुमायूँ उस स्थान पर भवन बनाना चाहता था। उसकी मृत्यु के पश्चात् वहाँ आठ कोणों वाला एक मंदिर बना। उस पर शिलालेख लगाया गया कि सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में गगनचुंबी मंदिर बनवाया लेकिन हुमायूँ को आश्रय देने वाली स्त्री ममता का नाम कहीं पर भी न था।

विशेष :–

1 इसमें राजकर्मचारियों की अदूरर्शिता पर करारी चोट की गई है।

2 ममता की त्यागमयी छवि का अंकन है।

3 खड़ी बोली, सरल, सहज भाषा का प्रयोग किया है।

4 ऐतिहासिकता का उल्लेख है।

1.3 'आँसुओं की होली' की सप्रसंग व्याख्या

1) होली का दिन है। बाहर हाहाकर मचा हुआ है। पुराने जमाने में अबीर और गुलाल के सिवा और कोई रंग न खेला जाता था। अब नीले हरे, काले, सभी रंगों का मेल हो गया है और इस संगठन से बचना, आदमी के लिए तो संभव नहीं। हाँ देवता बचे।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'आँसुओं की होली' से ली गई हैं। इसमें लेखक ने होली के त्योहार का वर्णन किया है। इस त्योहार के दिन रंगों का इतना महत्व है कि अमीर–गरीब सब एक हो जाते हैं। इनसे कोई भी बच नहीं सकता।

व्याख्या :– लेखक का कथन है कि होली का दिन जब आता है तो सभी जगह हल्ला मचा होता है। घर–बाहर, बाज़ार–नुक्कड़ सभी तरफ होली के रंगों में मस्त लोगों का शोर मचा हुआ है। लेखक कहता है कि पुराने ज़माने में होली के समय दो रंगों का ही प्रयोग होता था। अबीर और गुलाल से सारा वातावरण एक हो जाता था परंतु आज कई तरह के रंगों का प्रयोग होने लगा है। जिससे सारा वातावरण लाल, नीला, पीला, काला, हरा आदि रंगों में डूब जाता है। अब इन रंगों से बचना संभव नहीं है। अगर कोई इन रंगों से बच जाता है तो वह कोई देवता ही होगा। आदमी स्वयं को रंगों से दूर नहीं कर सकता। यह कार्य केवल देवताओं का ही है।

विशेष :–

1 इन पंक्तियों में होली के दिन की मस्ती तथा रंगों का वर्णन किया है।

2 भाषा सरल तथा प्रवाहमयी है।

3 विवरणात्मक शैली का भावात्मकता ने कथन को सरसता प्रदान की है।

2) तुमसे क्या कहूँ, कितना सरस, कितना भाव, कितना साहसी आदमी था। देश की दशा देख–देखकर उसका खून जलता रहता था। 19–20 भी कोई उम्र होती है, पर वह उसी उम्र में अपने जीवन का मार्ग निश्चित कर चुका था। सेवा करने का अवसर पाकर वह इस तरह उसे पकड़ता था, मानो सम्पत्ति हो। जन्म का विरागी था। वासना तो उसे छू ही न गयी थी। हमारे और साथी सैर–सपाटे करते थे, पर उसका मार्ग सबसे अलग था।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ लेखक प्रेमचन्द द्वारा लिखित कहानी 'आँसुओं की होली' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में यह बताया है कि जब श्री विलास की पत्नी उन पर रंग डालती है तो वह होली न खेलने का रहस्य अपनी पत्नी को बताता है। पत्नी द्वारा रंग डालने पर उन्हें अपना अतीत याद आता है। जिसके चलते वह अपनी पत्नी के समक्ष अपने मित्र मनहर का वर्णन करता है।

व्याख्या :– मनहर बहुत सीधा तथा सरल व्यक्ति था। वह पक्का देशभक्त था। उसे लोगों की सेवा करना बहुत अच्छा लगता था। देश की खराब दशा देखकर उसे बहुत गुस्सा आता था। उस समय मनहर की उम्र केवल 19–20 साल की थी, उसने छोटी–सी उम्र में ही अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित कर लिया है। उसे क्या करना है वह अच्छी तरह से जानता था, उसे दूसरों की सेवा करना बहुत अच्छा लगता था। वह सेवा का कोई भी अवसर नहीं छोड़ना चाहता था। दूसरों की सेवा करके उसे ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसे खजाना मिल गया हो। वह

जन्म से ही वैरागी हो गया था। वह छल–कपट तथा मोह–ममता से दूर रहता था और हम लोग अपना लक्ष्य घूमने–फिरने में मानते थे। उसने अपने जीवन का मार्ग चुन लिया था।

विशेष :–

1 छोटी–सी उम्र में अपना सर्वस्व देश की सेवा में लगा देना एक वैरागी का ही काम हो सकता है।

2 भाषा सरल और स्पष्ट है।

3 भावात्मक शैली का प्रयोग किया है।

3) अब बहुत चाहता हूँ कि कोई मुझसे सेवा का काम ले। खुद आगे नहीं बढ़ सकता, लेकिन पीछे चलने को तैयार हूँ। पर मुझसे कोई काम लेने वाला भी नहीं, लेकिन आज वह रंग डालकर तुमने मुझे उस धिक्कार की याद दिला दी। ईश्वर मुझे ऐसी शक्ति दे कि मैं मन में ही नहीं, कर्म से भी मनहर बनूँ।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचन्द की कहानी 'आँसुओं की होली' से ली गई हैं। इसमें स्पष्ट हुआ है कि मनहर की मृत्यु का श्री विलास पर गहरा प्रभाव पड़ा है। वह पश्चाताप कर रहा है और अपने जीवन को नवीन उद्देश्य प्रदान करना चाहता है परन्तु उसके मन की कायरता उसे आगे बढ़ने से रोकती है।

व्याख्या :– मित्र मनहर की मृत्यु के पश्चात् श्रीविलास ने होली खेलना ही छोड़ दिया। इतना ही नहीं होली के साथ–साथ अन्य त्योहारों को भी खेलना छोड़ दिया क्योंकि उसे अपने मित्र की बातें याद आती हैं। उसे ऐसा लगता है कि ईश्वर ने उसमें दूसरों की सेवा करने का गुण नहीं दिया है। श्री विलास दूसरों की सेवा करना चाहता है लेकिन अपनी कायरता के कारण आगे बढ़ नहीं पाता। वह दूसरों की उंगली पकड़कर मानव सेवा करना चाहता है। चंपा के रंग डालने से उसके मन में छिपी कायरता स्पष्ट होती है और मनहर की बातें याद आने पर वह दुखी होता है। वह अपने को धिक्कारता है। ईश्वर से प्रार्थना करता है कि ईश्वर उसे ऐसी शक्ति प्रदान करे, जिससे वह मन से ही नहीं कर्म से भी मनहर जैसा बन सके।

विशेष :–

1 इसमें श्री विलास के पश्चाताप का वर्णन है। वह भी दूसरों की सेवा करना चाहता है।

2 इसमें भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है।

3 भावात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

4) सारे कपड़े रंगवा डाले, दफ्तर कैसे जाऊँगा। यह दिल्लगी मुझे ज़रा भी नहीं भाती। मैं इसे बदमाशी कहता हूँ। तुमने संदूक की कुंजी क्यों दे दी? क्या मैं इतना पूछ सकता हूँ?

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी 'आँसुओं की होली' से ली गई हैं जिसमें लेखक ने होली के दिन होली की मस्ती से बचने वालों की दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या :– श्री विलास को होली खेलना पसंद नहीं था इसलिए जब उसकी पत्नी के रिश्तेदार होली खेलने विलास के घर आते हैं तो वह बीमारी का नाटक करता है। पत्नी के भाई ने विलास के सारे कपड़े निकालकर रंग डाले। यहाँ तक कि रूमाल भी न छोड़ा। यह दिखकर विलास को गुस्सा आ गया कि उसके सारे कपडे गंदे हो गये हैं अब वह दफ्तर कैसे जाएगा। उसे अपने सालों का मजाक पसंद नहीं आया था। उनकी बदमाशी को देखकर वह गुस्से से पत्नी को संदूक की चाबी देने का कारण भी पूछता है।

विशेष :–

1 इसमें सरल, सहज भाषा का प्रयोग हुआ है।

2 संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

1.4 'आतिथ्य' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

1) रामशरण उन पहाड़ी देशों में दूर–दूर तक घूम आए। साहसी व्यक्तियों से पूछ–पूछकर बहुत सी अद्‌भुत कथाएँ, वृत्तान्त और वहाँ की प्रकृति छटा नारी रूप और विचित्र आचार–व्यवहार की बातें सुनी थीं। सुना था, उस देश के उदार और भोले निवासी भटककर अपने गाँव में आ गए। अतिथि के सत्कार का अवसर पाने के लिए आपस में झगड़ बैठते हैं वहाँ चम्मा के रंग की गृह–वधुएँ अतिथि की थकावट मिटाने के लिए उसके शरीर को अपने हाथों दबाती हैं, अपने सामर्थ्य भर अतिथि के लिए कोई सुविधा दुर्लभ नहीं रहने देतीं। वह देश देखने के लिए रामशरण का मन किलक उठता था।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्‌यपुस्तक 'गद्य फुलवारी' में संकलित यशपाल की कहानी 'आतिथ्य' से ली गई हैं। इनकी कहानियाँ यथार्थ से जुड़ी हुई हैं। 'अतिथि' कहानी में कहानीकार ने रामशरण के पर्वतीय प्रेम को उजागर किया है। इसमें आतिथ्य के साथ हुआ दुर्व्यवहार और उसकी पीड़ा को दर्शाया है।

व्याख्या :– लेखक कहता है कि रामशरण का मन कल्पना में डूबा हुआ है और वह पहाड़ी क्षेत्र में दूर–दूर तक घूमने के सपने देखता रहता था। वह सोचता है कि वह पहाड़ी क्षेत्र में घूम आए। उसने अनेक साहसी व्यक्तियों से पूछ–पूछकर वहाँ की उद्‌भुत कथाएँ, तरह–तरह के वृत्तान्त, वहाँ की प्राकृतिक छटा तथा वहाँ का नारी रूप और विचित्र आचार–व्यवहार की बातें सुनी थीं। उसने यह भी सुना था कि उस देश के उदार तथा भोले–भाले निवासी भटक–भटक कर अपने गाँव आ गए थे। वे सभी अतिथि का सत्कार पाने के लिए आपस में झगड़ बैठते थे क्योंकि अतिथि की सेवा तथा उनका ध्यान रखना वह अपना धर्म मानते थे। इतना ही नहीं वहाँ चंपा के फूल के रंग की भांति पहाड़ी क्षेत्र की स्त्रियाँ अतिथि की थकावट को दूर करने के लिए उनके शरीर को अपने हाथों

से दबाती है। उनके सामर्थ्य की हर वस्तु तथा सुविधाओं में कोई कमी नहीं छोड़ती हैं। इस प्रकार के देश या पहाड़ी क्षेत्र के लोगों की सेवा–भाव या अतिथि सत्कार को देखने के लिए रामशरण का मन मचल उठता है। वह भी इसी अतिथि सत्कार का आनंद लेना चाहता था।

विशेष :–

1) लेखक ने रामशरण के मन में व्याप्त पहाड़ी क्षेत्र में घूमने की इच्छा को प्रकट किया है।

2) तत्सम्, तद्भव शब्दों का मिला–जुला प्रयोग हुआ है।

3) इसमें सरल और सरस भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

2) रामशरण पहले ही मकान के पास पहुँचा था कि एक कुत्ता गुर्राकर भौंकने लगा, फिर दूसरा और फिर बहुत से कुत्ते भौंकने लगे। कुत्तों के भौंकने से रामशरण को भय न लगा। कुत्ता मनुष्य की बस्ती का संकेत और मनुष्य का साथी है। उसने कुत्तों को पुचकारा परन्तु उनकी ओर बढ़ने का साहस न हुआ। उसने दूर से ही पुकारा, "कोई है? ज़रा देखना मुसाफिर है।"

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'गद्य फुलवारी' में संकलित यशपाल की कहानी 'आतिथ्य' से ली गई हैं। यह कहानी अतिथि के मनोभावों से जुड़ी है। यहाँ लेखक ने रामशरण को जंगल पार करने के बाद गाँव में पहुँचता हुआ दिखाया है।

व्याख्या :– रामशरण अनेक कठिनाइयों के पश्चात् जब गाँव पहुँचता है तो उसे देखकर कुत्ता गुर्राकर भौंकने लगता है। एक कुत्ते ने नहीं बल्कि बहुत सारे कुत्ते एक साथ भौंकना शुरू हो गये। कुत्तों के भौंकने पर रामशरण को डर नहीं लगता। वह जानता था कि मानव की बस्ती का संकेत करने वाला जानवर कुत्ता ही है क्योंकि प्राचीन काल से कुत्ता मानव का मित्र ही रहा है। उसने कुत्तों को पुचकारा लेकिन आगे बढ़ने का साहस नहीं किया। रामशरण के मन में डर भी था। उसने दूर से सहायता के लिए आवाज़ लगाई कि कोई है, एक मुसाफिर आया है। मार्ग का भटका मुसाफिर हूँ।

विशेष :–

1 लेखक ने कुत्तों को मानव का साथी माना है।

2 भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

3 मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है।

3) रामशरण वन में लौटकर कहाँ जाता? जंगली जानवरों से रक्षा पाने के लिए वह बस्ती के जितने समीप सम्भव था, वह अखरोट के पेड़ के नीचे बैठ गया। कम्बल में शरीर को लपेट लिया और पेड़ के तने के सहारे टिक गया। टार्च और बल्लम उसने सँभालकर तैयारी से रख लिये। कुछ देर बाद बूँदें टप–टप पड़ने लगीं और हवा का ज़ोर बढ़ गया। रामशरण का सिर भूख और थकान से दरद करने लगा, सर्दी से दाँत बजने लगे। ज्यों–ज्यों जाड़ा अधिक लग रहा था सिर का दरद बढ़ता जा रहा था।

प्रसंग :– प्रस्तुत गद्यांश यशपाल द्वारा रचित कहानी 'आतिथ्य' से ली गई हैं। इसमें लेखक ने यह बताया है कि किस प्रकार गाँव वाले रामशरण का निरादर कर उसे गाँव में घुसने नहीं देते हैं।

व्याख्या :– लेखक कहता है कि गाँव वाले रामशरण को गालियाँ देते हुए गाँव में पाँव नहीं रखने देते। उसे धमकी भी देते हैं और वह वहाँ से कुछ दूरी पर आ गया था। वह वापिस जंगल लौटकर कैसे जाता। वह गाँव के पास ही रहता है ताकि जंगली जानवरों से बचा रहे। वह गाँव के पास अखरोट के पेड़ के नीचे बैठ गया। सर्दी से बचने के लिए कम्बल से शरीर को लपेट देता है और स्वयं को पेड़ के तने के सहारे टिका कर बैठ गया। जंगली जानवरों से बचने के लिए और अपनी रक्षा हेतू टार्च और बल्लम संभालकर रख लिये थे। कुछ देर पश्चात् बूंदे टप–टप बरसने लगी थीं और हवा भी तेज़ी से चल रही थी। रामशरण का सिर भूख और थकान से दर्द कर रहा था और ठंठ के कारण उसके दाँत कट–कट कर रहे थे। जैसे–जैसे सर्दी बढ़ती जा रही थी वैसे–वैसे रामशरण के सिर का दर्द भी बढ़ता जा रहा था।

विशेष :–

1 रामशरण का भयंकर सर्दी में फँसे होने का करुणापूर्ण चित्र उभारा है।

2 भाषा भावानुकूल और विषयानुकूल है।

3 अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे– टार्च।

4) रामशरण को दूध पिलाकर लड़की की माँ उससे रोटी खाने का आग्रह कर रही थी। अनिच्छा और कठिनता से रामशरण एक–एक टुकड़ा मुख में डाल, चबाकर निगलने का यत्न कर रहा था। मर्द समीप बैठा देश के लोगों के बदमाश होने और अपने गाँव के लोगों के जालिम होने की बात दोहराता जा रहा था कि कोई देख ले तो कैसी मुसीबत हो। देश के लोगों को तो दाव से दो टुकडे कर कुत्तों को ही डाल दे तो सबसे अच्छा। ... दरवाजे पर पाहुना आए तो मुसीबत है। टिकाओं तो घर की औरत भाग ले जाए, गाँव के लोग लड़े। न टिकाओं तो धरम बिगाड़ो कि पाहुने को टिकाया नहीं ...।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक 'गद्य फुलवारी' में संकलित यशपाल द्वारा रचित कहानी 'आतिथ्य' से ली गई हैं। इसमें लेखक ने पहाड़ी मर्द की पत्नी द्वारा रामशरण का अतिथि के रूप में सेवा–सत्कार

करते हुए दिखाया है।

व्याख्या :– लेखक कहता है कि मन में छिपे आदर्श कभी समाप्त नहीं होते। जिसमें सेवा–सत्कार की भावना हो वह उसके भीतर से कभी खत्म नहीं होती। लड़की की माँ अपनी ममता अतिथि पर उड़ेलते हुए दूध देती है और रामशरण भी कटोरे का सारा दूध पी लेता है। इसके पश्चात् लड़की की माँ उसे रोटी खाने का आग्रह करती है। थकावट के कारण रामशरण बड़ी ही कठिनता से रोटी का एक–एक टुकड़ा मुँह में डालकर उसे निगलने का प्रयास कर रहा था। उसके समीप पहाड़ी मर्द बैठा हुआ है। वह बार–बार यह कह रहा था कि नीचे समतल भूमि पर रहने वाले लोग बदमाश हैं और अपने गाँव के लोगों को जालिम बता रहा था। वह कहा रहा था कि यदि किसी ने अतिथि को अंदर आते देख लिया होता तो न जाने कौन–सी मुसीबत टूट पड़ती। नीचे समतल धरातल पर रहने वाले लोगों को दाव (एक हथियार का नाम) से दो टुकड़े करके, उन टुकड़ों को कुत्तों के सामने फैंकना ही सबसे अच्छा है क्योंकि वह भरोसे के लायक नहीं हैं। पहाड़ी मर्द बार–बार इसी बात को दोहरा रहा था कि अतिथि को शरण दो या उसे अपने घर में पनाह दो तो इस प्रकार की मुसीबत झेलनी पड़ती है। गाँव के लोगों को पता चले तो वह लड़ने को तैयार हो जाते हैं। यदि अतिथि को घर में न टिकाया जाए तो आतिथ्य का धर्म बिगड़ता है कि अतिथि का सत्कार नहीं किया गया। स्पष्ट है कि पहाड़ी मर्द के मन में पीड़ा है और यह पीड़ा मात्र उसकी नहीं बल्कि पहाड़ी क्षेत्र की है।

विशेष :–

1 इसमें मर्द के मन में छिपी पीड़ा को उजागर किया गया है।

2 भावानुकूल शब्द का प्रयोग है।

3 सरल वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

1.5 सारांश

प्रस्तुत पाठ में पाठ्यक्रम में निर्धारित तीनों कहानियों की प्रमुख सप्रसंग व्याख्याओं का ज्ञान दिया गया है जो आपको तीनों कहानियों के अध्ययन में सहायक हैं।

1.6 कठिन शब्द

- कंटक
- विडंबना
- तुच्छ

- विचित्र
- जाड़ा
- मस्तक
- कुंजी
- बदमाशी
- धिक्कार

1.7 पाठनीय पुस्तकें

- सं॰ डॉ. शहाबुद्दीन शेख–गद्य फुलवारी

ममता, आँसुओं की होली, आतिथ्य कहानियों की समीक्षा

2.0 रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 'ममता' कहानी की तात्विक समीक्षा

2.4 'आँसुओं की होली' कहानी की तात्विक समीक्षा

2.5 'आतिथ्य' कहानी की तात्विक समीक्षा

2.6 सारांश

2.7 कठिन शब्द

2.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

2.6 पठनीय पुस्तकें

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप ममता, आँसुओं की होली और आतिथ्य कहानियों की तात्विक समीक्षा से अवगत हो सकेंगे।

2.2 प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ममता' ऐतिहासिक कहानी है। जिसमें ममता के व्यक्तिगत प्रेम तथा उसके राष्ट्र प्रेम दोनों का वर्णन मिलता है। प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी आँसुओं को होली में श्री विलास का होली न खेलने

का रहस्य स्पष्ट करते हुए उसके ग्लानिमय जीवन का चित्रण किया है और अंततः 'आतिथ्य' कहानी के लेखक यशपाल ने रामशरण के माध्यम से एक यात्री का वर्णन किया है। यात्री के रूप में रामशरण को किन–किन परिस्थितियों से जूझना पड़ता है इसका स्पष्ट उल्लेख प्रस्तुत कहानी में मिलता है।

2.3 'ममता' कहानी की तात्विक समीक्षा।

जयशंकर द्वारा रचित 'ममता' कहानी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस कहानी में ममता का चित्रण किया है और तत्वों के आधार पर प्रस्तुत कहानी की समीक्षा इस प्रकार है–

1) **कथावस्तु :–** प्रस्तुत कहानी की कथावस्तु अत्यंत रोचक एवं संक्षिप्त है। कहानी की शुरूआत रोहताश्व दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि की इकलौती संतान ममता से शुरू हुई है और अंत हुमायूं के नाम पर बना मंदिर तथा ममता का कहीं पर नाम न होने पर होता है। ममता भारतीय सभ्यता के साथ–साथ भारतीय नारी का भी परिचय देती है। वह अपने पिता को शेरशाह द्वारा भेजा गया धन वापिस लौटाने को कहती है जिसका स्पष्ट उदाहरण इस प्रकार मिलता है, "तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया? पिता जी! यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिए।" ममता अपने पिता से कहती है कि हम ब्राह्मण हैं इतना सोना लेकर क्या करेंगे। ममता के मन में राष्ट्र प्रेम की भावना भी थी इसीलिए तो वह शेरशाह द्वारा भेजा गया प्रस्ताव वापिस भेज देती है। शेरशाह स्त्री वेश में अपने सैनिकों के साथ दुर्ग में प्रवेश करता है तो मंत्री चूड़ामणि इसका विरोध करता है। जिसके चलते उनकी हत्या कर दी जाती है। ममता अपनी जान बचाते हुए वहाँ से भाग निकलती है। काशी के निकट बौद्ध विहार के किसी खंडहर में झोंपड़ी बनाकर एक तपस्वी की तरह रहने लगती है।

   कुछ वर्ष पश्चात् मुगल सम्राट हुमायूँ ममता से एक रात के लिए झोंपड़ी में शरण माँगते हैं तो पहले वह मना कर देती है। उसे याद आता है कि यवनों के कारण ही उसके पिता की मृत्यु हुई थी फिर हिंदू धर्म में अतिथि सत्कार का सोचकर उसे आश्रय देती है। परिणामस्वरूप वह अपने सैनिक से उस झोंपड़ी के स्थान पर घर बनवाने का आदेश देता है। अंततः ममता की मृत्यु हो जाती है। हूमायूं का बेटा अकबर उस स्थान पर एक अष्टकोण मंदिर बनवाता है लेकिन उस पर लगाये शिला–लेख पर हूमायूं का नाम होता है, ममता का नाम कहीं पर भी नहीं था। इस प्रकार कहानी की कथावस्तु अत्यंत सुव्यवस्थित एवं नाटकीय है।

   प्रस्तुत कहानी का आरंभ ममता के विधवा जीवन से होता है और अंत ममता के नाम का न होना कहानी का उपसंहार है। कथावस्तु में स्पष्टता और घटनाओं की प्रधानता देखने को मिलती है।

2) **पात्रों का चरित्र–चित्रण :–** कहानी की कथावस्तु को आगे बढ़ाने के लिए पात्रों का बहुत बड़ा योगदान रहता है। ममता कहानी में मंत्री चूड़ामणि, ममता और हुमायूँ तीन प्रमुख पात्र हैं। मिर्जा तथा अन्य सैनिक

गौण पात्र हैं, लेकिन कहानी में केवल ममता का ही अधिक वर्णन मिलता है। यह कहानी ममता के ही इर्द–गिर्द घूमती नज़र आती है। ममता एक विधवा स्त्री है। वह स्वाभिमानी है, इसीलिए वह अपने पिता को रिश्वत में प्राप्त धन को वापिस लौटाने का अनुरोध करती है। उसे भीख माँगना मंजूर है लेकिन यह धन स्वीकार्य नहीं। इससे पता चलता है कि उसमें देशप्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी है। वह संवेदनशील स्त्री के रूप में भी हमारे सामने आती है। यह जानते हुए कि उसके पिता की हत्या इन विधार्मियों द्वारा की गई है। इसके उपरान्त भी जब हूमायुँ उसकी कुटिया में शरण माँगता है तो उसको आश्रय देना ममता अपना धर्म समझती है। इस प्रकार जयशंकर प्रसाद ने ममता के माध्यम से एक भारतीय नारी का चित्र प्रस्तुत किया है जो प्रत्येक भारतीय के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है।

5) **संवाद :–** जयशंकर प्रसाद ने कहानी को रोचक तथा संजीव बनाने के लिए संवादों को भी मुखरित किया है, उनके द्वारा रचित संवादों में रोचकता, सहजता, गत्यात्मकता, स्वाभाविकता के गुण विद्यमान हैं। इन्हीं गुणों के कारण कहानी की सौंदर्यता और बढ़ जाती है। कहने को तो बिना संवादों के भी कहानी का निर्माण हो जाता है परन्तु ऐसी कहानियाँ पाठक को बोर कर देती हैं। प्रसाद जी की कहानियों में संवादों की संक्षिप्तता देखने को मिलती है। उदाहरणस्वरूप :–

ममता ने पूछा– ''यह क्या है पिताजी?''

''तेरे लिए बेटी, उपहार है।''... ममता चौक उठी।

''इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया?''

चुप रहो ममता। यह तुम्हारे लिए है।''

''तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया पिताजी! यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिए। पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?'' यहाँ हमें संवादों में स्वाभाविकता देखने को मिलती है। पिता और पुत्री की बातचीत में सरलता, स्पष्टता तथा स्वाभाविकता कहानी को और भी रोचकमय बना देती है। संवाद पात्रानुकूल होना चाहिए।

देशकाल और वातावरण :– 'ममता' कहानी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखी है। प्रसाद ने इतिहास के जिस अंश को अपनी कथावस्तु का आधार बनाया है उसका यथातथ्य रूप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। ममता कहानी में प्रसाद का ऐतिहासिक वातावरण निर्माण के लिए रोहताश्व दुर्ग में पठान सैनिकों का प्रवेश करना तथा मंत्री चूड़ामणि की हत्या करना एक भय भरे माहौल को उजागर करता है।

''तलवारें खिंची। ब्राह्मण वहीं मारा गया और राजा रानी

कोष– सब छली शेरशाह के हाथ पड़े, निकल गई ममता।''

स्पष्ट है कि ऐसा वातावरण व्यक्ति को भयभीत कर देता है। काशी के निकट बौद्ध विहार के खंडहर आदि का भी सुंदर ढंग से वर्णन किया है। प्रसाद ने ममता की कही हुई बात, ''मैं ब्राह्मण कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ ? ... मुझे तो अपना कर्त्तव्य–पालन करना पड़ेगा...'' द्वारा सामाजिक वातावरण का सजीव चित्रण किया है।

उद्देश्य :– प्रसाद ने अपनी प्रत्येक कहानी किसी–न–किसी उद्देश्य को लेकर ही लिखी है। जहाँ उन्होंने ममता के माध्यम से भारतीय नारी के रूप को चित्रित किया है वहीं यह भी संदेश दिया है कि बात जब अपने देश–प्रेम की आती है तो स्त्री भी सारे सुखों का त्याग करके राष्ट्र प्रेम का परिचय देती है। विधवा ममता की निराशा, विवश्ता और त्रासद भरे जीवन को प्रस्तुत करते हुए उसके उदार हृदय में विद्यमान अतिथि धर्म एवं असीम करुणा का सजीव वर्णन भी किया है। वह अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटती। अनेक कष्टों को सहन करने के पश्चात् भी अपने राष्ट्रप्रेम तथा कर्तव्य को पूरी निष्ठा से निभाती है। ममता के संघर्षशील जीवन को दिखाना ही प्रसाद का उद्देश्य रहा है।

2.4 'आँसुओं की होली' कहानी की तात्विक समीक्षा

मुंशी प्रेमचन्द का हिन्दी–साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत कहानी में श्री विलास और मनहर के माध्यम से लेखक ने युवा–पीढ़ी में अपने कर्त्तव्यों की अनदेखी का वर्णन किया है। एक तरफ विलास मस्त व्यक्ति है दूसरी तरफ मनहर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करता है। कहानी की तात्विक समीक्षा इस प्रकार है–

1) शीर्षक :– शीर्षक किसी भी कहानी का प्राथमिक उपकरण है। शीर्षक में स्पष्टता सरलता, संक्षिप्तता और जिज्ञासा का होना अनिवार्य है। प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'आँसुओं की होली' है। इस शीर्षक में जिज्ञासा देखने को मिलती है क्योंकि इस कहानी के शीर्षक को पढ़ने के उपरान्त पाठक यह जानना चाहता है कि 'आँसुओं की होली' क्या है। होली तो रंगों का त्योहार है, इसमें आँसुओं का प्रयोग क्यों किया गया है। कहानी को पढ़ने के पश्चात् ही पाठक की जिज्ञासा शांत होती है। इतना ही नहीं शीर्षक विषयानुकूल होना चाहिए। इस कहानी में होली का वर्णन है। श्री विलास इस कहानी का केन्द्र बिन्दु है। कहानी का मूल उद्देश्य भी उसी के माध्यम से पूर्ण हुआ है। अतः शीर्षक में अर्थपूर्णता तथा सार्थकता भी है।

2) कथानक :– कहानी का पहला तथा महत्वपूर्ण तत्व कथावस्तु है। कथावस्तु के अभाव में कहानी की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कहानी का आरंभ इस पंक्ति से हुआ है, ''नामों को बिगाड़ने की प्रथा न जाने कब चली और कहाँ शुरू हुई।'' यह वाक्य जिज्ञासा से भरा है जो पाठकों को कहानी पढ़ने के लिए विवश करता है। कथावस्तु का आरम्भ तथा अंत बहुत ही सुंदर तरीके से किया है और साथ ही 'आँसुओं की होली' के भीतर

छुपे रहस्य को भी उजागर करता है। जैसे–जैसे कहानी आगे बढ़ती है वैसे–वैसे श्रीविलास के मन में छुपी कमज़ोरी और होली न खेलने के रहस्य का भेद खुलता है। जब श्री विलास की पत्नी चम्पा रंग डालती है तो उसे अपना अतीत याद आ जाता है। वह अपने मित्र मनहर का वर्णन अपनी पत्नी के समक्ष करता है। मनहर कर्मशील व्यक्ति था, देश तथा समाज की सेवा में व्यस्त रहता था। मनहर की मृत्यु का गहरा असर श्री विलास पर पढ़ता है और वह एक कर्मशील युवक बनने का प्रण लेता है। कथावस्तु का आधार ग्लानि में जीने वाला युवक है जो पत्नी के रंग डालने पर अपने कर्त्तव्य को याद करता हुआ कर्मशील मनहर बनने का संकल्प लेता है।

3) पात्र :– कथावस्तु के उपरान्त पात्र–योजना को ही स्थान दिया गया है। पात्रों के कारण ही कहानी की कथा को आगे बढ़ाया जा सकता है। लेखक पात्रों के द्वारा यह भी प्रस्तुत करता है कि मनुष्य का चरित्र तथा व्यक्तित्व किस प्रकार निर्मित और किन परिस्थितियों से प्रभावित और परिवर्तित होता है। प्रस्तुत कहानी में श्री विलास, चंपा, मनहर और चंपा के दो भाईयों का चरित्र–चित्रण हुआ है। श्री विलास कहानी का मुख्य पात्र है। वह अपने मन की कायरता को छुपाकर रखता है। उसके मन की कमज़ोरी उसे होली के दिन छिपकर बैठने को मजबूर करती है। वह अपने कर्त्तव्यों से भटका हुआ युवक है। वह मस्त युवक रहा है। मौज–मस्ती उसके जीवन का लक्ष्य रहा करती थी। वह कुछ भी करने से डरता था। पत्नी द्वारा जब रंग उस पर पड़ता है तो उसे अपने मित्र मनहर का साहस, सेवा भावुक बातें याद आती हैं। वह अपनी कायरता को होली के दिन आँसुओं से धो डालता है तथा कर्मशील व्यक्ति बनने का निर्णय लेता है। चंपा श्रीविलास की पत्नी है। वह पतिव्रता स्त्री है। वह अपने पति का साथ कभी नहीं छोड़ती। चाहे दुख हो या सुख उसने पत्नी कर्त्तव्य पूरी निष्ठा से निभाया है। पति होली खेलने से डरता है। अपने भाईयों से बचाने के लिए वह पति का साथ देती है। पति जब बीमार होने का नाटक करता है तो वह पूरा सहयोग करती है। त्योहार पर जब बहुत सारे पकवान बनते हैं तो वह बीमारी के चलते उन्हें खिचड़ी खिलाती है लेकिन जब सारे सो जाते हैं तो चोरी से उसे थाली भर कर पकवान खिलाकर प्रसन्न होती है। पति की सेवा में ही वह अपना सुख समझती थी। पति उसकी सेवा की भावना देखकर जब उससे कुछ मांगने को कहता है तो वह होली खेलने की इच्छा प्रकट करती है। परिणामस्वरूप वह अपनी पत्नी की इच्छा को पूर्ण करता है, "...चंपा ने लोटे का रंग उठा लिया और पंडितजी को सिर से पाँव तक नहला दिया। जब तक वह उठकर भागे उसने मुट्ठी भर गुलाल लेकर सारे मुँह पर पोत दिया।" चंपा का चरित्र पतिव्रता स्त्री का है।

मनहर इस कहानी का गौण पात्र होते हुए भी कहानी पर प्रमुख छाप छोड़ता है। मनोहर दृढ़ चरित्र का युवक था। जिसके जीवन का उद्देश्य देश तथा समाज की सेवा करना था। वह अपने कर्त्तव्य से पीछे नहीं हटता है। मनहर और श्रीविलास दोनों मित्र थे। वह श्रीविलास को दूसरों के काम न आने पर धिक्कारता है और होली के त्योहार का अर्थ समझाता है, "...त्योहार, तमाशा देखने, अच्छी–अच्छी चीज़े खाने और अच्छे–अच्छे कपड़े पहनने का नाम नहीं है। वह व्रत है, तप है अपने भाइयों से प्रेम और सहानुभूति करना ही त्योहार का खास मतलब है और कपड़े लाल करने से पहले खून को लाल कर लो। सफेद खून पर यह लाली शोभा नहीं देती।" मनहर की

मृत्यु श्री विलास का जीवन बदल देती है। वह एक कर्मशील व्यक्ति बनने का संकल्प करता है। संपूर्ण कहानी चरित्र–चित्रण की दृष्टि से सफल है।

4) संवाद–योजना :– कहानी का महत्वपूर्ण उपकरण संवाद–योजना है। प्रस्तुत कहानी का अधिकांश भाग वर्णनात्मक है। श्री विलास और चंपा के संवादों का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

चंपा – 'जो माँगू, वह दोगे?'

'दूँगा– जनेऊ की कसम खाकर कहता हूँ!'

'न दो तो मेरी बात जाय!

'कहता हूँ भाई, अब कैसे कहूँ! क्या लिख –पढ़ी कर दूँ?'

'अच्छा तो मांगती हूँ। मुझे अपने साथ होली खेलने दो।'

श्री विलास का यह संवाद उसकी कायरता को समाप्त करता है– 'ईश्वर मुझे शक्ति दे कि मैं मन से ही नहीं, कर्म से भी मनहर बनूँ।'

5) वातावरण :– कहानी में वातावरण घटना, व्यापार तथा पात्र–योजना के अनुकूल होता है जो कहानी को सफल एवं स्वाभाविक बनाता है। इसमें होली के वातावरण का वर्णन इस प्रकार किया है ''होली का दिन है। बाहर हाहाकार मचा हुआ है। पुराने जमाने में अबीर और गुलाल के सिवा और कोई रंग न खेला जाता था। अब नीले, हरे, काले, सभी रंगों का मेल हो गया है और इस संगठन से बचना आदमी के लिए तो संभव नहीं। हाँ देवता बचें।''

6) उद्देश्य :– कहानी में केवल मनोरंजन को ही व्यक्त नहीं किया बल्कि इसमें उद्देश्य की भी अभिव्यक्ति हुई है। इसमें एक कमज़ोर एवं कायर व्यक्ति का वर्णन किया है जो सामाजिक कार्यों से विमुख रहता है। मित्र मनहर के परामर्श अनुसार वह आगे तो बढ़ता है लेकिन मन रूपी कमज़ोर रहता है। उसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है। श्रीविलास के मित्र मनहर की जब मृत्यु होती है तो उसके जीवन में बदलाव होता है। पत्नी द्वारा रंग डालने पर उसकी कायरता धुल जाती है और मन में छिपी उसकी कुंठा का कारण भी हमारे समक्ष आ जाता है। अब श्री विलास एक कर्मशील व्यक्ति बनने का निर्णय लेता है। यह एक सामाजिक, चरित्र–प्रधान तथा मनोवैज्ञानिक कहानी भी है।

7) भाषा–शैली :– कहानी की भाषा सरल, स्पष्ट है। कहानी में कहीं पर भी जटिलता देखने को नहीं मिलती। कहानी की भाषा भावानुरूप है। उदाहरण के तौर पर जब श्रीविलास को अपने मित्र का पत्र मिलता है, ''श्रीविलास एक क्षण तक गला रुक जाने के कारण बोल न सके। ...लिखा था, मुझसे आखिरी बार मिल जा, अब

शायद इस जीवन में भेंट न हो। खत मेरे हाथों से छूटकर गिर गया... मगर उसके दर्शन न बदे थे। मेरे पहुँचने के पहले ही वह सिधार चुका था।''

2.5 'आतिथ्य' कहानी की तात्विक समीक्षा

यशपाल द्वारा रचित कहानी 'आतिथ्य' अतिथि पर आधारित है। लेखिक ने इस कहानी के माध्यम से अतिथि का आदर और निरादर दोनों का वर्णन किया है। गाँव के लोग किस प्रकार अतिथि का स्वागत करते हैं इसका स्पष्ट वर्णन इस कहानी में मिलता है। कहानी की तात्विक समीक्षा निम्न रूप में है–

1) कथानक :– यशपाल की कहानियों में सरलता देखने को मिलती है। कथानक के आरंभ तथा अंत तक रोचकता बनी रहती है। रामशरण भारत सरकार के अर्थ–विभाग में कलर्क है। वह सारी सुख–सुविधाओं से सम्पन्न व्यक्ति है। उसके मन में पहाड़ी क्षेत्र को देखने का विचार आता है। अपने इसी विचार को साकार करने के लिए वह छुट्टी लेकर शिमला की यात्रा पर निकल पड़ता है। उसे यात्रा के दौरान अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। रामशरण केवल दिशा के अनुमान से आगे बढ़ता जा रहा था। उसके मन में जंगली जानवरों को लेकर भी डर था। उसका शरीर किसी भी आहट से सिहर उठता था। उसका मानना था कि, ''... यदि इस समय कोई भालू या चीता आए जाए! उसने साहस बनाए रखने के लिए निश्चय किया– जानवर के मुँह खोलकर झपटने पर वह जानवर के मुँह में बल्लम डालकर धँसा देगा।'' इस प्रकार रास्ते का सफर तय करते हुए वह एक गाँव में पहुँचा। रामशरण पहले ही मकान के पास पहुँचा तो कुत्ते उस पर भौंकने लगे। कुतों के भौंकने पर रामशरण को डर नहीं लगा। अंधेरा धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा था। रामशरण को किसी के घर में शरण चाहिए थी क्योंकि सर्दी बढ़ती जा रही है। वह दूर से पुकारता है, ''...कोई है? ज़रा देखना मुसाफिर है। रामश्रण के तीन बार पुकारने पर मकान के ऊपर की मंजिल की खिड़की खुली। पहाड़ी बोली में आवाज़ आई, कौन है इस समय?'' रामशरण की आवाज़ सुनकर आस–पास के गाँव वाले भी खिड़की खोलकर उसे देखते हैं तभी एक पहाड़ी वाला बाहर निकलकर उसे धमकाता है और गाँव से बाहर निकलने को कहता है। इस तरह का व्यवहार देखकर रामशरण हैरान रह जाता है। वह चुपचाप निकल जाता है। वह गाँव के समीप रहकर एक पेड़ के नीचे बैठ जाता है। भूख और थकान के कारण उसका शरीर टूट रहा था। तभी उसको एक पहाड़ी मर्द की आवाज़ सुनाई देती है और वह उसे अपने घर लेकर जाता है। पहाड़ी मर्द, उसकी पुत्री तथा पत्नी रामशरण की सेवा करते हैं। उसके आदर–सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़ते। सुबह होते ही पहाड़ी मर्द रामशरण को गाँव के बाहर छोड़कर आता है। उसे भी डर था अगर किसी गाँव वाले ने देख लिया तो निंदा का पात्र बन जाएगा। गाँव के बाहर पहुँचाकर वह रामशरण को क्रोधित स्वर में फटकारता है। उसे बदमाश कहकर घर से बाहर निकल जाने को कहता है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत कहानी का कथानक संक्षिप्त होते हुए प्रभावशाली है। छोटी–छोटी घटनाओं का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है।

2) पात्र चित्रण :– प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र रामशरण है। रामशरण एक ऐसे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी सुख–सुविधाओं से सम्पन्न है। प्राकृतिक सौंदर्य को देखने की इच्छा उसे शिमला पहाड़ी क्षेत्र की ओर ले जाती है। वह पैदल शिमला यात्रा को निकल पड़ता है। इस यात्रा में उसे बहुत–सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। उसने जैसा सोचा था कि पहाड़ी लोग उसका आदर करेंगे तथा मान–सम्मान देंगे लेकिन वैसा नहीं होता। उसकी आशा निराशा में बदल जाती है। कहानी के क्रम को आगे बढ़ाने के लिए रामशरण की यात्रा में पहाड़ी मर्द, उसकी पत्नी तथा बेटी सहायक के रूप में आते हैं जो रामशरण को शरण देते हैं। वह अपने अतिथि की अच्छी तरह से सेवा करते हैं। पहाड़ी मर्द की पत्नी भारतीय स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ उसे गृह–लक्ष्मी तथा अन्नपूर्णा कहा जाता है। वह रामशरण की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ती। उसे हाथ जोड़कर कहती है कि, ''...धन भाग कि पाहुना परमेश्वर द्वार आए'' उनके लिए अतिथि ईश्वर के समान है। जिसकी सेवा करना वह अपना कर्त्तव्य समझती है। पात्रों के चित्रांकन में लेखक को अद्‌भुत सफलता मिली है।

3) कथोपकथन अथवा संवाद :– किसी भी कहानी में कथानक को आगे बढ़ने के लिए, पात्रों के चरित्र–चित्रण के लिए, या लेखक के संदेश को पाठक तक पहुँचाने के लिए वातावरण के सृजन के लिए संवादों और भाषा–शैली की आवश्यकता रहती है। कहानी में संवादों का होना अति आवश्यक है। प्रस्तुत कहानी की संवाद योजना बड़ी सरल, स्वाभाविक और पात्रानुकूल है।

रामशरण ने पुकारा, ''कोई है? ज़रा देखना मुसाफिर है?'' पहाड़ी बोली में आवाज़ आई, ''कौन है इस समय?'' समीप के दो और मकानों से आवाज़ आई, ''कौन है इस समय? कैसा मुसाफिर?''

खिड़की से बाहर निकलकर चेहरे ने दोहराया, ''कैसा मुसाफिर? किस गाँव से आया है? कहाँ जाना है?'' ...रामशरण ने उत्तर दिया, ''सड़क से भटका परेदशी हूँ। रात काटने के लिए कोई जगह दे दो, गरीब पर मेहरबानी होगी ?''

एक आदमी कठोर और क्रोध स्वर में कहता है, ''निकल जा यहाँ से नहीं तो अभी काट डालूँगा!''

संवाद पात्रों की स्थिति को उजागर करता है। रामशरण का शरण मांगना और पहाड़ी लोगों का उसे शरण न देना उनकी संवेदनहीनता को दर्शाता है क्योंकि उनका मानना है कि शहर के लोग बदमाश होते हैं।

4) वातावरण :– प्रस्तुत कहानी वातावरण प्रधान कहानी है। कहानी में सामाजिक वातावरण तथा शिमला यात्रा पर अतिथि के मार्ग में आई विभिन्न कठिनाइयों का यथार्थ चित्रण हुआ है। पहाड़ी लोगों का रामशरण को अपने गाँव में घुसने न देना, पेड़ के नीचे बैठकर सर्दी से ठिठुरना उसको अस्वस्थ्य कर रहा था। जिसका स्पष्ट उदाहरण इस प्रकार मिलता है, ''...कम्बल में शरीर लपेट लिया और पेड़ के तने के सहारे टिका गया।... कुछ देर बाद बूँदें टप–टप पड़ने लगीं और हवा का जोर बढ़ गया। रामशरण का सिर भूख और थकान से दरद करने लगा, सर्दी से दाँत बजने लगे। ज्यों–ज्यों जाड़ा अधिक लग रहा था सिर का दरद बढ़ता जा रहा था।'' प्रस्तुत कहानी

में पहाड़ी लोगों के 'क्रोध भरे स्वर को भी उजागर किया है, "...चले जाओ। यहाँ दुकान–सराय नहीं है। बदमाश!.. निकल जा वहाँ से नहीं तो अभी काट डालूँगा। ... अगर इससे आगे कदम बढ़ाया तो काट कर कुत्तों को खिला देंगे!" इस प्रकार यह कहानी वातावरण प्रधान कहानी बन जाती है, इसके माध्यम से पात्रों की मनोदशा को जाना और समझा जाता है। इसमें यात्रा के दौरान रामशरण यात्री का सजीव वर्णन किया है। वह किस प्रकार सर्दी के वातावरण तथा पहाड़ी लोगों के स्वभाव को झेलता है। कहानी को विश्वासनीय तथा रोचक बनाने के लिए वातावरण का होना अनिवार्य हो जाता है।

5) **भाषा :–** प्रस्तुत कहानी की भाषा पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकूल है। यशपाल की कहानी 'आतिथ्य' की भाषा सरल और स्पष्ट है। इसमें तत्सम और तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है। उदाहरणस्वरूप :– बेबस, गंध, ओठों, ज़ालिम, पाहुने, सम्बोधन। कहीं पर भाषा मुहावरेदार भी हो गई है जैसेः– बोटी–बोटी, सिर चक्कर खाना आदि।

6) **उद्देश्य :–** प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित है। ग्रामीण पहाड़ी लोगों का मानना है कि शहरी लोग बदमाश होते हैं। उनसे किसी भी प्रकार की सहानुभूति नहीं रखनी चाहिए लेकिन इसमें लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि घर में आए अतिथि के साथ हमें दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए। अतिथि के प्रति संवेदनशून्य न होकर उसका आदर–सत्कार करना चाहिए। उसके साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। लेखक ने जहाँ पहाड़ी लोगों का रामशरण के प्रति कठोर व्यवहार दिखाया है। वहीं एक पहाड़ी मर्द के ह्रदय में करूणा जगाकर कहानी को प्रभावशाली बना दिया है। यहाँ पर यह भी स्पष्ट है कि शहरी लोगों के प्रति गलत मानसिकता बनाकर उनके साथ दुर्व्यवहार करना या उनका निरादर करना क्या उचित है? व्यक्ति को अपने संस्कारों का मान रखना चाहिए क्योंकि संस्कार ही उसके जीवन की पूंजी है। अगर यही लुप्त हो जाएगी तो किसी के प्रति प्रेमभाव नहीं रहेगा। अतः ग्रामीण लोग शहरी लोगों को संदेह भरी दृष्टि से देखते हैं। जिसके कारण वह संवेदनशून्य व्यवहार करते हैं

6) **शीर्षक :–** कहानी का शीर्षक आतिथ्य कहानी के अनुरूप है। कहानी का केन्द्र बिंदु अतिथि (रामशरण) है। अतिथि के रूप में उसे किन–किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है उसका स्पष्ट वर्णन कहानी में उपलब्ध है। जिस इच्छा व चाह से वह शिमला की यात्रा करने निकला था वही यात्रा उसके जीवन की निराशा का कारण बनती है। लेखक ने आतिथ्य की भूमिका में उसकी विवशता को उजागर किया है।

2.6 सारांश

पाठ्यक्रम में निर्धारित तीनों कहानियों की तात्विक समीक्षा कहानियों को पूर्ण रूप से समझने में सहायक है। कहानी 'ममता' में नारी के जीवन संघर्ष, उसके आदर्श कर्त्तव्य, त्याग और तपस्वी जीवन का भावपूर्ण वर्णन मिलता है। 'आंसुओं की होली' कहानी में पुरुष पात्र के पश्चाताप का वर्णन मिलता है जो इस पश्चाताप की अग्नि में जलकर अपने जीवन को एक नया लक्ष्य देना चाहता है। 'आतिथ्य' कहानी में एक यात्री के उत्साह को निराशा में बदलते दिखाया है।

2.7 कठिन शब्द

1 प्रकोष्ठ

2 शौण

3 दुहिता

4 गगन चुंबी

5 स्तूप

6 विकीर्ण

7 विपद

8 अर्थ

9 भूपृष्ठ

10 ताता

11 सिधार

12 जनेऊ

13 सिहर

14 मुसाफिर

15 जूझना

2.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

1) ममता कौन थी?

उ) ....

....

....

....

....

2) घोड़े पर चढ़कर जाते समय हुमायूँ ने मिरजा से क्या कहा?

उ) ....

....

....

....

....

3) ममता कहानी क्या संदेश देती है?

उ) ....

....

....

....

....

4) ममता के चरित्र की दो विशेषताएँ लिखिए।

उ) ....

....

....

....

....

5) हुमायूँ के चरित्र पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डालें।

उ) ....

....

....

....

....

6) 'आँसुओं की होली' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करें।

उ) ....

....

....

....

....

7) 'आँसुओं की होली' कहानी का कथानक स्पष्ट करें।

उ) ....

....

....

....

....

8) रामशरण का होली न खेलने के पीछे का क्या कारण था?

उ) ....

....

....

....

....

9) **'आतिथ्य' कहानी की संवाद–योजना पर प्रकाश डालें।**

उ) ....

....

....

....

....

10) **'आतिथ्य' कहानी का शीर्षक स्पष्ट करें।**

उ) ....

....

....

....

....

1.7 पाठनीय पुस्तकें

- सं॰ डॉ. शहाबुद्दीन शेख –गद्य फुलवारी

'ममता', 'आँसुओं की होली' एवं 'आतिथ्य' कहानियों का पात्र–परिचय एवं समस्या

3.0 रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 'ममता', 'आँसुओं की होली' एवं 'आतिथ्य' कहानियों का पात्र–परिचय

3.4 'ममता', 'आँसुओं की होली' एवं 'आतिथ्य' कहानियों की समस्या

3.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

3.6 पठनीय पुस्तकें

3.1 उद्देश्य

– इस पाठ के अध्ययनोपरांत आप कहानियों के पात्रों से परिचित हो सकेंगे।

– पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानियों में व्यक्त समस्याओं से अवगत हो सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना

'ममता' कहानी के माध्यम से जयशंकर प्रसाद ने एक नारी के संघर्ष को दिखाया है। ममता के विधवा जीवन पर प्रकाश डालते हुए राजनीतिक समस्या तथा आक्रमण के चलते नारी के शोषण की त्रासदी को व्यक्त किया है। आँसुओं की होली कहानी में मनुष्य में समाप्त होती संवदेनशीलता की समस्या को अभिव्यक्ति मिली है। उसी तरह 'आतिथ्य' कहानी में मनुष्य के अमानवीय व्यवहार का चित्रण हुआ है।

3.3 'ममता', 'आँसुओं की होली' एवं 'आतिथ्य' कहानियों का पात्र–परिचय

'ममता' कहानी का पात्र–चित्रण

ममता :– ममता कहानी की प्रधान–पात्र तथा नायिका के रूप में प्रस्तुत है। यह कहानी ममता के इर्द–गिर्द ही घूमती नज़र आती है। ममता इस कहानी का केन्द्र बिन्दु है। ममता रोहताश्व दुर्ग के मंत्री की बेटी है। वह उनकी स्नेह पालिका पुत्री है। उसके पिता चूड़ामणि अपनी पुत्री को बहुत प्रेम करते हैं। पिता का प्रेम पुत्री के प्रति इतना है कि उसे चिन्तित तथा दुखी देखकर वह भी चिन्तित हो जाते हैं।

ममता एक विधवा स्त्री है। वह युवती है। यौन अवस्था में विधवा जीवन झेलना उसकी पीड़ा को और बढ़ाता है। सारी सुख–सुविधाएँ होने के उपरान्त भी वह सुखी नहीं है। जिसका स्पष्ट उदाहरण लेखक द्वारा इस कथन से मिलता है, ''...मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात को लिये, वह सुख के कंटक–शयन में विकल थी।'' विधवा स्त्री को इस समाज में अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं। वह अपनी मर्जी से न उठ सकती है, न बैठ सकती है, न हँस सकती है और न ही रो सकती है। इस तरह का जीवन जीना उसके लिए कष्टदायक बन जाता है।

ममता देश–प्रेम के प्रति भी अपना परिचय देती है। चूड़ामणि जब अपनी पुत्री के समक्ष थालों में रखी स्वर्ण–मुद्राओं को रखते हैं तो वह अपने पिता पर क्रोध करते हुए कहती है कि क्या आपने म्लेच्छ द्वारा दी गई रिश्वत स्वीकार कर ली। पिता अपनी पुत्री को समझाने का प्रयत्न करते हैं लेकिन वह इस धन को स्वीकार नहीं करती। वह कहती है कि हम ब्राह्मण हैं। हमें इतना सोना व धन नहीं चाहिए क्योंकि यह अनर्थ है। पिता से प्रश्न करते हुए कहती है कि ''क्या भीख न मिलेगी? क्या कोई हिंदू भू–पृष्ठ पर बचा न रह जाएगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके। इन पंक्तियों से ममता में देश–प्रेम की भावना को देखा जा सकता है। साथ ही वह अपनी बौद्धिकता का परिचय देते हुए कहती है कि इस धन व सोने को वापिस लौटा दीजिए क्योंकि इसकी चमक आँखों को अंधा बना रही है। इस कथन द्वारा ममता की स्पष्टवादिता को भी देखा जा सकता है।

ममता अतिथि सत्कार से भी पीछे नहीं हटती। जब अतिथि की सेवा करने का समय आता है तो वह वृद्ध अवस्था में भी अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाती है। हुमायूँ ने जब चौसा के युद्ध से भागकर एक रात वृद्ध ममता की झोंपड़ी में शरण मांगी तो पहले वह मना कर देती है किन्तु कुछ समय पश्चात् हुमायूँ की स्थिति देखकर अपनी झोंपड़ी में शरण देकर उसे विश्राम करने को कह देती है। इस बात का उदाहरण हमें ममता द्वारा कहे इस कथन से मिलता है, ''...मैं ब्राह्मण कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें, तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ?'' वह दया की मूर्ति है। सभी के सुख–दुख में साथ देने वाली स्त्री है। वह त्यागी स्त्री के रूप में भी हमारे सामने आती है। अपनी मृत्यु के पूर्व वह अपनी झोंपड़ी को अश्वारोही को सौंप कर कहती है, ''मैं आज इसे छोड़ जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल– मैं अपने चिर विश्राम गृह में जाती हूँ। ... बुढ़िया के प्राण पखरू अनंत में उड़ गए।''

लेखक ने ममता के चरित्र को प्रस्तुत करके उसके स्वाभिमान, बौद्धिकता, निष्ठा तथा अतिथि सत्कार का परिचय दिया है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखी गई इस कहानी में लेखक ने भारतीय नारी ममता की त्याग–भावना और देश–प्रेम को दर्शाया है। इस कहानी का घटना क्रम ममता के आस–पास ही घूमता है।

हुमायूँ :– इस कहानी में हुमायूँ का वर्णन इतना नहीं किया गया है। कहानी की क्रमबद्धता को आगे बढ़ाने के लिए हुमायूँ का उल्लेख ममता से आश्रय माँगने तथा कहानी के अंत में मिलता है। हुमायूँ मुगल के साथ–साथ एक वीर राजा भी था किंतु छल–कपट उसे बिल्कुल पसंद नहीं था जिसका वर्णन इस प्रकार मिलता है, ''...ममता ने कहा– क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो, ठहरो? ''छल! नहीं, तब नहीं माता! जाता हूँ! तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ।'' हुमायूँ को ममता की झोंपड़ी में आश्रय चाहिए था क्योंकि वह चौसा युद्ध में पठान शेरशाह से परास्त होकर सुरक्षित स्थान की खोज में था। वह भूखा व प्यासा था। उसका गला सूखा हुआ था। उसका अश्व गिर पडा था। इतना ही नहीं साथी बिछुड गए थे। वह स्वयं अत्यधिक थक चुका था कि आगे का सफर वह तय नहीं कर सकता था। इसी कारण उसे ममता की झोंपड़ी में आश्रय लेना पड़ा। हुमायूँ के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि जब वह वृद्ध ममता की झोंपड़ी में एक रात गुजारता है तो वह अगली सुबह वृद्ध स्त्री ममता को ढूँढता है लेकिन वह हुमायूँ को नहीं मिलती। इस तरह वह अपने साथी मिरजा से कहता है कि उस स्त्री को मैं कुछ न दे सका लेकिन उसका घर बनवा देना क्योंकि मैंने संकट में इस झोंपड़ी में आश्रय पाया है। इस स्थान को कदाचित मत भूलना। इससे स्पष्ट है कि वृद्ध स्त्री द्वारा की गई सहायता को वह भूलता नहीं है।

हुमायूँ के चरित्र का वर्णन इतना नहीं मिलता किन्तु जितना भी वर्णन हुआ है उससे कहानी में रोचकता और भी बढ़ जाती है।

'आँसुओं की होली' का पात्र–चित्रण/परिचय :–

'आँसुओं की होली' कहानी का प्रमुख पात्र श्रीविलास उर्फ सिलबिल है। इस कहानी का घटनाक्रम श्रीविलास के इर्द–गिर्द ही घूमता नज़र आता है। श्रीविलास का व्यक्तित्व ढीला–ढाला है। वह चुस्त व्यक्ति नहीं है। दफ्तर जाते समय उसके पाज़ामें का नाड़ा लटकता रहता। सिर पर फेल्ट–कैप है, लम्बी–सी चुटिया पीछे झांकती है। उन्होंने जो अचकन पहना है वह सुन्दर फैशनिबल है किन्तु लम्बी इतनी है कि उनके शरीर पर आकर–अपना रूप खो देती है।

श्री विलास एक परम्परावादी व्यक्ति के रूप में भी सामने आते हैं। वह परम्परावादी पति है उनका मानना है कि पत्नी को इतनी छूट नहीं देनी है और उसे पति की प्रत्येक बातों का ख्याल रखना चाहिए। यही उसका कर्तव्य है। इसीलिए पति के मना करने पर वह रंगों को छूती तक नही है और पति के नाटक में पूरा साथ देती है। श्रीविलास को होली का त्योहार पसंद नहीं था। इतना ही नहीं वह किसी भी त्योहार को नहीं मनाता है। जब

होली का त्योहार आता तो श्रीविलास घर से बाहर ही नहीं निकलता। होली पर पत्नी चंपा के भाई आते हैं तो वह बीमारी का नाटक करता है।

श्री विलास के जीवन को देखकर लगता है कि उनके जीवन से सम्बन्धित कोई बात जरूर है जो उनके मन में दबी है। इस बात का रहस्य पत्नी द्वारा उन पर डाले गए रंग से पता चलता है कि पाँच साल पहले होली के दिन उनके मित्र मनहर ने उन्हें अनाथ बुढ़िया की लाश को कंधा देने को कहा तब श्रीविलास होली के त्योहार का मजा खोना नहीं चाहता था। उस समय उन्हें गाने की महफिल में जाना था। जिसके चलते वह मनहर को मना कर देता है। मित्र मनहर उसे धिक्कारते हुए फटकारता है। यह धिक्कार उसके जीवन के सभी रंग खो देती है और वह आत्मग्लानि में जीता है।

श्रीविलास ने अपने जीवन के लक्ष्य के बारे में नहीं सोचा था। उन्हें किसी से कोई लेना देना नहीं था। वह अपनी ही मौज मस्ती में रहते थे। देश सेवा के प्रति उनकी कोई रूचि नहीं थी। अपने ही राग–रंग में डूबे रहते थे। उनका मानवता से कोई मतलब नहीं था।

श्रीविलास स्पष्टवादी व्यक्ति नहीं थे। वह अपनी पत्नी के भाइयों को होली के लिए मना नहीं कर सके। यहीं पर उनकी अस्पष्टवादिता दिखाई देती है। यहाँ तक कि पत्नी का सहारा लेकर झूठ बोलते हैं और उसे भी झूठ का भागीदार बनाते हैं।

श्रीविलास का हृदय उदार से भी भरा था। पत्नी चंपा जब पति के लिए थाली से भरे पकवान लाती है तो वह उसकी प्रशंसा करते है। वह पत्नी को पुरस्कार देने की इच्छा प्रकट करते हैं। पत्नी पुरस्कार में होली खेलनी की इच्छा प्रकट करती है तो वह उसकी खुशी के लिए उसके साथ होली खेलते हैं।

श्रीविलास की पत्नी जब उनपर रंग डालती है तो वह अतीत में छुपी कायरता से मुक्त हो जाते हैं और कहानी का सारा रहस्य खुल जाता है। वह अपने मित्र मनहर की तरह बनने का प्रण लेता है ताकि वह देश, समाज तथा मानव की सेवा पूरी निष्ठा से कर सके। वह कहता है, "...ईश्वर मुझे ऐसी शक्ति दे कि मैं मन में ही नहीं, कर्म में भी मनहर बनूँ।" अपने मित्र की कर्मशीलता तथा देश सेवा की भावना को याद करते हुए स्वयं संकल्प लेकर गुलाल से अपने मित्र के चित्र पर रंग छिड़ककर प्रणाम करता है। वास्तव में श्रीविलास कमजोर मन का व्यक्ति था। उसे किसी से कोई लेना–देना नहीं था लेकिन उसके जीवन में घटित घटना उसके जीवन को एक नया मार्गदर्शन देती है। परिणामस्वरूप वह कर्मशील युवक बनने का संकल्प लेता है।

मनहर :– मनहर कहानी का प्रमुख पात्र नहीं बल्कि गौण पात्र है। इस कहानी में मनहर एक ऐसे युवक के रूप में उभरकर सामने आया है जिसके जीवन का लक्ष्य समाज सेवा, देश सेवा था। उसने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करके रखा था। जिस उम्र में युवक मौज–मस्ती करते थे उस उम्र में वह देश तथा समाज की सेवा में लगा रहता था। उसकी समाज सेवा की भावना तब दिखाई देती है जब अनाथ बुढ़िया की लाश को कंधा देना

होता है, तो उसके मित्र पीछे हट जाते हैं लेकिन वह पीछे नहीं हटता। वह अपने कर्तव्य का पालन करते हुए समाज सेवा का परिचय देता है। वह एक स्पष्टवादी वक्ता के रूप में भी सामने आता है। मित्र श्री विलास का बूढी स्त्री को कंधा न देना मनहर को गुस्सा दिलाता है। वह अपने दोस्त को धिक्कारते हुए स्पष्ट कहता है, ''...त्योहार, तमाशा देखने, अच्छी–अच्छी चीज़ें खाने और अच्छे–अच्छे कपड़े पहनने का नाम नहीं है। यह व्रत है, तप है, अपने भाईयों से प्रेम और सहानुभूति करना ही त्योहार का खास मतलब है और कपड़े लाल करने के पहले खून को लाल कर लो। सफेद खून पर यह लाली शोभा नहीं देती।''

मनहर की मृत्यु श्री विलास के जीवन पर एक छाप छोड़ जाती है और वह उसे कर्मशील व्यक्ति बनने की प्रेरणा दे जाता है। स्पष्ट है कि मनहर में वे प्रत्येक गुण विद्यमान थे जो एक राष्ट्र–प्रेमी में होने चाहिए।

चंपा :– कहानी की नायिका चंपा है। चंपा श्रीविलास की पत्नी है। वह अपना पत्नीधर्म पूर्ण निष्ठा से निभाती है। पति के प्रत्येक कार्य में उसका साथ देती है। यहाँ तक कि वह पति के झूठ में भी सहायक सिद्ध होती है। शुरूआत में पति का होली न खेलना चंपा को दुखी तो करता है लेकिन जब वह पति के लिए पकवान लेकर जाती है तो वह उसके खाने की प्रशंसा करता है। परिणामस्वरूप वह उसे पुरस्कार स्वरूप कुछ मांगने को कहता है। चंपा बड़ी ही चतुराई से होली खेलने का पुरस्कार मांगती है जिसे श्रीविलास मना नहीं कर पाता।

पत्नी कर्तव्य का पालन करते हुए चंपा एक कार्य यह भी करती है कि वह अपने पति के भीतर छिपे हुए रहस्य को बाहर निकालती है जो चंपा के चरित्र की विशेषता है। वह पति पर रंग डालती है तो पति होली से जुड़ी हुई घटना का रहस्य बताता है। पत्नी के कारण ही उसके मन की कायरता या दुर्बलता समाप्त हो जाती है और वह कर्मशील व्यक्ति बनने का निर्णय लेता है।

'आतिथ्य' कहानी के पात्रों का चरित्र–चित्रण :–

रामशरण का चरित्र–चित्रण :– 'आतिथ्य' कहानी में रामशरण के चरित्र को उभारने में लेखक सफल रहा है। रामशरण के चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1) **कर्मचारी** :– रामशरण भारत सरकार के अर्थ विभाग का एक कर्लक है। वह तीन सालों से इसी विभाग से काम कर रहा है। भारत सरकार की तरफ से उसे सारी सुख सुविधाएँ प्राप्त हैं। जिसके चलते छः महीने शिमला और छः महीने दिल्ली रहता है। उसे किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं होती।

2) **व्यक्तित्व :–** रामशरण का जन्म मेरठ जिले के एक गाँव में हुआ था। उसे प्रकृति से बहुत प्रेम है। इसीलिए प्रकृति के प्रति उसका आकर्षण बढ़ता जाता है। प्रकृति की सौंदर्यता को देखने के लिए वह शिमला की सौंदर्यभरी पहाडियों तथा वहाँ के परिवेश को देखने की इच्छा रखता है क्योंकि वह प्रकृति का आनंद लेना चाहता था। रामशरण कल्पनाशील व्यक्ति है। वह अपनी स्मृतियों में हमेशा खोया रहता है। वह एक साहसी व्यक्ति के

रूप में भी उभरकर सामने आया है। प्राकृतिक सौंदर्य को देखने के लिए वह नौकरी से तीन माह की छुट्टी लेकर पहाड़ी क्षेत्र की यात्रा में निकल पड़ता है। इस यात्रा के दौरान उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है फिर भी वह हार नहीं मानता। परिणामस्वरूप इस यात्रा में आगे बढ़ता जाता है। वह जानता है कि जंगल में उसे रीछ, बाध, चीता, घुरड़ आदि नोंच खाएँगे तभी भी वह पीछे नहीं मुड़ता। खर्शू के कँटीले पत्ते बार–बार उसके गालों और हाथों को खरोंच देते थे तब भी वह रूकता नहीं है। वह रास्ते में आए सँकटों से घबराता नहीं है।

3) स्पष्टवादी :– रामशरण स्पष्टवादी भी है। जब वह जंगल पार करके एक गाँव में पहुँचता है तो उन पहाड़ी लोगों से सहायता माँगता है। पहाड़ी लोग सहायता करने के बजाए उसके साथ कठोर व्यवहार करते हुए कहते हैं, "...चले जाओ। यहाँ दुकान–सहाय नहीं है। बदमाश! चोर! ... आए सैर करने वाले! भाग जाओ।" पहाड़ी लोगों से मद्द माँगना रामशरण की स्पष्टवादिता को दर्शाता है। पहाड़ी लोगों की अवहेलना तथा कटु वचन सुनने के पश्चात् भी वह स्पष्ट रूप से पिघले गले से बोलता है, "...सड़क से भटका परदेशी हूँ। रात काटने के लिए कोई जगह दे दो, गरीब की मेहरबानी होगी।" गाँव के लोगों का दुर्व्यवहार सहने के पश्चात् भी वह अपनी बात कहने से नहीं कतराता।

4) सहनशीलता :– 'आतिथ्य' कहानी का पात्र रामशरण एक सहनशील व्यक्ति के रूप में भी उभरकर आया है ...गाँव वालों का तिरस्कार सहने के पश्चात् भी वह अपनी सहनशीलता को बनाए रखता है। वह उन्हें भला–बूरा नहीं कहता बल्कि शांत रहकर उनके कटु वचन तथा अवलेहना को सहता है। इस प्रकार रामशरण ने सहनशीलता का भी परिचय दिया है।

5) परिश्रमी :– रामशरण बहुत ही परिश्रमी व्यक्ति है। वह अपना कार्य मन लगा कर करता है। वह सरकार के आय–व्यय का हिसाब तथा अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाता है क्योंकि वह परिश्रम करने से बिल्कुल नहीं घबराता है। स्पष्ट है कि 'आतिथ्य' कहानी में रामशरण एक ऐसा व्यक्ति है जिसे प्रकृति के प्रति प्रेम है और इसी प्रकृति प्रेम के कारण उसे बहुत–सी कठिनाइयों से जूझना पड़ता है। उसके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह विपरीत परिस्थितियों के पश्चात् भी अपनी सहनशीलता तथा हिम्मत को बरकरार रखता है।

3.4 'ममता', 'आँसुओं की होली' एवं 'आतिथ्य' कहानियों की समस्या

'ममता' कहानी की समस्या

सामाजिक समस्या :–

1. विधवा नारी की समस्या :– 'विधवा समस्या' समाज की विषम समस्या है। प्राचीन काल में विधवाओं का जीवन अति कठोर था। जिसके कारण उन्हें सामाजिक अन्याय को सहना पड़ता था। हमारी धार्मिक मान्यताओं के

अन्तर्गत विधवा को समाज के बनाए नियमों के अनुसार रहना पड़ता है। अगर वह इसका विरोध या उल्लंघन करे तो समाज इसके विरुद्ध हो जाता है। ऐसे तो हमारे समाज में नारी को उच्च दर्जा दिया गया है, लेकिन भेदभाव की स्थितियाँ आज भी कहीं–न–कहीं विद्यमान हैं। जिसमें विधवा नारी की समस्या को देखा जा सकता है। कोई भी स्त्री इस अभिशाप को झेलना नहीं चाहती लेकिन घटनाओं या परिस्थितिवश नारी को जब विधवा जीवन जीना पड़ता है तो उसका भाग्य दुर्भाग्य में परिवर्तित हो जाता है। वह अपनी मर्जी के अनुसार न हँस सकती है और न रो सकती है। विधवा स्त्री को उपेक्षा भरा जीवन जीना पड़ता है। 'ममता' कहानी की पात्र ममता विधवा युवती है। ममता के पिता चूड़ामणि जब अपनी पुत्री को ऐसी अवस्था में देखते हैं तो उन्हें बहुत दुख पहुँचता है। ममता का यौवन शौण नदी के समान ही उमड़ रहा था। उसके मन में वेदना थी, मस्तक में हलचल थी, आँखों में पानी की बरसात थी। सारी सुख–सुविधाओं के पश्चात् भी वह दुख को भोग रही थी, मंत्री चूड़ामणि की पुत्री थी। उनके पास किसी चीज़ की कमी न था। वह जानते थे कि विधवा का जीवन दुखों से भरा रहता है। वह न हँस सकती है और न रो सकती है जिसका स्पष्ट उदाहरण इस प्रकार मिलता है, "...हिंदू विधवा संसार में सबसे तुच्छ और निराश्रय प्राणी है, तब उसकी विडंबना का कहाँ अंत था।"

स्पष्ट है कि विधवा नारी का हँसना निर्लज्जता का सूचक है और रोना अपशुकन का। उसके किसी विवाह या उत्सव में भी आना अपशकुन ही माना जाता है। ऐसी स्थिति में उसकी विडंबनाओं का अंत कहीं पर भी नहीं है।

2) आक्रमण के चलते नारी का शोषण

मुगलकाल में नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी, मुगल विदेशी तो थे ही विजातीय भी थे। उसके धर्म तथा परम्पराएँ भिन्न थीं। इस काल में नारी स्वतंत्र नहीं थी। उनकी सुरक्षा हेतु उन पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिए थे। नारी का घर से बाहर जाना मना था। वह परपुरुषों से बात नहीं कर सकती थी। इस कारण पर्दाप्रथा प्रचलित हो गई थी। ऐसे में जब युद्ध होता तो मुगल शासक दूसरे राज्य पर अपना दबदबा बनाने के लिए आक्रमण करता है। मुगलों से हारे हुए राजा का राज्य तो उनके अधीन हो जाता, साथ ही स्त्रियों पर भी वह अपना अधिकार रखते हैं। ऐसी स्थिति में स्त्रियाँ अपनी जान की रक्षा हेतु मुगल का आरक्षण लेने के बदले सती धर्म को अपनाना अपना सौभाग्य समझती थीं। ममता कहानी की नायिका के पिता की हत्या जब शेरशाह करता है और उनके राज्य को अपने अधीन कर लेता है तब ममता किसी तरह अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग जाती है और उनको कहीं पर भी नहीं मिलती। इस काल में आक्रमण के कारण नारी का शोषण भी किया जाता था लेकिन ममता न तो शोषण का शिकार बनती है और न ही सती प्रथा को अपनाती है। वह अपनी सूझ–बूझ के अनुसार वहाँ से भागकर किसी एकांत जगह चली जाती है जहाँ उसे कोई पहचान न सके।

3) राजनीतिक समस्या

राजनीति का अर्थ है वह नीति जिसके अनुसार देश व राज्य शासन का काम किया जाता है। वह नीति

जिसमें जन के कल्याण तथा हित तथा अहित के बारे में हो। एक अच्छा शासक वहीं है जो 'स्व' से पहले अपनी प्रजा के हित के विषय में सोचे। अपने राज्य तथा भारत के कल्याण के बारे में सोचे। इस कहानी में हुमायूँ इसी तरह का एक अच्छा शासक सिद्ध हुआ है। जिसमें मानवीय संवदेना व्याप्त है। हुमायूँ जब वृद्ध स्त्री ममता की झोंपड़ी में एक रात के लिए शरण लेता है तो प्रतिदान में वह उस झोंपड़ी को घर में तबदील करने का आदेश देता है। हुमायूँ द्वारा कहे कथन, "मिरजा! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका। उसका घर बनवा देना, क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था। वह स्थान भूलना मत।"

स्पष्ट है कि जहाँ पर एक शासक की सकारात्मक सोच प्रकट होती है वहीं नकारात्मक पहलू भी उभरकर सामने आता है कि हुमायूँ ने जिस झोंपड़ी को घर बनाने का आदेश दिया था। वहाँ पर अष्टकोण मंदिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया– "सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था। उनके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में यह गगन चुंबी मंदिर बनाया। पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं।" उक्त कथन से स्पष्ट है कि हुमायूँ के पुत्र अकबर ने पिता की स्मृति में उस स्थान पर मंदिर बनवाया। अकबर ने पिता की इच्छा का न मान रखा और न ममता के प्रति संवेदना थी। जिस स्त्री ने उसके पिता को आश्रय दिया उसका नाम तक भी नहीं लिया गया। स्पष्ट है कि कुल की स्मृति को बनाए रखने के लिए उस स्थान पर घर के बदले मंदिर बनवाया गया जो कहीं–न–कहीं शासक वर्ग की दिखावे या प्रतिष्ठ की प्रवृत्ति को स्पष्ट करता हैं

आसुँओं की होली कहानी की समस्या :–

संवेदनशून्यता :– इस कहानी में प्रेमचन्द ने समस्या के साथ–साथ समाधान की ओर भी संकेत किया है। वर्तमान समय में व्यक्ति 'स्व' तक ही सीमित रह गया है। आज के प्रायः व्यक्ति अपना जीवन जीते हुए मौज़–मस्ती में ही रहते हैं। उन्हें किसी की भावनाओं, दर्द या पीड़ा से कोई लेना–देना नहीं है। जिसके चलते उनमें संवेदनशीलता लुप्त होती जा रही है। इसी संवेदनशून्यता को लेखक ने 'आँसुओं की होली' में वर्णित किया है। कहानी का प्रमुख पात्र श्रीविलास ऐसा ही युवक है। जिसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं था। वह मौज़–मस्ती में ही रहता है। एक दिन जब मित्र मनहर उसे अनाथ बुढ़िया की लाश को कंधा देने को कहता है तो वह अपनी संवेदनशून्यता को दर्शाता है, उसके इस कथन से संवेदनशून्यता स्पष्ट झलकती है। "...मेरे घर कई मित्र आये हुए थे। गाना हो रहा था। उस वक्त लाश उठाकर नदी जाना मुझे अप्रिय लगा। बोला– इस वक्त तो भाई, मैं नहीं जा सकूँगा। घर पर मेहमान बैठे हुए हैं। मैं तुम्हें बुलाने आया था।"

उसके इस वाक्य से मनहर मित्र श्रीविलास को तिरस्कार भरी नज़रों से देखता है और उसे धिक्कारते हुए होली का महत्व समझाता है कि, "कपड़े लाल करने के पहले खून को लाल कर लो। सफेद खून पर यह लाली शोभा नहीं देती।"

श्रीविलास अपनी होली के त्योहार का मज़ा खराब नहीं करता चाहता था इसीलिए वह उसके साथ जाने को मना करता है। मित्र की फटकार उसे बहुत बुरी लगती है जिसके चलते वह कहता है, ''...अगर मुझमें वह सेवा–भाव न था, तो उसे मुझे यों धिक्कारने का कोई अधिकार न था।''

कहानी एक ऐसा मोड़ लेती है जिससे श्रीविलास के चरित्र में अंतर आ जाता है। मित्र द्वारा पड़ी पटकार उसके जीवन का लक्ष्य निर्धारित करती है। मित्र की बातों का प्रभाव उसके जीवन पर ऐसा पड़ा कि वह उन स्मृतियों को कभी भूल नहीं पाया। मित्र मनहर का अंतिम पत्र उसको भीतर तक भेद देता है। जिसमें लिखा था ''...आखिरी बार मिल जा, अब शायद इस जीवन में भेंट न हो...।'' श्रीविलास मित्र से जब मिलने पहुँचता है तब तक उसकी मृत्यु हो चुकी थी। मित्र मनहर के कारण उसके जीवन में एक नया मोड़ आ जाता है। श्रीविलास जो संवेदनशून्य जिसके मन में मानवता नहीं थी आज उसका स्वभाव संवेदनशीलता से परिपूर्ण है। उसे यह ज्ञात हो गया है कि होली स्वार्थ का नहीं बल्कि प्रेम का प्रतीक है। जिस होली के त्योहार के कारण दो दोस्तों के बीच खटास पैदा हुई उसी होली के रंग से धुलकर श्रीविलास की कायरता समाप्त हो गई। मित्र के जाने के पश्चात् वह होली तो क्या किसी भी त्योहार को नहीं मानता था। उसे अपनी गलती का अहसास हो गया था और वह आत्मग्लानि में जीता था जिसका स्पष्ट उदाहरण श्रीविलास द्वारा कहे शब्दों से मिलता है, ''हाय! अगर मैं जानता कि यह प्यारे मनहर का आदेश हैं, तो आज मेरी आत्मा को इतनी ग्लानि न होती।''

यहाँ लेखक ने व्यक्ति में चेतना लाने का भी प्रयास किया है। श्रीविलास की असंवेदना को दर्शाने के साथ–साथ उसके जीवन में आए बदलाव को भी चित्रित किया है। वह कर्मशील व्यक्ति बनने के साथ–साथ संवेदनशील व्यक्ति का भी निर्माण करता है।

'आतिथ्य' कहानी की समस्या :–

'आतिथ्य' कहानी के पात्र रामशरण के माध्यम से लेखक ने एक यात्री की समस्याओं तथा यात्रा में आई विभिनन बाधाओं का उल्लेख किया है। रामशरण अपनी नौकरी से छुट्टी लेकर यात्रा को निकलता है। वह बड़ी ही उत्साह से पहाड़ी क्षेत्र की सौंदर्यता तथा पहाड़ी लोगों का अतिथि सत्कार देखने को उत्सुक था क्योंकि उसने बहुत–सी कहानियों में पहाड़ी क्षेत्र के बारे में सुना था कि पहाड़ी लोग अतिथि के सत्कार का अवसर पाने के लिए आपस में झगड़ बैठते हैं। इतना ही नहीं पहाड़ी स्त्रियाँ अतिथि की थकावट दूर करने के लिए उनके शरीर को हाथों से दबाती हैं और अतिथि की सेवा में कोई कमी नहीं छोड़तीं। यह सब बातें रामशरण के मन में गहरा प्रभाव डालती हैं। जिसके चलते रामशरण बड़ी ही उत्साह तथा उम्मीद के साथ इस दृश्य तथा लोगों के आचार–व्यवहार को देखने के लिए यात्रा पर निकल पड़ता है। यह यात्रा रामशरण के लिए आसान नहीं थी जसका स्पष्टीकरण इस प्रकार मिलता है, ''रामशरण थक जाने के कारण सड़क पर गिरते' एक छोटे–से पहाड़ी झरने के समीप बैठ गया था। झोले में से निकाल उसने कुछ सूखा मेवा खाया और पानी पीकर विश्राम करने लगा।''

वह अपनी यात्रा में आगे बढ़ता गया। जब थकावट होती तो वह रूक जाता और भूख लगने पर कुछ–न–कुछ खा लेता। इस तरह उसे दूर से एक गाँव दिखता है। वह उस गाँव में पहुँचकर पहाड़ी लोगों से मदद माँगता है, ''कोई है' ज़रा देखना, मुसाफिर है।'' रामशरण जब तीन बार पुकारता है तब एक मकान के ऊपर की मंजिल की खिड़की खुलती है और पहाड़ी आवाज़ में कोई कहता है कि इस समय कौन हे? रामशरण उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता है कि "शिमला से आया हूँ ऐसे घूमने सैर करने के लिए" इसके प्रत्युत्तर में एक आदमी अपनी कठोरता का परिचय देते हुए कहता है, ''...चले जाओ! यहाँ दुकान–सराय नहीं है। बदमाश! चोर ! ... आए सैर करने वाले! भाग जाओ।''

रामशरण चुपचाप उनके व्यवहार को देख रहा था। उनका अनुचित व्यवहार सहना रामशरण की मजबूरी थी क्योंकि रात के समय वह कहाँ जाता? आस–पास के वातावरण से अनभिज्ञ था इसलिए रात के अंधेरे में आगे बढ़ना उचित नहीं था। वह एक रात की शरण उन लोगों से माँगता है किन्तु वे उसे डरा–धमकाकर गाँव से बाहर निकाल देते हैं। रामशरण गाँव के नज़दीक ही रहता है। उसे डर था कि कहीं से रीछ, बाघ आ गये तो वह बच नहीं पाएगा। अपनी सुरक्षा हेतु अखरोट के पेड़ का सहारा लेकर वह वहाँ बैठ जाता है। कुछ देर पश्चात् बूँदें टप–टप बरसने लगीं और हवा भी ज़ोरदार चलने लगी। रामशरण बहुत थक गया है। अब उसे भूख, प्यास लगने लगी थी। ज्यों–ज्यों जाड़ा अधिक लग रहा था उसके सिर का दर्द भी बढ़ता जा रहा था। अचानक एक पहाड़ी मर्द उसे आवाज़ लगाता है और वह रामशरण को अपने घर ले जाता है। वह रामशरण के लिए सुविधा जुटाने लगा जिससे उसकी सर्दी कम हो जाए। रामशरण को ध्यान रखते हुए वह बार–बार लड़की से कहता है, ''...पड़ोसी बहुत खराब हैं। कोई देख तो नहीं रहा था? तूने चारों ओर देख लिया था? ...यह देश के आदमी बड़े बदमाश होते हैं। सब जानते हैं।''

कहीं–न–कहीं पहाड़ी मर्द के मन में भी डर है क्योंकि उसने रामशरण को अपने घर में एक रात के लिए पनाह दी है। शहरी लोगों के प्रति ऐसी मानसिकता बनने का कारण यह है कि ''...रखेड़ी गाँव में स्तू की घरवाली को एक पंजाबी भगा ले गया। कोई इन लोगों को घर में पाँव कैसे रखने दे। स्तू और मतीया औरत की खोज में बागों तक गए, मिली नहीं। मिलती तो... (उसने गाली) के टुकड़े कर देते और (उसने भागी हुई औरत को गाली दी) नाक काट लेते। ...देश के लोग बड़े बदमाश होते हैं। ...इस गाँव के लोग बड़े जालिम है।''

स्पष्ट है कि किसी एक शहरी व्यक्ति की गलती के कारण पूरे गाँव के निवासी सभी शहरियों के प्रति कठोर हो जाते हैं क्योंकि उनका मानना है कि शहर के लोग बदमाश एवं चोर होते हैं। रामशरण को भी इसी दृष्टि से देखा जाता है। जिसके चलते वह उसका आदर सत्कार न करते हुए उसके साथ सेंवदनशून्य व्यवहार करते हैं। रामशरण एक यात्री के रूप में उस गाँव में आया था। हमारी भारतीय संस्कृति में अतिथियों का आदर–सत्कार किया जाता है। घर आए मेहमान को भगवान समझा जाता है किन्तु रामशरण के साथ ऐसा नहीं होता। उसे पहाड़ी लोगों की निंदा का पात्र बनना पड़ता है। परिणामस्वरूप रामशरण की यह यात्रा आशा से निराशा में परिवर्तित हो

जाती है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया है कि व्यक्ति की संकुचित मानसिकता उसके विकास में बाधा उपस्थित करती है। यदि हम संकुचित मानसिकता के चलते शहरी लोगों के साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार करेंगे तो उनके भीतर गाँव या पहाड़ी लोगों के प्रति आकर्षण की अपेक्षा अलगाव ही पैदा होगा।

3.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

1) ममता के चरित्र पर प्रकाश डालें।

उ) ....

....

....

....

....

2) श्रीविलास के चरित्र पर प्रकाश डालें।

उ) ....

....

....

....

....

3) रामशरण के चरित्र के बारे में बताएं।

उ) ....

....

....

....

....

4) 'आतिथ्य' कहानी किस समस्या को उजागर करती है?

उ) ....

....

....

....

....

5) 'ममता' कहानी की सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालें।

उ) ....

....

....

....

....

6) 'आँसुओं की होली' कहानी में किस समस्या को उकेरा गया है?

उ) ....

....

....

....

....

3.6 पाठनीय पुस्तकें

- सं॰ डॉ. शहाबुद्दीन शेख–गद्य फुलवारी

B.A. HINDI	UNIT-II	Lesson No. 4
COURSE CODE : HI-201	भाग (क)–कहानी	B.A. Sem-II

'मवाली, चीफ की दावत, एवं पोस्ट मैन' कहानियों की सप्रसंग व्याख्याँ

4.0 रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 'मवाली' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

4.3 'चीफ की दावत' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

4.4 'पोस्ट मैन' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

4.5 पठनीय पुस्तकें

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप मवाली, चीफ की दावत और पोस्ट मैने कहानियों की सप्रसंग व्याख्या से परिचित हो सकेंगे।

4.2 'मवाली' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

"लड़का तेजी से उस तरफ भागा जिधर उसकी चीजें फेंकी गई थी। वह अंधेरे में आँखें गड़ा– गड़ा कर देखने लगा। लोगों के फेंके हुये जूठे दोने, खाली नारियल और बहुत–सी मसली हुई थैलियाँ जहाँ– तहाँ पड़ी थी। एक चमकती चीज देख वह उसे उठाने के लिए झुका। वह सिगरेट का वरक था।"

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण डॉ. शहाबुदीन द्वारा संपादित हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक 'गद्य फुलवारी' में संकलित मोहन राकेश की कहानी 'मवाली' में से लिया गया है। कहानी मुंबई के समुद्र तट चौपाटी पर शाम को अपनी मस्ती में घूम रहे एक अल्हड़ किशोर बालक और वहाँ मौज– मस्ती या तफरीह के लिए आये लोगों की है। लोग इस

बच्चे को तो मवाली कहते और मानते हैं, जबकि उनका अपना व्यवहार और व्यक्तित्व मवालीपन के सभी दुर्गुण लिए है।

प्रसंग : मुंबई के समुद्र तट चौपाटी पर शाम को एक अल्हड़ किशोर बालक अपनी मस्ती में घूम रहा है। वह देखता है कि एक तरफ कुछ लोग गेंद को ऊँचा से ऊंचा उछालने की प्रतियोगिता–सी कर रहे हैं और उनमें पंद्रह–सोलह साल की एक लड़की भी है। वह इस ओर आकर्षित होता है और बाद में उनका सामान समेटने, धोने और पहुंचाने को राजी भी हो जाता है। बर्तन धोने के बाद जैसे ही वह रखने लगता है, पता चलता है कि एक चमच कम है। उसको चोर मानते हुये उसकी तलाशी ली जाती है। उसकी जेब में पड़ी सीपियाँ, तावीज अंधेरे में दूर फेंक दिये जाते हैं।

व्याख्या : इस किशोर की सबसे बहुमूल्य पूंजी वह तावीज है, जो उसे माँ ने दिया था। आज उसकी माँ इस दुनिया में नहीं है, लेकिन तावीज तो उसकी जेब में है। एक घमड़ी, निष्ठुर, हृदयहीन पुरुष उस पर चमच चोरी का आरोप लगा, तलाशी लेने के बाद वह बहुमूल्य तावीज भी फेंक देता है और लड़का तेजी से उस तरफ भागता है जिधर उसकी चीजें फेंकी गई हैं । वह अंधेरे में आँखें गड़ा– गड़ा कर देखता है। लोगों के फेंके हुये जूठे दोने, खाली नारियल और बहुत–सी मसली हुई थैलियाँ जहाँ– तहाँ पड़ी हैं । एक चमकती चीज देख, उसे तावीज समझ वह उसे उठाने के लिए झुकता है, लेकिन वह तावीज नहीं, सिगरेट का वरक है।

विशेष : राकेश मध्यवर्ग की उस मानसिकता को अनावृत कर रहे हैं, जहाँ वह असंवेदनशील और नृशंस बनकर मवालियों–सा व्यवहार करता है और अपने अहं की तुष्टि के लिए एक निर्दोष बच्चे को मवाली कहता है और मवाली कहलाने वाला लड़का अपने क्रोध, तनाव और अपमान को लहरों को पत्थर मार– मार कर शमित करता है।

4.3 'चीफ की दावत' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

"अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगो के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामलाल के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा ? "

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण डॉ. शहाबुदीन द्वारा संपादित हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक 'गद्य फुलवारी' में संकलित भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' में से लिया गया है। कहानी में वृद्धों की उपेक्षा और संतान की स्वार्थप्रियता का व्यंग्यात्मक चित्रण है। हंसराज कॉलेज दिल्ली, टैगोर थिएटर चंडीगढ़, त्रिकर्षि नाट्य संस्था भोपाल आदि अनेक स्थलों पर इस कहानी का मंचन भी हो चुका है।

प्रसंग : शामलाल आधुनिक समाज के उच्च मध्यवर्ग का नौकरीपेशा व्यक्ति है। आज घर में चीफ की दावत है। समस्या फालतू सामान और वृद्ध अवांच्छित माँ को छिपाने की है। सामान तो अलमारियों के पीछे और पलंगों के

नीचे छिपाया जा सकता है, लेकिन माँ का क्या किया जाये ? प्रस्तुत पंक्तियाँ कहानी की मूल समस्या की ओर संकेत करती हैं।

व्याख्या : शामलाल के घर चीफ की दावत है। अमेरिकन चीफ और कुछ देसी अफसर आएंगे। पति– पत्नी घर की साफ– सफाई और पार्टी की तैयारी में जुटे हैं। समस्या माँ की है। ' माँ का क्या होगा ?' माँ वृद्धा भी है, कुरूप भी, अनपढ़ भी, देहातिन भी और खर्राटे भी जोर–जोर से लेती है। उसे कहाँ छिपाया जाये ? समस्या के समाधान के अनेक विकल्प हैं। माँ को उसकी सहेली के यहाँ भेजा जा सकता है, लेकिन कहीं इससे उस बुढ़िया का फिर से आना जाना न शुरू हो जाए, इसलिए यह विकल्प छोड़ दिया जाता है। माँ के कमरे को बाहर से ताला लगाया जा सकता है, लेकिन अगर उसके खर्राटों की आवाज गूंजने लगी, तो ? यह विकल्प भी काम नहीं आता। अंततः निर्णय लिया जाता है कि जब मेहमान बैठक में होंगे तो माँ बरामदे में कुरसी पर बैठी रहेगी और जब सब लोग बरामदे में आएंगे वह बाथरूम के रास्ते बैठक में चली जाएगी। जबकि कहानी के अंत तक आते–आते यह अनुपयोगी, अवांछित माँ ही दावत के लक्ष्य को परिणति तक ले जाने का साधन बनती है यानी बेटे की तरक्की का मुख्य उपादान बनती है।

विशेष : शामलाल आधुनिकता और तरक्की की दौड़ में भागता हुआ आज का सामान्य मानव है। वह माँ का पल–पल अपमान करने वाला, उसे बोझ समझने वाला अनुत्तरदायी और कृतध्न पुत्र है। जबकि वृदधा माँ त्याग की प्रतिमूर्ति होने के बावजूद, उपेक्षित और अकेली है। यहाँ शिक्षित पीढ़ी का अशिक्षित आचरण चित्रित है। प्रस्तुत पंक्तियों की भाषा अत्यन्त सरल, सहज और बोधगम्य है।

4.4 'पोस्ट मैन' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

"अपनी खाकी वर्दी पहनकर, खाकी झोला कंधे से लटकाए दयाराम पोस्टमैन जब गांवों में जाता, तो जिस घर के समीप भी पहुंचता, ऊखल कूटती औरतें मूसल रोक लेती, दूध दूहने वाली उत्सुकता और हड़बड़ी में थन और उँगलियों के बीच का संतुलन खो बैठती और एक धार तौली में दुहती तो एक धार जमीन पर बिखेर देती। बच्चे फलों के मौसम में पधारे हुये वानरों की तरह उझकने शुरू हो जाते और बूढ़ों के हाथ में चिलम की नली धरी रह जाती। सब की जबान पर एक ही बात होती– पोस्टमैन सैप। "

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण डॉ. शहाबुदीन द्वारा संपादित हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक 'गद्य फुलवारी' में संकलित शैलेश मटियानी की कहानी 'पोस्टमैन' में से लिया गया है। कहानी देश की मिट्टी से जुड़े उन लोगों का वर्णन लिए है, जिनको अपनों से संबन्धित हर दुख और सुख की सूचना पोस्टमैन ही देता है। मानों वह इंसान न होकर देवदूत हो। बूढ़ों, बच्चों, स्त्रियाँ– सब को उसकी प्रतीक्षा रहती है।

प्रसंग : कहानी कुमाऊ के कमस्यारी गाँव के पोस्टमैन दयाराम की है। यह वह समय था, जब पोस्टमैन होना बड़े सौभाग्य का सूचक माना जाता था। दयाराम कमस्यारी गाँव में सप्ताह में दो दिन डाक लेकर आता है। पोस्टमैन अगर अच्छी सूचना या मनीऑर्डर लेकर आए, तो दरी बिछा कर बिठाया जाता है। तिलक लगाया जाता है। चाय–तम्बाकू पिलाये जाते हैं। दक्षिणा दी जाती है और यदि बुरी सूचना लेकर आए तो भोली– भाली स्त्रियाँ उसे इतना कोसती हैं कि दयाराम की तरह दोबारा तार लेकर आने के लिए बहुत–बहुत हिम्मत जुटानी पड़ती है।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों में कुमाऊ के कमस्यारी गाँव के लोगों की मनःस्थितियाँ चित्रित हैं। खाकी वर्दी और खाकी झोला लटकाए पोस्टमैन को देखते ही गाँव के सभी लोगों को लगता है, शायद उनके लिए कोई पत्र, कोई संदेश लाया है। स्त्रियाँ ऊखल कूट रही हों, दूध दुह रही हों या कोई और काम कर रही हों, उनका संतुलन बिगड़ जाता, सारी चेतना पोस्टमैन पर, अपने परिजन पर, उसके संदेश पर केन्द्रित हो जाती। बच्चे वानरों की तरह उछलने लगते, मानों कोई मीठा संदेश, मनभावन खाद्य उन्हें मिलने लगा हो और चिलम में डूबे वृद्ध भी सजग हो जाते।

विशेष : भले ही कहानी का शीर्षक 'पोस्टमैन' शब्द अंग्रेजी का है, लेकिन देहाती परिवेश होने के कारण आंचलिक शब्द भी मिलते हैं और साहब का 'सैप' हो जाना अंग्रेजी शब्दों का देहातीकरण ही है। इन पंक्तियों में पोस्टमैन, ग्रामीण स्त्रियाँ, बच्चों, बूढ़ों आदि का वर्णन चित्रात्मक शैली में किया गया है। शैलेश मटियानी ने सभी के हाव और भाव एक साथ प्रस्तुत किए हैं।

4.5 पठनीय प्रस्तकें

सं॰ डॉ॰ शहाबुद्दीन शेख – गद्य फुलवारी

'मवाली, चीफ की दावत एवं पोस्ट मैन' कहानियों की समीक्षा

5.0 रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 'मवाली' कहानी की तात्विक समीक्षा

5.3 'चीफ की दावत' कहानी की तात्विक समीक्षा

5.4 'पोस्ट मैन' कहानी की तात्विक समीक्षा

5.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

5.6 पठनीय पुस्तकें

5.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप मवाली, चीफ की दावत और पोस्ट मैन कहानियों की तात्विक समीक्षा कर सकेंगे।

5.2 'मवाली' कहानी की तात्विक समीक्षा

1) **लेखक परिचय :** मोहन राकेश नई कहानी के अग्रणी और सशक्त रचनाकार हैं। उनका जन्म 1925 में अमृतसर में और मृत्यु 1972 में दिल्ली में हुई। ग्यारह महीने वे सारिका के संपादक भी रहे। क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ, वारिस तथा अन्य कहानियाँ और पहचान तथा अन्य कहानियाँ उनके मुख्य कहानी संग्रह हैं। राकेश कहानीकार के साथ–साथ नाटककार, उपन्यासकार भी थे। उनके डायरी, पत्र और यात्रा

वृतांत भी मिलते हैं। संगीत नाटक अकादमी द्वारा उन्हें 1968 में सम्मानित किया जा चुका है। अपने दौर के वह महानायक थे।

2) **कहानी :** मुंबई के समुद्र तट चौपाटी पर शाम को एक अल्हड़ किशोर बालक अपनी मस्ती में घूम रहा है। वह देखता है कि एक तरफ कुछ लोग गेंद को ऊँचा से ऊंचा उछालने की प्रतियोगिता–सी कर रहे हैं और उनमें पंद्रह– सोलह साल का एक लड़का भी है। वह इस ओर आकर्षित होता है और बाद में उनका सामान समेटने, धोने और पहुँचाने को राजी भी हो जाता है। बर्तन धोने के बाद जैसे ही वह रखने लगता है, पता चलता है कि एक चमच कम है। उसको चोर मानते हुये उसकी तलाशी ली जाती है। उसकी जेब में पड़ी सीपियाँ, तावीज अंधेरे में फैले कचरे में दूर फेंक दिये जाते हैं। मृत माँ की निशानी तावीज उसकी बहुमूल्य पूंजी है और लड़के की सारी अल्हड़ता को एक तनाव घेर लेता है।

3) **शीर्षक :** मवाली शीर्षक ध्वन्यात्मक है। राकेश मध्यवर्ग की उस मानसिकता को अनावृत कर रहे हैं, जहाँ वह असंवेदनशील और नृशंस बनकर मवालियों–सा व्यवहार करता है और अपने अहं की तुष्टि के लिए एक निर्दोष बच्चे को मवाली कहता है और मवाली कहलाने वाला लड़का अपने क्रोध, तनाव और अपमान को लहरों पर पत्थर मार–मार कर शमित करता है।

4) **कथावस्तु / कथानक**

आरंभ : कहानी का आरंभ चौपाटी की शाम से होता है। यहाँ तफरीह के लिए आए लोगों के अतिरिक्त एक तेरह– चौदह वर्षीय, साँवले रंग का लड़का घूम और सीपियाँ बटोर रहा है। **विकासः** विकास में हम देखते हैं कि लड़का एक परिवार द्वारा खेले जा रहे गेंद को ऊपर उछालने के खेल को देखने में रम जाता है। इस खेल में एक 15–16 साल का लड़का भी हिस्सा ले रहा है। लड़की द्वारा गेंद समुद्र की तरफ उछल जाने पर वह भाग कर ला भी देता है और बाद में उनका सामान समेटने, धोने और पहुँचाने को राजी भी हो जाता है।

चरमसीमा : बर्तन धोने के बाद जैसे ही वह रखने लगता है, पता चलता है कि एक चमच कम है। उसको चोर मानते हुये उसकी तलाशी ली जाती है। उसकी जेब में पड़ी सीपियाँ, आधा खाया अमरूद, कौड़ियाँ, एक पैसा और तावीज अंधेरे में फैले कचरे में दूर फेंक दिये जाते हैं। उसे मारा जाता है। गालियाँ दी जाती हैं।

अंत : मृत माँ की निशानी तावीज उसकी बहुमूल्य पूँजी है। उसके न मिलने पर बेबस लड़का रेत पर औंधा लेट सिसकियाँ भरता है, लहरों पर पत्थर मारता है, गालियाँ देता है।

5) **पात्र :** नायक किशोर एक तेरह– चौदह वर्षीय, दरिद्र, अनाथ, साँवले रंग और सामान्य नाक– नक्श वाला गरीब लड़का है। वह अल्हड़ और मनमौजी है। उसकी आँखों में अजब–सी बेबाकी और आवारगी है।

6) **देशकाल वातावरण :** यहाँ मुंबई के मालाबार हिल, चौपाटी का वातावरण है। शाम का समय है। उमड़ती हुई लहरें, बादलों के सुरमई टुकड़े और तरह–तरह के लोग हैं। कुछ मनोरंजन के लिए हैं और कुछ मनोरंजन का सामान प्रस्तुत कर रहे हैं। भाषणबाजी और धार्मिक प्रवचनों से लेकर आदम–हव्वा की परंपरा का पालन करने वाले लोग तक–सभी मौजूद हैं। राकेश लिखते हैं, "अंधेरे और रोशनी का इतना सुंदर समझौता और कहीं नहीं होगा, जितना चौपाटी के मैदान में है––– पश्चिमी क्षितिज के पास बादलों के दो सुरमई टुकड़े समुद्र से निकले बड़े–बड़े मगरमच्छों की तरह एक दूसरे से उलझे हुये थे।"

7) **भाषा शैली :** कहानी समाप्ति से आरम्भण शिल्प में लिखी गई है। इसका आरम्भ और अंत मुंबई के चौपाटी सागर तट के दृश्यों से ही होता है। भाषा सामान्य साहित्यिक भी है, आम बोलचाल की भी और मुंबइया की भी। मुहावरों का प्रयोग है। दूरगामी प्रतीक भी हैं। जैसे– वह जीवन की त्रासदियों को वैसे ही सोख और उड़ा रहा है जैसे जख्मी घुटने पर रेत डाल फूँक से उसे उड़ा देता है।

8) **उद्देश्य :** कहानी कहती है कि मवाली वह नहीं, जो गरीब है, अनाथ है, अकेला है, अपितु मवाली वह है, जो मात्र एक चमच के खो जाने पर बिना धीरज रखे अपने से कमजोर व्यक्ति पर झूठा इल्जाम लगाता है। उसे मारता है, अपमानित करता है, गालियाँ देता है, उसकी जेब की सारी चीजें कचरे की तरह फेंक देता है।

5.3 'चीफ की दावत' कहानी की तात्विक समीक्षा

1) **लेखक परिचय :** भीष्म साहनी की कहानी यात्रा बीसवीं शती के लगभग पांचवें दशक से आरंभ होती है। इन कहानियों में समाई सामाजिक चेतना उन्हें प्रगतिशील कहानीकार बनाती है, तो जिजीविषापरक दृष्टि उन्हें नई और सचेतन कहानी की पंक्ति में ला खड़ा करती है। साहनी का जन्म रावलपिंडी पाकिस्तान में 1915 में हुआ और मृत्यु 2003 में दिल्ली में हुई। लाहौर गवर्नमेंट कालेज से 1937 में अँग्रेजी में एम. ए. करने के पश्चात उन्होने 1958 में 'Concept of Hero in Hindi Novel' विषय पर पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से पीएच. डी. की। 'भाग्य रेखा', 'पहला पाठ', 'भटकती राख', 'पटरियाँ', 'वाङ्चू', 'शोभा यात्रा', 'निशाचर' आदि उनके कहानी संग्रह हैं, साहनी अढ़ाई वर्ष 'नई कहानियाँ पत्रिका के संपादक भी रहे हैं। उनके पाँच उपन्यास, अनुवाद कार्य और कुछ नाटक भी हैं। 'तमस' उपन्यास पर बनी फिल्म में साहनी ने भी अभिनय किया है। उन्हें 1975 में 'तमस' के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा 1998 में भारत सरकार द्वारा 'पद्म भूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

2) **कहानी :** भीष्म साहनी को प्रथम प्रसिद्धी 'चीफ की दावत' कहानी से ही मिली थी। कहानी संबंधो के संदर्भ में मूल्यातिक्रमण की बात करती है। शामलाल आधुनिक समाज के मध्यवर्ग का नौकरीपेशा व्यक्ति है। आज घर में चीफ की दावत है। समस्या फालतू सामान और वृद्ध अवांच्छित माँ को छिपाने की है। सामान तो अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जा सकता है, लेकिन माँ का क्या किया जाये? वह माँ जिसने

अपने जेवर तक बेच कर बेटे को इस मुकाम तक पहुंचाया था, आज वृद्धावस्था के कारण बेटे के लिए लज्जा का विषय बन गई है। हंसराज कॉलेज दिल्ली, टैगोर थिएटर चंडीगढ़, त्रिकर्षि नाट्य संस्था भोपाल आदि अनेक स्थलों पर इस कहानी का मंचन भी हो चुका है।

3) **शीर्षक :** शीर्षक व्यंजनात्मक है। 'चीफ की इस दावत' में पाश्चात्यीकरण, अवसरवादिता, तरक्की के रहस्यों के साथ–साथ शामलाल के कृतघ्न, उथले चरित्र का हल्कापन और मूल्यहीनता भी ध्वनित होते हैं। यह दावत नौकरी में तरक्की के लिए है और इस दावत में शामलाल को सबसे बड़ी अडचन माँ लगती है, जबकि कहानी के अंत तक आते–आते माँ की उपस्थिति ही इस दावत में वरदान बन जाती है, मूल लक्ष्य की प्राप्ति का केंद्र बन जाती है।

4) **कथानक / कथावस्तु :**

आरंभ : कहानी का आरंभ इस सूचना से होता है कि शामलाल के घर चीफ की दावत है। अमेरिकन चीफ और कुछ देसी अफसर आएंगे। पति– पत्नी घर की साफ– सफाई और पार्टी की तैयारी में जुटे हैं। समस्या माँ की है। 'माँ का क्या होगा ?' माँ वृद्धा भी है, कुरूप भी, अनपढ़ भी, देहातिन भी और खर्राटे भी जोर–जोर से लेती है। उसे कहाँ छिपाया जाये ?

विकास : विकास में समस्या के समाधान के प्रयास हैं। माँ को उसकी सहेली के यहाँ भेजा जा सकता है, लेकिन कहीं इससे उस बुढ़िया का फिर से आना–जाना न शुरू हो जाए, इसलिए यह विकल्प छोड़ दिया जाता है। माँ के कमरे को बाहर से ताला लगाया जा सकता है, लेकिन अगर उसके खर्राटों की आवाज गूंजने लगी, तो ? यह विकल्प भी काम नहीं आता। अंततः निर्णय लिया जाता है कि जब मेहमान बैठक में होंगे तो माँ बरामदे में कुरसी पर बैठी रहेगी और जब सब लोग बरामदे में आएंगे वह बाथरूम के रास्ते बैठक में चली जाएगी।

चरमसीमा : चरमसीमा में एक विरोधाभास मिलता है। बेटे के लिए माँ शर्म का कारण है और चीफ के लिए सम्मान का। बेटा पाश्चात्य संस्कृति के पीछे पागल है और चीफ भारतीय मूल्यों और संस्कृति का भक्त। वह माँ को नमस्ते करता है, हाथ मिलाता है, माँ से टप्पे सुनता है और माँ की दस्तकारी के रूप में दिखाई गई फुलकारी में रूचि दिखाता है।

अंत : कहानी का अंत पल–पल आतंकित करने वाले बेटे के लिए भी उज्ज्वल भविष्य और तरक्की की कामना करने वाली माँ से होता है।

5) **पात्र :** कहानी में कुल चार पात्र हैं– शामलाल, शामलाल की पत्नी, शामलाल की माँ और अमेरिकन चीफ। जिनमें मुख्यतः शमलाल और माँ का चरित्र उभारा गया है। शामलाल आधुनिकता और तरक्की

की दौड़ में भागता हुआ आज का सामान्य मानव है। वह माँ का पल–पल अपमान करने वाला, उसे बोझ समझने वाला अनुत्तरदायी और कृतघ्न पुत्र है। जबकि वृदधा माँ त्याग की प्रतिमूर्ति होने के बावजूद, उपेक्षित और अकेली है।

6) **देशकाल वातावरण :** कहानी आधुनिक समाज के शहराती, शिक्षित, उच्च मध्य वर्ग के वातावरण को लिए है। जहाँ तरक्की के लिए देर रात तक पीने– पिलाने और नॉन–वेज खाने की पार्टियाँ की जाती हैं। भारतीय संस्कृति का भी वातावरण है– माँ शाकाहारी है और जिस रोज घर में मांस– मछली बने, माँ खाना नहीं खाती। वह माला पकड़ जाप करती रहती है। खड़ाऊ भी पहनती है। टप्पे, फुलकारी आदि में पंजाबी वातावरण की झलक मिलती है।

7) **भाषा शैली :** भाषा अत्यंत सरल और कहीं–कहीं रेखाचित्रात्मक है– "छोटा–सा कद, सफेद कपड़ों में लिपटा छोटा सा सूखा हुआ शरीर, धुँधली आँखें, केवल सिर के आधे झड़े हुये बाल पल्ले की ओट में छिपपाये थे।"

8) **उद्देश्य :** कहानी युवा पीढ़ी की असंवेदनशीलता और स्वार्थ को चित्रित करती है। मध्यमवर्गीय शिक्षित समाज का खोखलापन और दिखावटीपन उभारा गया है। कहानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उस समय थी, जब इसे लिखा गया था। महत्वाकांक्षी, उच्चशिक्षित, शहराती शामलाल नौकरी में पदोन्नति के लिए माँ को बार–बार अपमानित करता है। विधवा वृदधा माँ उस के लिए शर्म का कारण है, बोझ है। यहाँ शिक्षित पीढ़ी का अशिक्षित आचरण चित्रित है। छद्म आधुनिकता के त्रासद ताने–बाने से बुने जीवन के यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती कहानी।

5.4 'पोस्ट मैन' कहानी की तात्विक समीक्षा

1) **लेखक परिचय :** शैलेश मटियानी नई कहानी आंदोलन के दौर के प्रसिद्ध और प्रतिबद्ध कहानीकार हैं। आर्थिक और सामाजिक रूप से दलित और शोषित वर्ग ही उनकी कहानियों का केन्द्रबिन्दू रहा। उनका जन्म उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के बाड़ेछीना गाँव में 1931 में और मृत्यु दिल्ली के शाहदरा अस्पताल में 2001 में हुई। 'मेरी तेंतीस कहानियाँ', 'दो दुखों का एक सुख', 'नाच जमूरे नाच', 'जंगल में मंगल', 'हत्यारे', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'अहिंसा और अन्य कहानियाँ', 'भविष्य और अन्य कहानियाँ', 'शैलेश मटियानी की इक्यावन कहानियाँ' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। कहानीकार के साथ– साथ वे उपन्यासकार, संस्मरण लेखक और निबंधकार भी हैं। कुमाऊ विश्वविद्यालय ने 1994 में उन्हें डी. लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया। उन्हें समय–समय पर 'फणीश्वरनाथ रेणु पुरस्कार', 'लोहिया सम्मान', 'राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार' आदि अनेक पुरस्कार मिले हैं। आज उत्तराखंड में उनके नाम से पुरस्कार का वितरण भी होता है।

2) **कहानी :** कहानी की विषय वस्तु उस समय से सम्बद्ध है, जब दूर दराज के गांवों के लोग पोस्टमैन की प्रतीक्षा किया करते थे और पोस्टमैन अक्सर सप्ताह में दो बार हर गाँव में जाया करता था। अगर वह मनी ऑॅर्डर या कोई अच्छी सूचना लाये तो देवदूत और अगर सेना में गए बेटे/पति के शहीद होने का तार हो तो वह जल्लाद। कहानी आर्थिक तंगी, प्रतीक्षा, विरह, अकेलेपन का भी बहुस्तरीय, बहुपक्षीय चित्रण करती है। सैनिक की मृत्यु पर विधवा हुई स्त्री का हृदयविदारक विलाप, उसकी बेबसी का मर्मांतक चित्रण है।

3) **शीर्षक :** कहानी चरित्र प्रधान है। इसका शीर्षक मुख्यपात्र के आधार पर रखा गया है। पोस्टमैन दयाराम के क्रियाकलाप, उसकी मनःस्थितियाँ, कमस्यारी जैसे गांवों में उसका महत्व ही कथ्य का मुख्य प्रतिपाद्य है।

4) **कथानक / कथावस्तु :**

आरंभ : कहानी का आरंभ कुमाऊ के कमस्यारी गाँव के प्रधान ठाकुर जसोतसिंह नेगी को देहरादून मिलिटरी से आए बेटे रत्नसिंह नेगी के एक पत्र से होता है।

विकास : विकास में जसोतसिंह पोस्टमैन दयारम से पत्र पढ़वाता है। बेटे का पत्र आने की खुशी में पोस्टमैन को दरी बिछा कर बिठाया जाता है। चाय– तम्बाकू पिलाये जाते हैं। मानों सीमा पर गए युवकों के परिवार के लिए वह संदेशवाहक है, फरिश्ता है।

चरम : चरमसीमा में दयाराम एक तार देख भयभीत हो जाता है। वह बीमारी का बहाना बना ब्रांच पोस्ट मास्टर ख्यालीराम पांडे को ही जाने को कहता है। उसे मुवानी गाँव की दुर्घटना स्मरण आती है, जब धनसिंह बिष्ट का बेटा कश्मीर की लड़ाई में मारा गया था और वह तार लेकर गया था। तार पढ़कर सुनाते ही उसकी जान खतरे में पड़ गई थी। बहू गालियाँ निकालती हुई दराँती लेकर दयाराम को मारने दौड़ी थी।

अंत : अंत में पता चलता है कि इस तार में तो मृत्यु की नहीं, उनकी अल्मोड़ा में ब्याही बेटी के यहाँ पुत्र जन्म की सूचना थी। वह लोग ख्यालीराम पांडे की खूब आव–भगत करते हैं। न केवल उसे आते समय आठ आने दक्षिणा के देते हैं, अपितु दयारम के लिए भी चार आने दे देते हैं।

5) **पात्र :** कहानी में अनेक पात्र आए हैं। ठाकुर जसोतसिंह नेगी उत्तराखंड के कुमाऊ के कमस्यारी गाँव का प्रधान है। उसका बेटा रतनसिंह सेना में है और उसकी पोस्टिंग देहरादून में है। पोस्टमैन दयाराम, पोस्ट मास्टर खयालीराम पाण्डेय, जैन्तुली और दूसरी स्त्रियाँ।

6) **देशकाल वातावरण :** कहानी का काल आज से कुछ दशक पहले का कह सकते हैं। यह मोबाइल क्रान्ति से पहले की पृष्ठभूमि लिए है। यहाँ कुमाऊ के कमस्यारी गाँव की स्थितियाँ हैं। दूरदराज के इस गाँव में लोग अनपढ़ हैं। पत्र भी डाकिये से ही पढ़वाया जाता है और पत्र से मिलने वाली हर अच्छी–बुरी सूचना का उत्तरदायित्व भी उसे ही सौंपा जाता है गाँव में पढ़ाई का उतना महत्व नहीं, क्योंकि रतनवा की माँ मानती है कि मनी ऑर्डर पर अंगूठा लगाने पर भी उतने ही पैसे मिलते हैं, जितने हस्ताक्षर करने पर। वैसे रत्नवा पाँच जमात पढ़ा है। घरों के न. नहीं हैं। रतनसिंह पत्र पर पता लिखता है, "बड़े पट्‌बांगण वाला मकान, खुमानी के बोट के पास।"

7) **भाषा शैली :** भाषा में आंचलिक शब्दों की भरमार है– दसखत, बिरमजी, चा–तमाकू, जबरजन्ड, पैलागन, हाल–मुकाम आदि । अंग्रेजी शब्दों का आंचलिकरण भी मिलता है– पिरेमरी, मन्यौडर। मुहावरों का प्रचुर है– आँखें उघाड़ना, बलि चढ़ाना, प्रेत बाधा छूटना।

8) **उद्देश्य :** कहानी पलटनिया पति वाली स्त्री की वेदना, प्रतीक्षा, विरह और दूर–दराज के इस गाँव का रेखाचित्र लिए है। लोग/स्त्रियाँ इतनी भोली हैं कि अगर पोस्टमैन मनी ऑर्डर या कोई अच्छी सूचना लाये तो देवदूत और अगर सेना में गए बेटे/पति के शहीद होने का तार हो तो जल्लाद। अगर अच्छी सूचना है तो उसका जमकर आतिथ्य किया जाता है और बुरी सूचना है तो गालियों की दिल दहला देने वाली बौछार उसके हिस्से में आती है।

5.5 अभियासार्थ प्रश्न

1) मवाली कहानी की समीक्षा कीजिए ।

....

....

....

....

2) कहानी कला की दृष्टि से चीफ की दावत की समीक्षा कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

3) पोस्ट मैन कहानी की समीक्षा कीजिए।

....

....

....

....

5.6 पठनीय प्रस्तकें

सं॰ डॉ॰ शहाबुद्दीन शेख – गद्य फुलवारी

B.A. HINDI	**UNIT-II**	**Lesson No. 6**
COURSE CODE : HI-201	**भाग (क)–कहानी**	**B.A. Sem-II**

मवाली, चीफ की दावत एवं पोस्ट मैन' कहानियों का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

6.0 रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 'मवाली' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

6.3 'चीफ की दावत' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

6.4 'पोस्ट मैन' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

6.5 सारांश

6.6 कठिन शब्द

6.7 अभियासार्थ प्रश्न

6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 उद्देश्य

– इस पाठ के अध्ययनोपरांत आप कहानियों के पात्रों से परिचित हो सकेंगे।

– पाठ्यक्रम में निर्धारत कहानियों में व्यक्त समस्याओं से अवगत हो सकेंगे।

6.2 'मवाली' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

पात्र परिचय

कहानी का नायक किशोर लड़का है।

1) **दरिद्र :** नायक अनाम है। यह एक तेरह– चौदह वर्षीय, साँवले रंग और सामान्य नाक– नक्श का गरीब लड़का है। नंगे पांव, नंगे सिर, सिर्फ घुटनों तक लंबी कमीज पहने चौपाटी पर सीटी बजाता, तरह–तरह के मुँह बनाता घूम रहा है। उसकी पूंजी कुछ सीपियाँ, कोड़ियाँ, तावीज, आधा अमरूद और एक पैसा है। चमच चोरी का झूठा इल्जाम लगा, वह भी शरीफ कहलाने वाले एक आदमी द्वारा फेंक दी जाती हैं।

2) **अनाथ :** वह अनाथ है। उसकी माँ की मृत्यु हो चुकी है। चौपाटी की इस भीड़ में सब तमाशा देखने वाले हैं, कोई ऐसा नहीं, जो उसे चोरी के झूठ और पिटाई से बचा सके।

3) **अल्हड़ और मनमौजी :** उसकी आँखों में अजब–सी बेबाकी और आवारगी है। जैसे घुटना छिल जाने पर उस पर थोड़ी रेत डाल फूँक से उड़ा देता है, मानों वह वैसे ही जीवन की विसंगतियों को उड़ा देना चाहता है। सीपियाँ बटोरता है। एक बच्चे को देख मुस्कुरा देता है। भाषण देने वाले की नकल करता है। जीभें दिखाता है। गुब्बारे वाले के गुब्बारे छेड़ देता है। पारसी के दो आने देने पर भी उसके बच्चे को नहीं उठाता। गेंद से खेल रही युवती का लहरों तक उछला गेंद उठा लाता है। उनका सामान समेटने और पहुँचाने को तैयार हो जाता है।

4) **निरीह और अकेला :** लड़के पर चोरी का झूठा इल्जाम लगाया जाता है। उसकी जेब की सारी चीजें दूर फेंक दी जाती हैं। बालों से पकड़ा जाता है। थप्पड़ मारे जाते है। धक्के दिये जाते हैं। जमीन पर गिरा कर ठोकरें मारी जाती हैं। सीपियाँ तोड़ दी जाती हैं। मरी माँ की एकमात्र निशानी तावीज ढूंढने पर भी नहीं मिलता। पर वह नितांत अकेला है। लोग कहते हैं, " एक लड़के ने कुछ चोरी–ओरी की है। इसी के लिए उसे मार–आर पड़ी है।"

उद्देश्य / समस्या

1) **अनाथ और गरीब लड़के का चित्रण :** नायक एक अनाथ और गरीब लड़का है। सम्बन्धों के नाम पर उसके पास मृत माँ का दिया तावीज है, दौलत के नाम पर सीपियाँ, आधा खाया अमरूद, कौड़ियाँ और एक पैसा है एवं समाज के नाम पर उपेक्षा, जलालत और चोरी के झूठे इल्जाम हैं।

2) **वर्ग वैमनस्य :** कहानी वर्ग वैमनस्य को भी दिखाती है। चौपाटी का यह समुद्र तट शाम को तफरीह करने वाले लोगों की भीड़ लिए है। गुब्बारे वाला या दूसरे लोग तो उस तफरीह के लिए सामान जुटाने या उसे आनंददायक बनाने के साधन हैं। यही तफरीह करने वाले हमारे कथानायक जैसे गरीब लड़कों से काम भी करवाते है, झूठे आभिजात्य के अभिमान में उन पर चोरी के इल्जाम भी लगाते हैं और चमच जैसी तुच्छ वस्तु के लिए पिटाई भी करते हैं। कथानायक को मवाली कहते हुये बालों से पकड़ा जाता है। थप्पड़ मारे जाते है। धक्के दिये जाते हैं। जमीन पर गिरा कर ठोकरें मारी जाती हैं। सीपियाँ तोड़ दी जाती हैं। मरी माँ की एकमात्र निशानी तावीज ढूंढने पर भी नहीं मिलता। चौपाटी की इस भीड़ में भी वह नितांत अकेला है। लोग कहते हैं, "एक लड़के ने कुछ चोरी– ओरी की है। इसी के लिए उसे मार– आर पड़ी है।"

3) **तुलनात्मक चित्रण :** तुलनात्मक चित्रण–सा करके लेखक पाठक के नीर–क्षीर विवेक पर छोड़ देता है कि वह निर्णय ले कि मवाली कौन है ? मवालीगिरी कौन कर रहा है ? राकेश मध्यवर्ग की उस मानसिकता को अनावृत कर रहे हैं, जहाँ वह असंवेदनशील और नृशंस बनकर मवालियों सा व्यवहार करता है और अपने अहं की तुष्टि के लिए एक निर्दोष बच्चे को मवाली कहता है और मवाली कहलाने वाला लड़का अपने क्रोध, तनाव और अपमान को लहरों में पत्थर मार– मार कर शमित करता है।

6.3 'चीफ की दावत' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

पात्र परिचय

1. शामलाल :

1) **सामान्य मानव :** चीफ की दावत कहानी परम्परित नायकत्व परंपरा से विद्रोह करती है। इसका मुख्य पात्र शाम लाल है। लेकिन वह नायक नहीं है। हम उसे खलनायक भी नहीं कह सकते। वह आधुनिकता और तरक्की की दौड़ में भागता हुआ आज का सामान्य मानव है। दुख यह है कि इस भागमभाग में उसने अपने नैतिक मूल्य और सांस्कृतिक उदातता भुला दी है। शामलाल आधुनिकता और तरक्की की दौड़ में भागता हुआ आज का सामान्य मानव है। वह माँ का पल–पल अपमान करने वाला, उसे बोझ समझने वाला अनुत्तरदायी और कृतघ्न पुत्र है।

2) **कुपुत्र / कृतघ्न :** एक चरित्र है माँ का–जिसने अपनी युवावस्था बेटे को पालने–पोसने–पढ़ाने में होम कर दी। जिसे कुछ बनाने के लिए अपने जेवर तक बेच डाले और दूसरा चरित्र है बेटे का– जिसे न माँ का बैठना पसंद है और न सोना। माँ बैठती है तो कुर्सी पर पैर रख लेती है और सोती है तो जोर–जोर से खर्राटे लेने लगती है। उसके लिए माँ शर्म का विषय है। घर का फालतू सामान है। कूड़ा–

करकट है। मेहमानों के आने पर उसे रात भर के लिए सहेली के यहाँ भेजा जा सकता है। कोठरी में बंद करकर बाहर से ताला लगाया जा सकता है।

3) **महत्वाकांक्षी :** शामलाल महत्वाकांक्षी है। उसे तरक्की चाहिए। इस तरक्की के लिए वह कुछ भी कर सकता है। मूल्यातिक्रमण कर सकता है। नैतिक मानदंड भूल सकता है। माँ को अपमानित और आतंकित कर सकता है।

4) **अवसरवादी :** शामलाल अवसरवादी, स्वार्थी और आत्मकेंद्रित व्यक्ति है। समय के साथ–साथ वह विधवा माँ के त्याग को भूल चुका है। वह क्यों याद रखे कि माँ ने गरीबी में आभूषण बेच–बेच कर उसे शिक्षित किया था और उसी के कारण आज वह अच्छी नौकरी पर तो है। अब उसकी जरूरत पदोन्नति है। पदोन्नति उसे अमेरिकी चीफ ही देगा। इसीलिए वह चीफ को दावत देता है और ऐसे अवसर पर माँ का बुढ़ापा उसे शर्मसार कर रहा है। अब उसके लिए माँ घर के फालतू सामान से भी गई–बीती है। उसे छिपाने का पूरा यत्न किया जाता है। यह यत्न तो सफल नहीं होता, लेकिन एक चमत्कार हो जाता है कि अमेरिकन चीफ माँ से प्रभावित हो जाता है। वह माँ को नमस्ते करता है, हाथ मिलाता है, माँ से टप्पे सुनता है और माँ की दस्तकारी के रूप में दिखाई गई फुलकारी में रूचि दिखाता है। वह माँ जिसके बारे में शामलाल कहता था कि इसे भाई के यहाँ होना चाहिए, एकाएक उसकी जरूरत बन जाती है, अब माँ के कहने पर भी उसे हरिद्वार नहीं भेजता, क्योंकि माँ को साहब के लिए फुलकारी बनानी है और साहब देखने भी आ सकते हैं कि माँ कैसे फुलकारी बनाती है।

1. माँ

1) **नायिका :** चीफ की दावत कहानी घर–परिवार में माँ की दुर्दशा को लेकर लिखी गई है। यहाँ बेटा खलनायक और माँ नायिका की तरह उभरी है। माँ का रेखाचित्रात्मक खाका खींचते भीष्म साहनी लिखते हैं– "छोटा–सा कद, सफेद कपड़ों में लिपटा छोटा–सा सूखा हुआ शरीर, धुँधली आँखें, आधे झडे अस्त–व्यस्त सिर के बाल।" माँ का जीवन वृद्धावस्था की त्रासदियों का सशक्त रेखाचित्र है।

2) **अकेलापन :** माँ एकदम अकेली है। वह घर में अकेली है, क्योंकि बेटा बहू उसे माँ नहीं एक मुसीबत मानते हैं। वह समाज में अकेली है– एक समाज उसके गाँव का था, जिसे छोड़े अरसा हो गया है, एक समाज मुहल्ले का है, यहाँ उसकी एक विधवा हम उम्र सहेली तो है, पर बेटे के राज–पाट में माँ को न सहेली के यहाँ जाने और न उसे अपने पास बुलाने की इजाजत है। घर में आने वाले मेहमानों से तो उसे छिपा कर ही रखा जाता है। माँ हमेशा बेटे से डरी दुबकी, आतंकित रहती है।

3) **त्याग की प्रतिमूर्ति :** माँ ने गरीबी में आभूषण बेच–बेच कर उसे शिक्षित किया था और आज पल–पल आतंकित करने वाले बेटे के लिए भी उज्ज्वल भविष्य और तरक्की की कामना करने वाली माँ अपनी कमजोर आँखों के बावजूद फुलकारी बनाने को तत्पर है।

माँ प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी' या 'बेटों वाली विधवा' का अगला संस्करण है।

उद्देश्य / समस्या

1) **मध्यवर्गीय व्यक्ति का अंतर–द्वद्व :** बहुत सूक्ष्म दृष्टि से उभारने के साथ–साथ कहानी एक शिक्षित बेटे के अशिक्षित व्यवहार को प्रस्तुत करती है।

2) **मूल्यातिक्रमण :** भीष्म साहनी ने पारिवारिक मूल्यों के प्रति अनास्था और बुजुर्गों के प्रति अनुत्तरदायित्व को शामलाल के माध्यम से बड़े सशक्त ढंग से व्यक्त किया है। यहाँ एक डरी हुई माँ और प्रताड़क बेटे का बिम्ब ही उभर रहा है।

3) **तरक्की के रहस्य / महत्वाकांक्षायें :** माँ के जिन बलिदानों ने शाम लाल को ऑफिसर बनाया है, उन्हें यह कृतघ्न बेटा माँ का कर्तव्य मानता है। माँ द्वारा आभूषण बेचने की बात कहना उसे तिलमिला देता है। तरक्की के लिए साहब को दावत दी जाती है। जब शामलाल को लगता है की साहब माँ से प्रभावित हैं, तो माँ को टप्पे गाने के लिए कहा जाता है। साहब पंजाब की दस्तकारी से प्रभावित हैं तो उन्हें प्रसन्न करने के लिए बूढ़ी, कमजोर आँखों वाली माँ से फुलकारी बनाने को कहता है।

4.) **वृद्धावस्था की त्रासदी / विसंगतियाँ :** न उसके पास मान–सम्मान है, न संगी साथी, न सखी– सहेली, न गली– गाँव। वह बेटे के घर में अवांछित प्राणी है। इतनी घुटन और तनाव है कि वह हरिद्वार जाने की इच्छा प्रकट करती है, लेकिन वह जा नहीं सकती, क्योंकि उसे बेटे की पदोन्नति के लिए, उसके बॉस को खुश करने के लिए फुलकारी बनानी है।

6.4 'पोस्ट मैन' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

पात्र परिचय

दयाराम : दयाराम ब्रांच पोस्ट ऑफिस बेनीनाग गाँव में डाकिया है और सप्ताह में दो बार कमस्यारी गाँव में डाक देने आता है। उसके पिता हरकारे की ड्यूटी करते थे। शहर के पोस्ट मास्टर को चातुर्मास दही की ठेठियां

और ककड़ी लौकी के बोरे पहुँचाने के बाद उन्होने बेटे को यह पोस्टमैनी दिलवाई है। माँ की खुशी यह है कि बेटे को पल्टन में नहीं भेजना पड़ा। पोस्टमैन का अपना रुतबा है, "दयाराम पोस्टमैन जब गांवों में जाता, तो जिस घर के समीप भी पहुँचता, ऊखल कूटती औरतें मूसल रोक लेती, दूध दूहने वाली उत्सुकता और हड़बड़ी में थन और उँगलियों के बीच का संतुलन खो बैठती और एक धार तौली में दुहती तो एक धार जमीन पर बिखेर देती। बच्चे फलों के मौसम में पधारे हुये वानरों की तरह उझकने शुरू हो जाते और बूढ़ों के हाथ में चिलम की नली धरी रह जाती। सब की जबान पर एक ही बात होती–पोस्टमैन सैप। " अगर सैनिक की शहादत की सूचना हो तो स्त्रियाँ दराँती लेकर उसे मारने को दौड़ती हैं। कुकर्मी कहकर शाप देती, "पोस्टमैन तुझे आँचल की छाया, हाड़–मास की काया देने वाली भी ऐसे ही छातियाँ कूटे।"

दयाराम ईमानदार भी है, संवेदनशील भी, मेहनती भी और डरपोक भी। वह ईमानदारी से पत्र पहुंचाता और पढ़कर सुनाता है। उनके सुख–दुख को समझता है। गालिया और शाप उसे भयभीत करते हैं, उत्तेजित नहीं। पोस्टमास्टर की पत्नी के मायके जाने पर बेटे की तरह उसके खान–पान के सब कार्य करता है।

उद्देश्य एवं समस्या

1) **ग्राम्य जीवन का चित्रण :** आदर–सम्मान करना लोगों के खून में है। रतनसिंह पत्र में नाते–रिश्ते, पटवारी–डाकिया–सब को पालागन करता है। छोटों को आशीर्वाद देता है। दूरदराज के इस गाँव में लोग अनपढ़ हैं। पत्र भी डाकिये से ही पढ़वाया जाता है और पत्र से मिलने वाली हर अच्छी–बुरी सूचना का उत्तरदायित्व भी उसे ही सौंपा जाता है गाँव में पढ़ाई का उतना महत्व नहीं, क्योंकि रतनवा की माँ मानती है कि मनी ऑर्डर पर अंगूठा लगाने पर भी उतने ही पैसे मिलते हैं, जितने हस्ताक्षर करने पर।

2) **फौजी का जीवन :** अपनों से सालों दूर रहने का दुख बहुत बड़ा है। गाँव के लोग एक ओर मानने लगे हैं कि पलटन की नौकरी सरकार के थान पर बलि चढ़ाने के समान ही है और दूसरी ओर हर मनी ऑर्डर उन्हें दैवी वरदान–सा लगता है। पलटनिया युवक के पत्र से स्पष्ट है कि वह गाँव के हर छोटे बड़े से कैसे जुड़ा हुआ है।

3) **स्त्री जीवन :** कहानी स्त्री जीवन के कई पहलू लिए है। बेटों की शहादत के तार माँ को दहला देते हैं इसीलिए दयाराम पोस्टमैन की माँ की खुशी यह है कि बेटे को पल्टन में नहीं भेजना पड़ा। पोस्टमैन का अपना रुतबा है, सम्मान और सुरक्षा है। स्त्री, विशेषकर पत्नी जीवन की वेदना से कहानी आद्यांत

भरी पड़ी है। पलटनिया स्वामी की स्मृति में वे व्यथा भरे विरह गीत गाती हैं। उनकी हिरण–सी आंखे और खरगोश से कान पोस्टमैन की आहट पहचानते हैं। उसे सरहद से लौटा फरिश्ता ही मानते हैं।

4) **अर्थ संकट :** कुमाऊ के ग्रामीणों की आर्थिक तंगी और बेरोजगारी के कारण विश्वयुद्ध के समय यहाँ के युवक पलटन में भर्ती हुआ करते थे। आज विश्वयुद्ध समाप्त हो चुका है, देश आजाद हो चुका है, लेकिन यह सिलसिला वैसे ही चल रहा है।

5) **धार्मिक आस्थाएँ :** कहानी ग्रामीणों की धार्मिक आस्थाएँ भी चित्रित करती है। पलटन में ड्यूटी पर गए जवान भी रतनसिंह की तरह घर में पत्र लिखें तो गोल्ल देवता के मंदिर को नहीं भूलते और गाँव में किसी का भी मनी ऑर्डर आने पर लोग पहाड़ी के टीले पर बने देवी, गोल्ल, गंगनाथ, हरू, सैम, भूमया के मंदिर में दिया जलाने जाते हैं और मनी ऑर्डर की रसीद को बताशों के साथ वहीं चढ़ा आते हैं।

6.7 कठिन शब्द

क्षीण, उज्ज्वल, फेहरिस्त, प्रतियोगिता, गत बनाना, क्षितिज, परिक्रमाएँ, दुष्कल्पना, मुखाकृति, जबरजंड।

6.7 अभियासार्थ प्रश्न

1) मवाली और पोस्टमैन कहानियों के मुख्य पात्रों का चरित्र – चित्रण कीजिये ।

....

....

....

....

2) चीफ की दावत कहानी के शाम लाल और माँ का चरित्र –चित्रण कीजिये।

....

....

....

....

3) पोस्टमैन कहानी का परिवेश चित्रित करते हुये, तत्युगीन जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

6.8 पठनीय पुस्तकें

सं॰ डॉ शहाबुदीन शेख एवं अन्य – गद्य फुलवारी

'अकेली एवं जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानियों की सप्रसंग व्याख्याँ

7.0 रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 'अकेली' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

7.3 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

7.4 पठनीय पुस्तकें

7.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप अकेली एवं जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं कहानियों की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।

7.2 'अकेली' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

"इस स्थिति में बुआ को अपनी जिंदगी पास–पड़ोस वालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी। किसी के घर मुंडन हो, जनेऊ हो, छठी हो, शादी हो या गमी–बुआ पहुँच जाती और फिर छाती फाड़ कर काम करती, मानो वह दूसरे के घर में नहीं, अपने ही घर में काम कर रही हो। "

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण डॉ. शहाबुदीन द्वारा संपादित हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक 'गद्य फुलवारी' में संकलित मन्नू भण्डारी की कहानी 'अकेली' में से लिया गया है। इस गद्यांश में सोमा बुआ की उस स्थिति का वर्णन किया है, जब वह बेटे की मृत्यु और पति के सन्यासी हो जाने के बाद एकदम अकेली हो जाती है और वर्ष में एक महीने के लिए उसके पास आने वाला पति उसे और भी अकेला कर जाया करता है।

प्रसंग : बीस साल पहले सोमा बुआ का जवान बेटा चला गया। पुत्र शोक में पति तीर्थवासी बन गए और बुआ जीवन के अकेलेपन और एकरसता से निजात पाने के लिए निस्वार्थ भाव से पास–पड़ोस को अपनापन देने और पाने लगी। कोई आमंत्रित करे या न करे, बुआ अपने व्यवहार और कार्यकुशलता से आयोजनों का भट्टी–भण्डारघर सब सम्भाल प्रशंसा, आभार और आत्मसंतुष्टि पा लिया करती है।

व्याख्या : हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी बुआ का पति आया हुआ है। बुआ अकेली होकर उतनी अकेली नहीं होती, जितनी पति के आने पर अकेली हो जाती है। पति का स्नेहहीन व्यवहार, रोक–टोक और अंकुश बुआ के जीवन की अबाध बहती धारा को कुंठित कर देता है। पति का नादिरशाही हुकुम है कि बिना बुलावे के बुआ किसी के घर मुंडन, छठी, शादी या गमी में नहीं जाएगी। परिवार खो देने के बाद इस स्त्री ने पास–पड़ोस को, समाज को अपना बना लिया था, वह हर गमी–खुशी में उनके यहाँ जाती और अपने घर की तरह पूरे मन और मेहनत से सारे काम निपटाती। लेकिन ग्यारह महीने बाद एक महीने के लिए आने वाला यह पति उसे समाज से भी काटने के प्रयासों में संलग्न है।

विशेष : बुआ की जिजीविषा अद्‌भुत है। जब वह नितांत अकेली होती है, तो पास–पड़ोस में, दूर–दराज के नाते–रिश्ते में अपनापन बाँट–बटोर वह अकेलेपन से कोसों दूर रहती है, लेकिन जब पति यानी सन्यासी जी महाराज उसके पास होते हैं, तो उनकी रोक–टोक, हर समय की दखलअंदाजी उसका जीना दूभर कर देती है। बुआ सभी के काम में हाथ बटाती है, धन– संपदा भी लुटाती है। इस सबके बावजूद मिलने वाली उपेक्षा उसे तोड़ जाती है। बुआ के अकेलेपन के अनेक पक्ष हैं। पुत्र मृत्यु ने उसे दैवी अकेलापन दिया है। पति की अनासक्ति और रोक–टोक ने दांपत्यगत अकेलापन दिया है और देवर के ससुराल वालों द्वारा आमंत्रण न मिलना उसकी झोली में सामाजिक अकेलापन डाल जाता है। मन्नू जी ने आधुनिक परिवेश के व्यक्तिवाद और उपयोगितावाद को भी यहाँ प्रस्तुत किया है।

7.3 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी की सप्रसंग व्याख्या

असहाय सुदामाओं की सुध लेने को जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं। कोई सरकारी खर्चे पर थोड़े ही सदावरत खोलने निकले हैं। वो तो अपनी टेंट से लूले, लंगड़े को सिलाई की मशीनें, वैसाखियाँ, पहियों वाली गाडियाँ बांटेंगे। गरीबों की सेवा का व्रत है उनका।

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण डॉ. शहाबुदीन द्वारा संपादित हमारी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक 'गद्य फुलवारी' में संकलित चित्रा मुद्‌गल की कहानी 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं' में से लिया गया है। यह पंक्तियाँ ठाकुर सुमेर सिंह द्वारा पोलियोग्रस्त बेटे की माँ, घर में बर्तन साफ करने वाली सुक्खन भौजी को कही गई हैं। ठाकुर सुमेर सिंह गाँव प्रधान का चुनाव जनता दल के पंडित भुवनेश्वर प्रसाद से हार जाने के बाद युवा काँग्रेस के पिछड़े वर्ग के प्रांतीय सचिव बन जाते हैं, जबकि भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री जगदंबा प्रसाद ने 'विकलांग सुधार समिति' का गठन किया है।

प्रसंग : हारे हुये, किन्तु सक्रिय राजनेता ठाकुर सुमेरसिंह के यहाँ सुक्खन भौजी यानी सुकखन की बहू बीस रुपये महीने पर बर्तन साफ करती है। वह विधवा है। उसका बेटा ललौना/बिसनूकुमार बारी अपाहिज/पोलियो पीड़ित है और ठाकुर उसे डॉ को दिखाने और पार्टी के अनुदान से सहायता की बात करते हैं और वह इस अनुग्रह पर न्योछावर होने लगती है ।

व्याख्या : यहाँ ठाकुर सुमेर सिह सुकखन भौजी के समक्ष भूतपूर्व नेताः स्वास्थ्य मंत्री जगदंबा बाबू की तुलना भगवान कृष्ण से कर रहे हैं। बल्कि अपने नेता को भगवान कृष्ण से भी ऊपर बता रहे हैं। सुदामा तो चलकर मथुरा के राजा कृष्ण के पास गए थे जबकि जगदंबा बाबू अपाहिज और गरीब ग्रामीणों की सुध लेने स्वयं गाँव आ रहे हैं। उनको वे अपने खर्चे से मशीनें, वैसाखियाँ, पहियों वाली गाडियाँ देंगे, क्योंकि आजकल उनकी सरकार नहीं है और जनता की सेवा ही उनका धर्म है।

विशेष : यह पंक्तियाँ राजनेताओं के दोगले चरित्र का उद्घाटन करती हैं। दूरगामी व्यंग्य और विसंगति लिए हैं। कहा यही जाता है कि नेता लोग जनता की सेवा के लिए हैं, जबकि सच्चाई यह है कि वे जो कुछ भी करते हैं, सब अपने प्रचार के लिए, वोट बैंक के लिए, विधानसभा की कुर्सी के लिए और अपने मित्रों–संबंधियों के लिए करते हैं। अगले चुनावों की तैयारी में लगे नेतागणों का दोगला चरित्र यहाँ अंकित है। इन पंक्तियों में टेंट, सदावरत जैसे स्थानीय या तद्‌भव शब्द भी आए हैं।

7.4 पठनीय पुस्तकें

सं. डॉ शहाबुदीन शेख एवं अन्य – गद्य फुलवारी

'अकेली एवं जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानियों की समीक्षा

8.0 रूपरेखा

8.1 उद्देश्य

8.2 'अकेली' कहानी की तात्विक समीक्षा

8.3 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी की तात्विक समीक्षा

8.6 अभियासार्थ प्रश्न

8.7 पठनीय पुस्तकें

8.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप 'अकेली एवं जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानियों की तात्विक समीक्षा कर सकेंगे।

1 **लेखक परिचय :** मन्नू भण्डारी नई कहानी आंदोलन के आधार स्तम्भों में से एक हैं। उनका जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में हुआ। उनका बचपन का नाम महेन्द्रकुमारी था। लेखन के लिए उन्होने मन्नू नाम का चुनाव किया। उनके पिता सुख सम्पतराय और पति राजेन्द्र यादव भी जाने–माने लेखक थे। उन्होने 1949 में स्नातक और 1952 में स्नातकोत्तर डिग्री ली। 1964 से अवकाश प्राप्ति तक मिरांडा हाउस, दिल्ली में प्राध्यापिका रही। उनकी कहानियों में मुख्यतः लैंगिक, वर्गीय और आर्थिक असमानता को चित्रित किया गया है। पारिवारिक सम्बन्धों में आ रहे दबाव, तनाव, दूरियों को स्वर देने में उनकी लेखनी बेजोड़ है। 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु' उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। उनकी 'यही सच है' कहानी पर बासु चौटर्जी द्वारा 'रजनीगंधा' फिल्म भी बनाई गई, जिस पर 1974 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला।

कहानीकार के साथ–साथ मन्नू भण्डारी उपन्यासकार और नाटककार भी हैं। 'महाभोज', 'आपका बंटी' उनके प्रमुख उपन्यास और 'बिना दीवारों का घर' नाटक है। उनको हिन्दी अकादमी दिल्ली का 'शिखर सम्मान', 'व्यास सम्मान', 'संगीत नाटक अकादमी सम्मान' मिल चुके हैं।

2) **कहानी :** बीस साल पहले सोमा बुआ का जवान बेटा जाता रहा। पुत्र शोक में पति तीर्थवासी बन गए और बुआ जीवन के अकेलेपन और एकरसता से निजात पाने के लिए निस्वार्थ भाव से पास–पड़ोस को अपनापन देने और पाने लगी। कोई आमंत्रित करे या न करे, बुआ अपने व्यवहार और कार्यकुशलता से आयोजनों का भट्ठी–भण्डार घर सब सम्भाल प्रशंसा, आभार और आत्मसंतुष्टि पा लिया करती है। बुआ का पति वर्ष में एक महीने के लिए आता है। पति का स्नेहहीन व्यवहार, रोक–टोक और अंकुश बुआ के जीवन की अबाध बहती धारा को कुंठित कर देते हैं। पति का नादिरशाही हुकुम है कि बिना बुलावे के बुआ किसी के घर मुंडन, छठी, शादी या गमी में नहीं जाएगी। "बुआ को अपनी जिंदगी पास– पड़ोस वालों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी। किसी के घर मुंडन हो, जनेऊ हो, छठी हो, शादी हो या गमी– बुआ पहुँच जाती और फिर छाती फाड़ कर काम करती, मानो वह दूसरे के घर में नहीं, अपने ही घर में काम कर रही हो। " बुआ को उदास देख पड़ोसिन राधा जब कारण पूछती है तो बुआ और उदास हो जाती है। बुआ के देवर के अमीर समधियों की एक लड़की की शादी बुआ के मुहल्ले में हो रही है। बुआ को आमंत्रण की प्रतीक्षा है। वह बेटे की एकमात्र निशानी अंगूठी बेच उपहारों की थाली सजा लेती है। अपनी साड़ी को रंग, माँड लगा जाने को तैयार बैठी है। आमंत्रण के लिए गली के मोड़ पर उनकी निगाहें घंटों टिकी रहती हैं, पर आमंत्रण नहीं मिला और सन्यासी जी महाराज ने कल से आज तक कोई पच्चीस बार चेतावनी दी है कि "यदि कोई बुलाने न आए तो चली मत जाना।"

3) **शीर्षक :** सोमा बुआ बहुत अकेली है। एक अकेलापन उसे बेटे की मृत्यु ने दिया है, दूसरा पति के संन्यास ने और तीसरा सामाजिक जुड़ाव से कटाव करने वाले पति के नादिरशाही हुकुम ने। यानी उसके हिस्से में दैवी, पारिवारिक, सामाजिक– सब प्रकार का अकेलापन आया है।

4) **कथानक / कथावस्तु :**

आरंभ : कहानी का आरम्भ परिचयात्मक है कि युवा बेटे हरखू की असमय मृत्यु के बाद सोमा बुआ के पति सन्यासी बन गए और बुआ अपना जीवन पास–पड़ोस के भरोसे काटने लगी। बुआ का पति वर्ष में एक महीने के लिए आता है। पति का स्नेहहीन व्यवहार, रोक–टोक और अंकुश बुआ के जीवन की अबाध बहती धारा को कुंठित कर देते हैं। पति का नादिरशाही हुकुम है कि बिना बुलावे के बुआ किसी के घर मुंडन, छठी, शादी या गमी में नहीं जाएगी।

विकास : में हम देखते हैं कि बुआ अपने स्नेहिल व्यवहार और कर्मठता के कारण अपनी पहचान बना लेती है। किशोरीलाल के बेटे के मुंडन पर भट्टी–भण्डार घर सब सम्भाल ऐसे संभाल लेती है कि घर के लोग निश्चिंत हो जाते हैं। उन्हें कहना पड़ता है– "अम्मा ! तुम न होती तो आज भद्द उद जाती। अम्मा ! तुमने लाज रख ली।"

चरमसीमा : चरम में हम देखते हैं कि बुआ के स्वर्गीय देवर के ससुराल वालों की किसी लड़की का संबंध उनके मुहल्ले में हुआ है। यानी समधीजी के यहाँ शादी की बात सुन बुआ पुलकित हो उठती है। वह बेटे की एकमात्र निशानी अंगूठी बेच उपहारों की थाली सजा लेती है। कलाइयों पर लाल हरी चूड़ियाँ चढ़वाती है। अपनी साड़ी को रंग, माँड लगा जाने को तैयार बैठी है।

अंत : आमंत्रण के लिए गली के मोड़ पर उनकी निगाहें घंटों टिकी रहती हैं, पर आमंत्रण नहीं मिला और सन्यासी जी महाराज ने कल से आज तक कोई पच्चीस बार चेतावनी दी है कि "यदि कोई बुलाने न आए तो चली मत जाना।" बुआ बुझे मन से सारा सामान अपने एकमात्र सन्दूक में रख देती है।

5) **पात्र :** कहानी नायिका प्रधान है। बुआ मर्दवाली होकर भी बेमर्द है और पति के हर साल आने के बावजूद परित्यक्ता है। कहानी पति–परमेश्वर के बड़े झूठ को चुन्नौती देती है। बुआ वृद्धा है। माँ के रूप में आज बीस साल बाद भी वह हरखू को नहीं भूल पाती। पड़ोसियों के यहाँ काम करते लगता है मानों हरखू के यहाँ काम कर रही हो।

6) **देशकाल वातावरण :** यहाँ आज का गृहस्थ जीवन और उसकी विसंगतियाँ चित्रित हैं। कहानी पारिवारिक / सामाजिक वातावरण को उकेरती है।

7) **भाषा शैली :** मन्नू की भाषा–शैली सीधी और सरल है। उनमें जीवन के स्पंदित क्षण पकड़ने की बेजोड़ क्षमता है।

8) **उद्देश्य :** यहाँ एक संकुचित सोच वाले आत्मकेंद्रित, अहं सजग पति और समाजोन्मुख जीवन सम्पन्न, मिलनसार स्त्री चित्रित है।

8.3 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी की तात्विक समीक्षा

1) **लेखक परिचय :** चित्रा मुद्गल आधुनिक कथा साहित्य की बहुचर्चित और प्रतिनिधि रचनाकार हैं। उनका जन्म 10 सितंबर 1944 को चेन्नई, तमिलनाडु में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के अपने पैतृक गाँव निहाली खेड़ा में और उच्च शिक्षा मुम्बई विश्वविद्यालय में प्राप्त की। उनके तेरह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास, तीन बाल उपन्यास, चार बाल कथा संग्रह, पाँच संपादित पुस्तकें और अनुवाद कार्य प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम कहानी 1964 में प्रकाशित हुई। 'आवां' उपन्यास पर उन्हें 'व्यास' और 'इन्दु

शर्मा कथा सम्मान' मिल चुका है। 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203– नाला सोपारा' पर उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' दिया गया। 'जिनावर', 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं', 'इस हमाम में', 'मामला आगे बढ़ेगा' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। उनकी अनेक कहानियों पर टेलीफिल्में बन चुकी हैं। पितृसत्ताक से विद्रोह करती स्त्री और नारी विमर्श उनके चिंतन पक्ष का अभिन्न अंग हैं। शुरू से ही उनका जुड़ाव आंदोलनकारी संगठनों से रहा है। उनकी राजनीतिक विचारधारा लोहिया के समाजवाद से प्रभावित है।

2) **कहानी :** उनकी यह कहानी पहली बार धर्मयुग में प्रकाशित हुई थी। कथा इस प्रकार है कि हारे हुये, किन्तु सक्रिय क्षेत्रीय राजनेता ठाकुर सुमेरसिंह के घर सुक्खन भौजी काम करती है। उसका बेटा अपाहिज है और ठाकुर उसे डॉ को दिखाने और पार्टी के अनुदान से सहायता की बात करते हैं– "असहाय सुदामाओं की सुध लेने को जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं। कोई सरकारी खर्चे पर थोड़े ही सदावरत खोलने निकले हैं। वो तो अपनी टेंट से लूले, लंगड़े को सिलाई की मशीनें, वैसाखियाँ, पहियों वाली गाडियाँ बांटेंगे। गरीबों की सेवा का व्रत है उनका।" भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री जगदंबा प्रसाद ने 'विकलांग सुधार समिति' का गठन किया है। गाँव के अपाहिज लोगों की डाक्टरी जांच के बाद जगदंबा प्रसाद गाँव के दंगल वाले मैदान में एक समारोह कर अपाहिजों को सहायतार्थ उपहार वितरित करते हैं। सुक्खन भौजी के पंद्रह वर्षीय लल्लौने को भी पहियों वाली गाड़ी मिलती है। अखबारों के लिए फोटो लिए जाते हैं। घर आकार भी लल्लौना खूब साईकिल चलाता है। लेकिन माँ बेटे की खुशियों की उम्र कुछ देर की ही है। रात होने पर सुमेरसिंह 'विकलांग उद्धार समिति' के अगले समारोह में जगदंबा बाबू द्वारा वितरण के लिए लल्लौना की गाड़ी इस आश्वासन के साथ ले जाते हैं कि उसे मजबूत वैसाखियाँ बनवा देंगे। यानी प्रचार के लिए गाड़ी दी जाती है। डाक्टरी जांच वगैरह का षड्यंत्र रचा जाता है और अखबार में फोटो आने के बाद अगले प्रत्याशी के साथ फोटो उतरवाने के लिए गाड़ी वापिस ले ली जाती है।

3) **शीर्षक :** 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं' शीर्षक से स्पष्ट है कि पार्टी के बड़े नेता भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री जगदंबा प्रसाद ने 'विकलांग सुधार समिति' का गठन किया है और गाँव के विकलांगों का उद्धार करने के लिए वे उपहार वितरण का एक समारोह करने जा रहे हैं । ठाकुर सुमेरसिंह जैसे क्षेत्रीय नेता इसी के प्रचार और जुगाड़ में जुटे हैं। जबकि सच्चाई यह है कि दोगले नेताओं के लिए जनता या विकलांग मात्र प्रचार का साधन हैं, उद्धार तो वे अपना कर रहे हैं।

4) **कथावस्तु / कथानक :**

आरंभ : कहानी का आरंभ परिचयात्मक है। हारे हुये, किन्तु सक्रिय राजनेता ठाकुर सुमेरसिंह के यहाँ सुक्खन भौजी बीस रुपये महीने पर बर्तन साफ करती है। उसका बेटा अपाहिज है और ठाकुर उसे डॉ को दिखाने और पार्टी के अनुदान से सहायता की बात करते हैं।

विकास : विकास में पता चलता है कि भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री जगदंबा प्रसाद ने 'विकलांग सुधार समिति' का गठन किया है। गाँव के अपाहिज लोगों की डाक्टरी जांच के बाद जगदंबा प्रसाद गाँव के दंगल वाले मैदान में एक समारोह कर अपाहिजों को सहायतार्थ उपहार वितरित करेंगे और सुक्खन भौजी के पंद्रह वर्षीय लल्लौने को भी पहियों वाली गाड़ी मिलेगी। समारोह होता है। दिवा स्वप्नों में डूबी सुक्खन भौजी के सपने साकार हो उठते हैं। लल्लौना को पहियों वाली गाड़ी मिलती है। अखबारों के लिए फोटो लिए जाते हैं। घर आकार भी लल्लौना खूब साईकल चलाता है।

चरमसीमा : रात होने पर सुमेरसिंह 'विकलांग उद्धार समिति' के अगले समारोह में जगदंबा बाबू द्वारा वितरण के लिए लल्लौना की गाड़ी इस आश्वासन के साथ ले जाते हैं कि उसे मजबूत वैसाखियाँ बनवा देंगे।

अंत : अंत राजनेताओं के दोगले चरित्र से होता है। प्रचार के लिए गाड़ी दी जाती है। डाक्टरी जांच वगैरह का षड्यंत्र रचा जाता है और अखबार में फोटो आने के बाद अगले प्रत्याशी के साथ फोटो उतरवाने के लिए गाड़ी वापिस ले ली जाती है।

5) **पात्र :** कहानी में मुख्य पात्र सुक्खन भौजी, उसका बेटा ललौना/बिसानूकुमार बारी, ठाकुर सुमेर सिंह और जगदंबा बाबू हैं। दीनापुर वाली मंझली, शेरगढ़ वाली सुभागी, द्दिदा, सुभाग सिंह, सुखदेव सिंह, नरेंद्र सिंह, भुवनेश्वर वाजपेयी, डॉ. बाबू, गयादीन आदि हैं। जबकि नायकत्व सुक्खन भौजी को दिया गया है।

6) **देशकाल वातावरण :** कहानी बैसवाड़ा गाँव का वातावरण, पर्दाप्रथा, पिछड़ेपन, दारिद्रय, शोषण के साथ–साथ नेताओं के आश्वासन, झूठ और भ्रष्ट मानसिकता का वातावरण लिए है।

7) **भाषा शैली :** भाषा में स्थानीय रंग एवं आंचलिकता का पुट है– जुबान न हुई खच्च–खच्च कटिया काटती हुई गँड़ासी हो गई। देहरी की परजा है सो मुंह सिये गर्दन झुकाये हाथ चलाती है। मुहावरे– बरैया–सी बर्राना। टेंट, सदावरत जैसे स्थानीय या तद्भव शब्द भी आए हैं।

8) **उद्देश्य :** कहानी वंचितों, उपेक्षितों के जीवन की त्रासदियाँ और उसपर रोटियाँ सेंकने वाले नेताओं के दोगले, उपयोगितावादी चरित्र को एक साथ लिए है। यहाँ प्रजातन्त्र की विसंगतियाँ और भ्रष्टाचार के

अनेक पक्ष एक साथ चित्रित हैं। मातृत्व की संवेदनाओं और नारी जीवन की दुखती रगों को छूने का प्रयास भी मिलता है।

8.6 अभियासार्थ प्रश्न

1) कहानी कला की दृष्टि से 'अकेली' कहानी की समीक्षा कीजिए।

....

....

....

....

2) कहानी कला की दृष्टि से 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी की समीक्षा कीजिए।

....

....

....

....

8.7 पठनीय पुस्तकें

सं॰ डॉ शहाबुदीन शेख एवं अन्य – गद्य फुलवारी

B.A. HINDI	UNIT-III	Lesson No. 9
COURSE CODE : HI-201	भाग (क)–कहानी	B.A. Sem-II

'अकेली एवं जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानियों का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

9.0 रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 'अकेली' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

9.3 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

9.4 कठिन शब्द

9.5 अभियासार्थ प्रश्न

9.6 पठनीय पुस्तकें

9.1 उद्देश्य

– इस पाठ के अध्ययनोपरांत आप कहानियों के पात्रों से परिचित हो सकेंगे।

– पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानियों में व्यक्त समस्याओं से अवगत हो सकेंगे।

9.2 'अकेली' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

पात्र परिचय

'अकेली' कहानी में मुख्यत : दो पात्र हैं– सोमा बुआ और उसके पति। यहाँ सोमा बुआ नायिका और उसके पति खलनायक के रूप में चित्रित हैं।

सोमा बुआ–

1) **माँ :** कहानी हरखू की मृत्यु के बीस साल बाद की है, पर माँ सोमा बुआ एक पल के लिए भी बेटे को नहीं भूल पाती। पड़ोसियों के यहाँ सुख–दुख के अवसरों पर काम करते लगता है मानों बेटे हरखू के यहाँ, उसके परिवार के लिए काम कर रही हो। पड़ोसिन राधा से कहती है– "मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल। आज हरखू नहीं है, इसीलिए दूसरों को देख–देख मन भरमाती रहती हूँ। "

2) **स्नेहिल एवं कर्मठ :** कहानी में हम देखते हैं कि बुआ अपने स्नेहिल व्यवहार और कर्मठता के कारण अपनी पहचान बना लेती है। पुत्र शोक में पति तीर्थवासी बन गए और बुआ जीवन के अकेलेपन और एकरसता से निजात पाने के लिए निस्वार्थ भाव से पास–पड़ोस को अपनापन देने और पाने लगी। कोई आमंत्रित करे या न करे, बुआ अपने व्यवहार और कार्यकुशलता से आयोजनों का भट्टी–भण्डार घर सब सम्भाल प्रशंसा, आभार और आत्मसंतुष्टि पा लिया करती है। किशोरीलाल के बेटे के मुंडन पर भट्टी–भण्डार घर सब ऐसे संभाल लेती है कि घर के लोग निश्चिंत हो जाते हैं। उन्हें कहना पड़ता है– "अम्मा ! तुम न होती तो आज भद्द उड़ जाती। अम्मा ! तुमने लाज रख ली।"

3) **मिलनसार :** बुआ सब का दिल जीतना जानती है। राधा के हाथ से पापड़ पकड़ सुखाने लगती है। आमंत्रण न मिलने पर भी बुरा नहीं मानती। अपने श्रम के बल पर सबका मन जीत लेती है। कहती है–" बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती ? ....मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम नहीं रखे तो दस बुलावे पर भी नहीं जाऊँ और प्रेम रखे तो बिन बुलावे भी सिर के बल जाऊँ।"

4) **पत्नी :** बुआ का पति जीवन यथार्थ से आँखें चुराने वाला और मात्र अपने लिए जीने वाला आत्मकेंद्रित व्यक्ति है। उसके जीवन में पत्नी के लिए कोई जगह नहीं। गृहस्वामी धर्म उसे स्मरण नहीं और गृहिणी धर्म में जरा–सी भी लापरवाही उसे बर्दाश्त नहीं। लेकिन बुआ कभी भी उसका तिरस्कार या अवहेलना नहीं करती। वह न परित्यक्ता है, न मर्दवाली। पति वर्ष में एक महीने के लिए आता है। पति का स्नेहहीन व्यवहार, रोक–टोक और अंकुश बुआ के जीवन की अबाध बहती धारा को कुंठित कर देता हैं, उसकी सारी सक्रियता को ताला लगा देता है। पति का नादिरशाही हुकुम है कि बिना बुलावे के बुआ किसी के घर मुंडन, छठी, शादी या गमी में नहीं जाएगी। बुआ चाहकर भी उसकी अवज्ञा नहीं करती। मन मार लेती है, आँसू बहा लेती है, उदास हो लेती है, पर पति के मान को आंच नहीं आने देती।

5) **अकेली :** वह बेटे की मृत्यु और पति के संन्यास धारण करने के बाद एकदम अकेली हो जाती है और वर्ष में एक महीने के लिए उसके पास आने वाला पति उसे और भी अकेला कर जाया करता है। एक अकेलापन उसे बेटे की मृत्यु ने दिया है, दूसरा पति के संन्यास ने और तीसरा सामाजिक जुड़ाव से

उसका कटाव करने वाले पति के नादिरशाही हुकुम ने। यानी उसके हिस्से में दैवी, पारिवारिक, सामाजिक– सब प्रकार का अकेलापन आया है।

सारे दुखों, उपेक्षाओं, तिरस्कार के बावजूद बुआ सामान्य स्त्री है।

उद्देश्य एवं समस्या

1) **दाम्पत्य की अवधारणा का अतिक्रमण :** यह अर्धनारीश्वर की अवधारणा वाला देश है। स्त्री–पुरुष एक दूसरे के पूरक होते हैं। लेकिन कहानी का पति इस तथ्य को न ही महसूस कर सकता है और न ही समझ सकता है। वह पुत्र शोक के बाद संन्यास ले अपने दुख को महिमा–मंडित कर लेता है। जबकि पत्नी के दुख के प्रति उसके मन में मात्र उपेक्षा और तिरस्कार ही है। बुआ मर्दवाली होकर भी बेमर्द है और पति के हर साल आने के बावजूद परित्यक्ता है। कहानी 'पति–परमेश्वर' के बड़े झूठ को चुन्नौती देती है।

2) **सम्बन्धों का अकेलापन :** बुआ के पास परिवार था। पति और पुत्र दोनों थे। बीस साल पहले सब ध्वस्त हो गया। सोमा बुआ का जवान बेटा जाता रहा। पुत्र शोक में पति तीर्थवासी बन गए और पास–पड़ोस के सुख–दुख का हिस्सा बनकर जीवन यापन करने लगी।

3) **समाज से कटाव :** बुआ का पति वर्ष में एक महीने के लिए आता है। पति का स्नेहहीन व्यवहार, रोक–टोक और अंकुश बुआ के जीवन की अबाध बहती धारा को कुंठित कर देता है। पति का नादिरशाही हुकुम है कि बिना बुलावे के बुआ किसी के घर मुंडन, छठी, शादी या गमी में नहीं जाएगी। बुआ वृद्धा है, परित्यक्ता है–(किशोरीलाल या) देवर के ससुराल वालों का उसे आमन्त्रित न करना भी उसकी वेदना को बढ़ा देता है। यानी समाज से कटाव की स्थिति दो स्तरों पर चित्रित है। एक तो पति उस पर पाबंधियाँ लगाता है और दूसरा समाज के लोग उसे भूलने लगे हैं, अवांछित मानने लगे हैं।

4) **अकेलेपन से मुक्ति के उपाय :** पुत्र की मृत्यु और पति के सन्यासी बन जाने के बाद बुआ जीवन के अकेलेपन और एकरसता से निजात पाने के लिए निस्वार्थ भाव से पास–पड़ोस को अपनापन देने और पाने लगती है। कोई आमंत्रित करे या न करे, बुआ अपने व्यवहार और कार्यकुशलता से आयोजनों का भट्ठी–भण्डार घर सब सम्भाल प्रशंसा, आभार और आत्मसंतुष्टि पा लिया करती है। बुआ सब का दिल जीतना जानती है। आमंत्रण न मिलने पर भी बुरा नहीं मानती। अपने श्रम के बल पर सबका मन जीत लेती है। कहती है–" बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती ? ...मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम नहीं रखे तो दस बुलावे पर भी नहीं जाऊँ और प्रेम रखे तो बिन बुलावे भी सिर के बल जाऊँ।"

9.3 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी का पात्र–परिचय, उद्देश्य एवं समस्या

पात्र परिचय

सुक्खन भौजी

1) **सामान्य परिचय :** हारे हुये, किन्तु सक्रिय राजनेता ठाकुर सुमेरसिंह के यहाँ सुक्खन भौजी यानी सुक्खन की बहू बीस रुपये महीने पर बर्तन साफ करती है। देहरी की परजा है सो मुंह सिये गर्दन झुकाये हाथ चलाती है। वह विधवा है। उसका बेटा ललौना/बिसानूकुमार बारी अपाहिज/पोलियो पीड़ित है और ठाकुर उसे डॉ को दिखाने और पार्टी के अनुदान से सहायता की बात करते हैं और वह इस अनुग्रह पर न्योछावर होने लगती है। बहुओं द्वारा अकसर मिलने वाली प्रताड़ना का सारा मलाल धुल जाता है।

2) **प्रताड़ित, शोषित :** सुक्खन भौजी जिस घर में काम करती है, जिस घर को वह वट वृक्ष मान उसकी छांव में जीवन बिताना चाहती है, जिस पर उसका विश्वास और आस्था टिकी है, उसी का दोगलापन उसे अथाह पीड़ा में छोड़ देता है। उन्हें न उससे कोई स्नेह है, न उसके बेटे की कोई चिंता। यह लोग तो उनकी राजगद्दी के लिए शतरंज का मोहरा भर हैं।

3) **मातृत्व की संवेदनाएं :** सुक्खन भौजी माँ है। उसका पंद्रह वर्षीय बेटा ललौना/बिसनूकुमार बारी अपाहिज/पोलियो पीड़ित है। माँ की एक ही इच्छा है कि वह अपने पाँवों पर चलने लगे। कीकर की टहनियों को वैसाखियों की तरह पकड़ वह स्कूल जाया करता है। उसकी जख्मी काँखों पर वह हल्दी गरम करके लगाती है। बेटे के घाव उसकी आँखों में जब– तब पानी ला देते हैं। गरीबी इतनी है कि वह इतने से फटे–पुराने कपड़े का जुगाड़ भी नहीं कर पाती कि कीकर की टहनी के ऊपरी हिस्से पर बांध दे कि घाव न हों। ठाकुर उसे डॉ को दिखाने और पार्टी के अनुदान से सहायता की बात करते हैं और वह इस अनुग्रह पर न्योछावर होने लगती है। समारोह वाले दिन उसे उबटन मल–मलकर नहलाती है। सारी तंगी के बावजूद मारकीन की नई कमीज और खाकी निक्कर लेकर देती है। उसका हर स्वप्न बेटे से जुड़ा है। वह उसका राजकुमार है।

4) **विसंगति :** सुक्खन भौजी के पंद्रह वर्षीय अपाहिज लल्लौने को भूतपूर्व मंत्री जी पहियों वाली गाड़ी देते है। अखबारों के लिए फोटो लिए जाते हैं। घर आकार भी लल्लौना खूब साईकिल चलाता है। लेकिन माँ बेटे की खुशियों की उम्र कुछ देर की ही है। रात होने पर सुमेरसिंह 'विकलांग उद्धार समिति' के अगले समारोह में जगदंबा बाबू द्वारा वितरण के लिए लल्लौना की गाड़ी इस आश्वासन के साथ ले जाते हैं कि उसे मजबूत वैसाखियाँ बनवा देंगे। यानी प्रचार के लिए गाड़ी दी जाती है। डाक्टरी जांच वगैरह का षड्यंत्र रचा जाता है और अखबार में फोटो आने के बाद अगले प्रत्याशी के साथ फोटो उतरवाने

के लिए गाड़ी वापिस ले ली जाती है। अब सुक्खन भौजी के पास अखबार की एक कतरन बची है, जिसमें बेटा मंत्री जी से पहियों वाली गाड़ी ले रहा है।

उद्देश्य एवं समस्या :

चित्रा मुद्‌गल की कहानियों में जीवन की जटिल स्थितियों को देखने की परिपक्व और सूक्ष्म दृष्टि है ।

1) **विकलांगों शोषितों का चित्रण :** यह वंचितों, शोषितों के पक्षाधार की कहानी है। गाँव के लोग जानते ही नहीं कि बच्चों को स्वस्थ जीवन देने के लिए टीके लगवाने कितने जरूरी हैं। पोलियो का टीका न लगवाने के कारण बच्चे अपंगता के इस शाप को ढोने के लिए विवश हैं। सुक्खन भाभी जिस घर में काम करती है, जिस घर को वह वट वृक्ष मान उसकी छांव में जीवन बिताना चाहती है, जिस पर उसका विश्वास और आस्था टिकी है, उसी का दोगलापन उसे अथाह पीड़ा में छोड़ देता है। उन्हें न उससे कोई स्नेह है, न उसके बेटे की कोई चिंता। यह लोग तो उनकी राजगद्दी के लिए शतरंज का मोहरा भर हैं।

2) **भ्रष्ट राजनेता :** भ्रष्ट राजनेताओं का कड़वा सच अनेक प्रकार से उद्‌घाटित किया गया है। आज ठाकुर सुमेर सिंह के पास न तालुकेदारी बची है, न वह शान शौकत। गाँव प्रधान का चुनाव पंडित भुवनेश्वर प्रसाद से हार जाने के बाद वे युवा काँग्रेस के पिछड़े वर्ग के प्रांतीय सचिव बन जाते हैं। सुमेरसिंह या भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री जगदम्बा प्रसाद राजनेताओं के दोगले चरित्र का प्रतिनिधित्व करते है। प्रचार के लिए विकलांग बच्चे को गाड़ी दी जाती है। डाक्टरी जांच वगैरह का षड्‌यंत्र रचा जाता है और अखबार में फोटो आने के बाद अगले प्रत्याशी के साथ फोटो उतरवाने के लिए गाड़ी वापिस ले ली जाती है।

सुमेर सिंह के भाई सुभग सिंह और सुखदेव सिंह राजधानी में कारतूसों का कारखाना चला रहे हैं। नेताओं की जनसेवा मित्रों, सगे संबंधियों को ठेका दिलवाने, भट्ठे खुलवाने, परमिट जारी करवाने तक सीमित है। जनता पार्टी के नेता गयादीन चुनाव के समय लाठी वल्लभ के बूते वोटों के बक्से बदलवा देते हैं। युवतियों के साथ केलि क्रीडा करते हैं। किसी को भी फर्जी सेंध के मामले में फंसाकर जेल भिजवा सकते हैं। विधान सभा में उपस्थित होने की तो उन्हें फुर्सत ही कहाँ है ? गयादीन तीन साल में तीन से अधिक बार विधानसभा में उपस्थित नहीं होता।

3) **विसंगति :** यहाँ प्रजातन्त्र की विसंगतियां ही नहीं, परिवर्तन की नींव को स्वर, प्रतिरोध की सच्ची आवाज भी मिलती है। कहानीकार भ्रष्ट तंत्र के अनेकानेक कच्चे चिट्ठे खोल समाज को, पाठक को संदेश भी दे रही हैं।

4) **नारी विमर्श :** कहानी उस गाँव की है, जहाँ हर वर्ग की स्त्रियाँ पर्दाधारी हैं। सुमेरसिंह अपने ही घर में खँखार कर प्रवेश करते हैं सुकखन भौजी डॉ. से बात करने में भी सकुचाती है। सुभग सिंह ने शेरावाली के होते हुये शहर में एक और शादी की हुई है। जिससे तीन बच्चे भी हैं। विधवा स्त्री के दुख, परित्यक्ता की वेदना और स्त्री को वस्तु मानने से सामंतीय स्वर भी चित्रित हैं।

5) **मातृत्व की संवेदनाएं :** सुक्खन भौजी विधवा है। उसका पंद्रह वर्षीय बेटा ललौना/बिसानूकुमार बारी अपाहिज/पोलियो पीड़ित है। माँ की एक ही इच्छा है कि वह अपने पाँवों पर चलने लगे। कीकर की टहनियों को वैसाखियों की तरह पकड़ वह स्कूल जाया करता है। उसकी जख्मी काँखों पर वह हल्दी गरम करके लगाती है। बेटे के घाव उसकी आँखों में जब– तब पानी ला देते हैं। गरीबी इतनी है कि वह इतने से फटे–पुराने कपड़े का जुगाड़ भी नहीं कर पाती कि कीकर के ऊपरी तरफ बांध दे कि घाव न हों। ठाकुर उसे डॉ को दिखाने और पार्टी के अनुदान से सहायता की बात करते हैं और वह इस अनुग्रह पर न्योछावर होने लगती है। समारोह वाले दिन उसे उबटन मल–मलकर नहलाती है। सारी तंगी के बावजूद मारकीन की नई कमीज और खाकी निक्कर लेकर देती है। उसका हर स्वप्न बेटे से जुड़ा है। वह उसका राजकुमार है

9.4 कठिन शब्द

पुलकित, आश्वासन, परित्यक्ता, व्यवधान, अत्यन्त, सर्वविदित, सचिव, परीक्षण, विकलांग, उपक्रम

9.5 अभियासार्थ प्रश्न

1) 'सोमा बुआ' का चरित्र–चित्रण कीजिये।

....

....

....

....

2) 'अकेली' कहानी में आई समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

....

....

3) 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी में आई समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

4) 'सुकखन भौजी' का चरित्र–चित्रण कीजिये।

....

....

....

....

9.6 पठनीय पुस्तकें

सं. डॉ शहाबुदीन शेख एवं अन्य – गद्य फुलवारी

B.A. HINDI | **UNIT-IV** | **Lesson No. 10**

COURSE CODE : HI-201 | Hkkx ¼[k½&O;kdj.k | **B.A. Sem-II**

lekl ¼**Compound**½

10.0 रूपरेखा

10.1 पाठ का उद्देश्य

10..2 समास अर्थ एवं परिभाषा

10.3 समास के भेद

- 10.3.1 अव्ययीभाव समास
- 10.3.2 तत्पुरुष समास
- 10.3.3 कर्मधारय समास
- 10.3.4 द्विगु समास
- 10.3.5 द्वव्द्व समास
- 10.3.6. बहुब्रीहि समास

10.4 समास भ्रम

10.5 कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अंतर

10.6 द्विगु और बहुब्रीहि में अन्तर

10.7 द्विगु एवं कर्मधारय में अन्तर

10.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

10.9 निम्नलिखित शब्दों के समास बताइए

10.10 संदर्भित पुस्तकें

10.1 पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत

- विद्यार्थी व्याकरण के अंतर्गत समास के अर्थ को समझ सकेंगे।
- समास के भेद–प्रभेदों को जान सकेंगे।
- समास ज्ञान के द्वारा वाक्य के अर्थ को समझने में सक्षम होंगे।

10.1.2 समास अर्थ एवं परिभाषा

'सम्' उपसर्गक 'अस्' धातु (संक्षेप करना) से समास शब्द निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है समाहार या मिलाप। परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक पदों के मेल से बने एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास अथवा समस्तपद कहते हैं। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना ही 'समास' का उद्देश्य रहता है। आचार्य किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार, "जब अनेक शब्द मिलकर एक पद बन जाते हैं तो वह समास कहलाता है।"–

जैसे –

घोड़ों की दौड़ – घुडदौड़

रसोई के लिए घर – रसोईघर

देश का भक्त – देशभक्त

सेना का नायक – सेनानायक

सामासिक शब्द या समस्तपद :

जो शब्द समास के नियमों से बनता है वह सामासिक शब्द या समस्तपद कहलाता है। समस्त पद का पहला पद 'पूर्वपद' तथा दूसरा पद 'उत्तरपद' कहलाता है।

10.3 समास के भेद

समास के छः भेद हैं – अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्विगु, द्वन्द्व, बहुब्रीहि और कर्मधारय

10.3.1 अव्ययीभाव समास :

वह समास जिसका पहला पद अव्यय हो और उसके संयोग से समस्त पद भी अव्यय बन जाए, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। (अव्यय से अभिप्राय वे शब्द जिन पर लिंग, कारक, काल आदि शब्दों का कोई प्रभाव न हो और जो अपरिवर्तित रहें) इसमें पूर्वपद प्रधान होता है।

अव्ययीभाव समास के पहले पद में आ, अन, प्रति, यथा, भर, नि, बे, हर आदि आते हैं जैसे–

आ – आजन्म – जन्म से लेकर, आमरण, आजीवन– जीवन भर,

यथा– यथामति– मति के अनुसार, यथासंख्या, यथाशक्ति– शक्ति के अनुसार, यथासमस– यथारुचि– रुचि के अनुसार, यथानम – नाम के अनुसार,

प्रति– प्रतिवर्ष– प्रत्येक वर्ष, प्रतिपल– पल–पल, प्रत्येक– हर एक, एकाएक– एक एक, धीरे–धीरे, बार–बार, प्रति सप्ताह– प्रत्येक सप्ताह, प्रत्यक्ष– आँखों के सामने, प्रतिमास– हर मास,

नि – निस्संदेह– संदेह रहित, निडर – डर रहित,

बे – बेखटके– बिना खटके

अन – अनजान – बिना जाने, भर पेट

धड़ाधड़ – धड़धड़, घर–घर, पल–पल

10.3.2 तत्पुरुष समास :

जिस समास के पदों में अर्थ की दृष्टि से पूर्वपद गौण (अप्रधान) तथा उत्तरपद प्रधान हो उसे 'तत्पुरुष समास' कहते हैं।

धर्मग्रंथ – धर्म का ग्रंथ

राजकुमार – राजा का कुमार

सत्याग्रह – सत्य के लिए आग्रह

विभक्तियों अथवा परसर्गों के लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के छह भेद हैं–

जैसे –

1. **कर्म तत्पुरुष :** इसमें कर्मकारक के परसर्ग 'को' का लोप हो जाता है जैसे–

ग्रामगत – ग्राम को गया

स्वर्गप्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त

ग्रंथकार – ग्रंथ को लिखने वाला

गँठकट – गाँठ को काटने वाले

चिड़ीमार – चिड़ियों को मारने वाला

2. **करण तत्पुरुष :** इसमें करण कारक के विभक्ति चिह्न 'से' 'द्वारा' का लोप होता है। जैसे –

हस्तलिखित – हाथ से लिखित

धनहीन – धन से हीन

चिंतातुर – चिंता से आतुर

गुणयुक्त – गुण से युक्त

तुलसीकृत – तुलसी द्वारा कृत

3. **सम्प्रदान तत्पुरुष :** इसमें सम्प्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप हो जाता है जैसे –

रसोईघर – रसोई के लिए घर

गुरुदक्षिणा – गुरु के लिए दक्षिणा

राहखर्च – राह के लिए खर्च

टिकटघर – टिकट के लिए घर

आरामकुर्सी – आराम के लिए कुर्सी

4. **अपादान तत्पुरुष :** इसमें अपादान कारक के विभक्ति चिह्न 'से' का अलग होने के अर्थ में लोप होता है। यथा –

पथभ्रष्ट – पथ से भ्रष्ट

विद्याहीन – विद्या से हीन

धनहीन – धन से हीन

पदच्युत – पद से च्युत

नकटा – नाक से कटा

5. **संबंध तत्पुरुष :** संबंध तत्पुरुष में संबंध कारक के विभक्ति चिह्न 'का' 'के' 'की' का लोप हो जाता है यथा –

गंगाजल – गंगा का जल

घुड़दौड़ – घोड़ों की दौड़

देशवासी – देश के वासी

पनचक्की – पानी की चक्की

रनिवास – रानी का आवास

6. **अधिकरण तत्पुरुष :** इसमें अधिकरण कारक के विभक्ति चिह्न 'में' 'पर' का लोप हो जाता है जैसे–

व्याकरणपटु – व्याकरण में पटु (चतुर)

शरणागत – शरण में आगत (आया हुआ)

घुड़सवार – घोड़े पर सवार

आपबीती – आप पर बीती

जलमग्न – जल में मग्न

गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश

तत्पुरुष समास के उपभेद

1. **अलुक तत्पुरुष :** अलुक का अर्थ हैं 'लोप नहीं' अतः अलुक तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जहाँ विभक्ति चिह्न लुप्त न होकर अपने मूल रूप में विद्यमान रहता है। जैसे–

मनसिज (कामदेव) मनसि+ज

मृत्युंजय (शिव) मुत्युं+जय

खेचर (पक्षी) खे+चर

युधिष्ठिर (नाम विशेष) युधि+स्थिर

2. **लुप्तपद / मध्यपद लोपी तत्पपुरुष :** जहाँ समास के दो शब्दों के मध्य के पद लुप्त होते हैं वहां मध्यपद लोपी तत्पुरुष समास होता है जैसे –

बैलगाड़ी – बैलों से चलने वाली गाड़ी

वनमानुस – वन में रहने वाला मानुष (मनुष्य)

पनचक्की – पानी से चलने वाली गाड़ी

घोड़ागाड़ी – घोड़ों से चलने वाली गाड़ी

अधिकारपत्र – अधिकार देने का पत्र

3. **नञ् तत्पुरुष :** जिस समस्तपद में पूर्वपद निषेधावाचक होता है, उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा –

असभ्य – न सभ्य

असंभव – न संभव

अनंत – न अंत

अनश्वर – न नश्वर

अस्थिर – न स्थिर

1.1.3.3 कर्मधारय समास :

कर्मधारय समास में पहला पद विशेषण होता है और उत्तर की प्रधानता रहती है। इस समास में विशेषण–विशेष्य और उपमेय–उपमान से मिलकर बनते हैं। अर्थात् जिन समस्त पदों में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य अथवा एक पद उपमान तथा दूसरा उपमेय होता है वहाँ कर्मधारय समास बनता है। जैसे–

महादेव – महान है जो देव

पीताम्बर – पीत है जो अम्बर

विशेष्य–विशेषण व उपमेय–उपमान के आधार पर इसके तीन भेद हो सकते हैं जिनके उदाहरण निम्नलिखित हैं–

(क) विशेषण–विशेष्य कर्मधारय

(ख) उपमान–उपमेय कर्मधारय

(ग) उपमेय–उपमान कर्मधारय

(क) विशेषण–विशेष्य कर्मधारय

समस्तपद	**विशेषण**	**विशेष्य**	**विग्रह**
महादेव	महा	देव	महान् है जो देव
नीलगाय	नील	गाय	नीली है जो गाय
लालकिला	लाल	किला	लाल है जो किला
पीताम्बर	पीत	अम्बर	पीत है जो अम्बर

(ख) उपमान–उपमेय कर्मधारय

समस्तपद	**उपमान**	**उपमेय**	**विग्रह**
कमल नयन	कमल	नयन	कमल के समान नयन
चन्द्रमुख	चन्द्र	मुख	चन्द्र के समान मुख
वज्रकाया	वज्र	काया	वज्र के समान काया
घनश्याम	घन	श्याम	घन जैसा श्याम

(ग) उपमेय–उपमान कर्मधारय

समस्तपद	उपमेय	उपमान	विग्रह
देहलता	देह	लता	देह रूपी लता
मुखचन्द्र	मुख	चन्द्र	मुख रूपी चन्द्र
पुत्ररत्न	पुत्र	रत्न	पुत्र रूपी रत्न

10.3.4 द्विगु समास

जिस समास के समस्तपद में पहला पद संख्या वाचक विशेषण हो अथवा समूह की सूचना देता हो, द्विगु समास कहलाता है जैसे–

त्रिकाल – तीनों काल

तिमाही – तीन माह का

चौपाया – चार पैर वाला

चवन्नी – चार आना

पंचवर्षीय – पाँच वर्षों की

छमाही – छह माह की

सतसई – सात सौ दोहों वाली

अष्टाध्यायी – आठ/अष्ट अध्याय वाली

द्विगु समास के दो भेद हैं–

समाहार/समूहवाची द्विगु समास

चौराहा – चार राहों (रास्तों) का समूह

त्रिलोकी – तीन लोकों का समूह

बारहमासा – बारह महीनों का समूह

दोपहर – दो पहरों का समूह

पंसेरी – पाँच सेरों का समूह

पंचवटी – पाँच वटों का समाहार

उत्तरपद द्विगु समास

दुमाता – दो माँ का

दुसूती – दो सूतों के मेल

पंचप्रमाण – पाँच प्रमाण

पंचहत्थड– पाँच हत्थड़

10.3.5 द्वन्द्व समास :

जिस समस्त पद में दोनों पद पूर्व पद तथा उत्तरपद प्रधान होते हैं द्वन्द्व समास कहलाता है। इसमें दो संज्ञाए इस प्रकार संयुक्त रहती हैं कि उनके बीच में समुच्चय बोधक 'और', 'तथा' 'एवं' आदि का लोप रहता है जैसे–

माता–पिता – माता और पिता

दाल–रोटी – दाल और रोटी

सुख–दुख – सुख तथा दुख

गंगा–यमुना – गंगा और यमुना

नर–नारी – नर एवं नारी

10.3.6. बहुब्रीहि समास

जिस समास में समस्त पदों में कोई भी प्रधान न होकर कोई तीसरा ही पद प्रधान हो (अन्य पदार्थ प्रधानों बहुब्रीहि) वहाँ बहुब्रीहि समास होता है। जैसे –

चन्द्रमौलि – चन्द्र है सिर पर जिसके अर्थात–शिव

पीताम्बर – पीत हैं वस्त्र जिसके अर्थात् – कृष्ण

दशानन – दस हैं आनन जिसके अर्थात् – रावण

नीलकंठ – नीला हैं कंठ जिसका अर्थात् – शिव

त्रिनेत्र – तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् – शिव

10.4 समास भ्रम

कई बार एक ही समस्त पद एक से अधिक समास उदाहरण बनता है परंतु समास विग्रह के आधार पर उस भ्रम को दूर किया जा सकता है जैसे –

चतुर्भुज – चार भुजाओं का समूह – द्विगु

चार हैं भुजाएँ जिसकी – विष्णु– बहुब्रीहि

अपुत्र – जो पुत्र न हो – नञ् तत्पुरुष

नहीं है पुत्र जिसका बहुब्रीहि

10.5 कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय	**cgqchfg**
इसमें समस्त पद का एक पद दूसरे पद का विशेषण या उपमान होता हैं।	इसमें समस्त पद का एक पद दूसरे का विशेषण या उपमान न होकर तीसरी संज्ञा की ही विशेषता प्रकट करता है।
कर्मधारय शब्दार्थ प्रधान रहता है	बहुब्रीहि भावार्थ प्रधान होता है
उदाहरण पीताम्बर – पीला अम्बर (वस्त्र)	उदाहरण पीताम्बर – पीत है अम्बर जिसका–पीताम्बर

10.6 द्विगु और बहुब्रीहि में अन्तर :

द्विगु और बहुब्रीहि दोनों समासों में संख्यावाची विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं फिर भी दोनों में अन्तर है –

द्विगु	cgchfg
इसमें केवल संख्यावाची शब्द ही विशेषण रूप से प्रयुक्त होते हैं तथा पहला पद संख्यावाची दूसरे का विशेषण होता है। चौराहा–चार राहों का समूह	इसमें संख्यावाची शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्द भी विशेषण रुप में आते हैं और पहला पद दूसरे का विशेषण न होकर दोनों शब्द किसी तीसरी संज्ञा की विशेषता प्रकट करते हैं। नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका–शिव

10.7 द्विगु एवं कर्मधारय में अन्तर :

दोनों समासों में विशेषण–विशेष्य का भाव पाया जाता है। फिर भी दोनों के विग्रह द्वारा अन्तर स्पष्ट किया जा सकता है। जैसे –

द्विगु	कर्मधारय
द्विगु समास का पहला पद सदा ही संख्यावाची होता है और सदैव ही दूसरे शब्द का विशेषण होता है। जैसे– नवरत्न – नौ रत्नों का समूह	कर्मधारय में यह आवश्यक नहीं कि पहला पद संख्यावाली हो तथा कभी पहला शब्द दूसरे का और कभी दूसरा शब्द पहले का विशेषण होता है। जैसे –चरणकमल – कमल रूपी चरण, विद्याधन – विद्या रूपी धन

10.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 समास किसे कहते हैं ? समास के कितने भेद हैं?

....

....

....

....

2 तत्पुरुष समास के भेदों–प्रभेदों पर प्रकाश डालिए?

....

....

....

....

3 कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अंतर स्पष्ट करें?

....

....

....

....

4 समास भ्रम से क्या अभिप्राय हैं ?

....

....

....

....

5 समस्त पद किसे कहते हैं?

....

....

....

....

10.9 निम्नलिखित शब्दों के समास बताइए

सत्याग्रह, रसोईघर, पथभ्रष्ट, अपुत्र, चौराहा, आपबीती, घुड़दौड़, नीलकंठ, मनसिज

10.10 संदर्भित पुस्तकें

1 कामता प्रसाद गुरु–हिन्दी व्याकरण, प्रयाग : इंडियन प्रेस, लिमिटेड, 1984.

2 कैलाश चन्द्र भाटिया–व्यावहारिक हिन्दी, दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन, 1989.

3 केशवदत्त रूबाली–मानक हिंदी ज्ञान, अल्मोड़ा : श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, 1992.

कारक (Case)

11.0 रूपरेखा

11.1 पाठ का उद्देश्य

11..2 कारक : अर्थ और परिभाषा

11.3 कारक के भेद

- 11.3.1 कर्ता कारक (Doer Case)
- 11.3.2 कर्म कारक (Accurative Case)
- 11.3.3 करण कारक (Instrument Case)
- 11.3.4 सम्प्रदान कारक (Dative Case)
- 11.3.5 अपादान कारक (Ablative Case)
- 11.3.6 सम्बन्ध कारक (Gentive Case)
- 11.3.7 अधिकरण कारक (Locative Case)
- 11.3.8 सम्बोधन कारक (Vocative Case)

11.4 भ्यासार्थ प्रश्न

11..5 निम्नलिखित वाक्यों में से कारक छाँट कर अपने निर्णय की पुष्टि करें –

11..6 संदर्भित पुस्तकें

11.1 पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत

- विद्यार्थी व्याकरण के अंतर्गत कारक रचना को समझ सकेंगे।
- कारक ज्ञान के माध्यम से वाक्य संरचना का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

11.2 कारक : अर्थ और परिभाषा

कारक का अर्थ – करने वाला। संस्कृत व्याकरण में कारक को परिभाषित करते हुए कहा गया है – 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वं'– अर्थात वाक्यगत क्रिया से जिसका सीधा संबंध हो वही कारक है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों का वाक्य के अन्य शब्दों विशेषतः क्रिया से संबंध बताने वाले शब्द रूप को कारक कहते हैं। अर्थात् जो भी क्रिया को करने में भूमिका निभाता है, कारक कहलाता है जैसे–

सूरज किताब पढ़ता है।

वह रोज सुबह यमुना किनारे जाता है।

इन वाक्यों में 'पढ़ता है' और 'जाता है' शब्द रूपों का संबंध किताब तथा यमुना से है। वाक्य के साथ जुड़ने वाले शब्द चिह्नों को 'विभक्ति' कहते हैं। संज्ञा, सर्वमान आदि शब्दों के बाद जुड़ने के कारण विभक्तियों को 'परसर्ग' भी कहते हैं।

11.3 कारक के भेद

हिन्दी में कारक के मुख्यतः आठ भेद होते हैं– कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, सम्बोधन

11.3.1 कर्ता कारक (Doer Case)

वाक्य में जो कार्य को करता है, वह कर्ता कहलाता है। कर्ता वाक्य का वह रूप होता है जिससे कार्य करने वाले का ज्ञान होता है। कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न 'ने' होता है परन्तु यह सर्वदा नहीं जुड़ता। इसका प्रयोग केवल सकर्मक क्रियाओं के साथ केवल भूतकाल में होता है। जैसे–

राधा भोजन बनाती है।

कमला ने गीत गाया।

राम ने पत्र लिखा।

इस प्रकार कर्ता कारक के दो भेद हैः

प्रधान कर्ता कारक

जिस कर्ता में क्रिया लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है उसे प्रधान कर्ता कारक कहते हैं। जैसे – राम भोजन खाता है।

अप्रधान कर्ता कारक

जिस कर्ता में क्रिया लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न हो, उसे अप्रधान कर्ता कारक कहते हैं। जैसे – राम ने रोटी खाई।

11.3.2 कर्म कारक (Accurative Case)

संज्ञा या सर्वमान के जिस रूप पर क्रिया का फल पड़ता या समाप्त होता है उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'को' है। यह चिह्न भी बहुत से स्थानों पर नहीं लगता परन्तु कभी–कभी 'को' के स्थान पर 'ए' प्रत्यय भी जुड़ जाता है। जैसे –

राम ने रावण को मारा।

कृष्णा गीत गाती है।

मुझे तुम्हारी तलाश थी।

पहले वाक्य में मारने की क्रिया का फल रावण पर पड़ा है अतः रावण कर्म कारक है जिसके साथ विभक्ति 'को' लगी है। दूसरे वाक्य में गाने की क्रिया का फल गीत पर पड़ा अतः गीत कर्म है। इसमें कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह 'को' नहीं लगा। जबकि मुझको तलाश थी में मुझ में 'ए' चिन्ह प्रयोग हुआ है। कर्म निर्जीव हो, तो भी साधारणतया 'को' का प्रयोग नहीं होता जैसे –

वह पत्थर तोड़ती है।

कुछ पुस्तकें ले आओ।

11.3.3 करण कारक (Instrument Case)

संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों के जिस रूप से क्रिया के करने के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिन्ह् 'से' 'द्वारा' होता है जैसे –

राम ने बाण से रावण को मारा।

चाकू से फल काटो।

बालक गेंद से खेल रहे हैं।

उसे तार द्वारा सूचित कर दीजिए।

कभी 'साथ' परसर्ग भी प्रयुक्त होता है जैसे –

उसके साथ भेज दिया करो।

यदि करण कारक में संज्ञा आदि बहुवचन में हो तो यदा कदा 'से' परसर्ग का प्रयोग नहीं भी होता जैसे –

हजारों लोग भूखों मर गए। (भूखों – भूख से)

अब आप खेल का आँखों देखा हाल सुनिए। (आँखों – आँखों से)

कृष्णा इसे अपने हाथों करना चाहती है। (हाथों – हाथ से)

11.3.4 सम्प्रदान कारक (Dative Case)

सम्प्रदान का अर्थ है – देना। संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिसे कुछ दिया जाए या जिसके लिए कर्ता द्वारा कुछ किया जाए सम्प्रदान कारक कहलाता है। 'को' तथा 'के लिए' इसके विभक्ति चिन्ह हैं। जैसे –

मैं माँ के लिए चाय बना रही हूँ।

राजा ने ब्राह्मण को धन दिया।

स्वास्थ्य के लिए सूर्य को नमस्कार करो।

इन वाक्यों में 'माँ के लिए' ब्राह्मण को, स्वास्थ्य के लिए सम्प्रदान अवस्था में हैं। यद्यपि सम्प्रदान की विभक्ति 'को' या 'के लिए' है तथापि सम्प्रदान के साथ कुछ और भी विभक्ति चिन्ह लगते हैं जैसे –

नरेश के वास्ते कुछ करो।

मैं यह सब तुम्हारे विवाह के निमित्त कर रहा हूँ।

यह पुस्तक मुझे दे दो।

सम्प्रदान और कर्म कारक में अन्तर

सम्प्रदान और कर्म कारक दोनों में 'को' विभक्ति चिह्न प्रयोग होता हैं पर सम्प्रदान कारक की विशेषता यह है कि इसमें 'दान' या 'उपकार' का भाव होता है। जब 'को' विभक्ति किसी को कुछ देने का भाव प्रकट करें तो सम्प्रदान कारक है अन्यथा 'को' कर्म कारक की विभक्ति होगी। जैसे –

भिखारी को आटा दे दो।

भिखारी को भगा दो।

इस प्रकार पहले वाक्य में भिखारी को कुछ देने का भाव निहित है तो सम्प्रदान कारक है जबकि दूसरे वाक्य में भिखारी को कुछ भी देने का भाव नहीं है अतः कर्म कारक है।

11.3.5 अपादान कारक (Ablative Case)

संज्ञा सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने, डरने, सीखने, लजाने, तुलना करने, दूरी, आरंभ, बचाने, माँगने आदि भावों का ज्ञान होता है। उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे –

गंगा हिमालय से निकलती है।

छात्र अध्यापक से पढ़ते हैं।

मेरा घर नगर से 10 किलोमीटर दूर है

मोहन ने पूरे साहस से बालक को डूबने से बचाया।

भिखारी ने राजा से भिक्षा मांगी।

राजन शेर से डरता है।

गीता सीता से चतुर है।

राधिका कल से दफतर जाएगी।

बालक मेहमान से शरमाता है।

करण तथा अपादान में अन्तर

करण तथा अपादान दोनों कारकों में विभक्ति चिह्न 'से' प्रयुक्त होने पर भी दोनों में अन्तर है। करण

कारक की विशेषता यह है कि इसमें 'से' चिह्न का प्रयोग क्रिया के साधन/सहायता रूप में होता है जबकि अपादान में 'से' का प्रयोग अलग होने के रूप में होता है क्रिया के साधन रूप में नहीं। जैसे –

बच्चा चम्मच से खाना खाता है। (करण)

बच्चा छत से गिर पड़ा। (अपादान)

11.3.6 सम्बन्ध कारक (Gentive Case)

संज्ञा सर्वनाम के जिस रूप से किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध प्रकट हो उसे 'संबंध' कारक कहते हैं। संबंध कारक का विभक्ति चिह्न 'का' है जिसका रूप वस्तु के लिंग और वचन अनुसार का, के आदि में बदल जाता है। इस कारक में मुख्य रूप से निम्नलिखित संबंधों का ज्ञान होता हैः

राम राजा दशरथ के पुत्र थे – रिश्ता

यह प्लाट कितने वर्ग गज का है – परिमाण

यह मूर्ति 100रु. की है – मूल्य

यह राहुल की किताब है – संबंध

11.3.7 अधिकरण कारक (Locative Case)

संज्ञा, सर्वमान के जिस रूप से क्रिया के आधार (स्थान, समय तथा अवसर आदि) का ज्ञान होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं 'में' 'पर' इसके विभक्ति चिह्न हैं। उदाहरण –

बच्चे छत पर कूद रहे हैं।

मछली जल में रहती है।

संज्ञा या सर्वमान का यह आधार दो प्रकार का होता है –

क) भीतरी आधार

इसमें 'में' परसर्ग जुड़ता है। में का अर्थ ही 'भीतर' है। जैसे – मंदिर में मूर्ति है। जेब में रुमाल है। तिल में तेल है आदि।

ख) बाहरी आधार

पर का अर्थ है 'ऊपर' इसलिए बाहरी या ऊपरी आधार का परसर्ग 'पर' है। जैसे – डाल पर चिड़िया बैठी है। मिलने पर बात होगी। बच्चों का स्वभाव अपने पिता पर गया है। आदि

अधिकरण कारक की मुख्य विभक्ति चिह्न 'में', 'पर' हैं। पर इसके अतिरिक्त निम्नलिखित विभक्तियाँ भी अधिकरण कारक के लिए प्रयुक्त की जाती हैं जैसे –

ऊपर – सूली ऊपर सेज पिया की।

के ऊपर – देश के ऊपर संकट मंडरा रहा है।

के बीच – मेढ़क कुएं के बीच दिखाई दे रहे हैं।

को – रविवार को हमारा अवकाश होता है।

कभी–कभी 'में' के स्थान पर 'पर' भी प्रयुक्त हो सकता है और दोनों प्रयोग शुद्ध माने जाते है। जैसे –

सोहन घर में है अथवा सोहन घर पर है।

मैं ईश्वर में आस्था रखती हूँ अथवा में ईश्वर पर आस्था रखती हूँ।

कभी–कभी अधिकरण का परसर्ग लुप्त भी रहता है जैसे –

सड़क के किनारे छायादार वृक्ष लगे हैं। (किनारे – किनारे पर)

मैं तो तुम्हारे भरोसे हूँ। (भरोसे – भरोसे पर)

ओह, मैं पुस्तकें घर भूल आई। (घर – घर में अथवा घर पर)

कभी अधिकरण के परसर्ग के बाद दूसरे कारक का परसर्ग भी आ जाता है जैसे –

पुस्तक में से पढ़ लीजिए।

गिलास खिड़की पर से उठा लाओ।

11.3.8 सम्बोधन कारक (Vocative Case)

संज्ञा सर्वनाम के जिस रूप से किसी को पुकारा जाए अथवा बुलाया जाये, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं इसमें संबोधन चिह्न (!) लगाया जाता है जैसे –

हे भगवान् ! मेरी रक्षा करो

अरे बेवकूफ ! यह क्या कर रहे हो?

अरे भैया ! क्यों रो रहे हो?

भाइयों और बहनों ! उस राक्षस को मैंने मार दिया।

11.4 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 कारक किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?

....

....

....

....

2 कौन–कौन से कारक बिना विभक्ति चिह्न के प्रयुक्त होते है? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

....

....

....

....

3 करण और अपादान कारक में अंतर स्पष्ट करें?

....

....

....

....

4 कर्म और सम्प्रदान कारक में अंतर स्पष्ट कीजिए?

....

....

....

....

11.5 निम्नलिखित वाक्यों में से कारक छाँट कर अपने निर्णय की पुष्टि करें–

1 पुस्तकें अलमारी के अंदर रखी हैं।

2 मैं उसे अपने हाथों सजा दूँगा।

3 भिखारी को भगा दो।

4 राम ने बाण से रावण को मारा।

5 ज्ञानेंद्र! यार बात तो सुन।

6 अपने राज्य में सुख ही सुख है।

7 मैं कल से काम पर जाऊँगा।

8 वृक्ष से फल गिरते हैं।

11.6 संदर्भित पुस्तकें

1 कामता प्रसाद गुरु–हिन्दी व्याकरण, प्रयाग : इंडियन प्रेस, लिमिटेड, 1984.

2 कैलाश चन्द्र भाटिया–व्यावहारिक हिन्दी, दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन, 1989.

3 केशवदत्त रूबाली–मानक हिंदी ज्ञान, अल्मोड़ा : श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, 1992.

अपठित गद्यांश

12.0 रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 पाठ्यपुस्तक में निर्धारित अपठित गद्यांश

12.4 हल सहित उदाहरण

12.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

12.6 पठनीय पुस्तकें

12.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप गद्यांश के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।

12.2 प्रस्तावना

पहले न पढ़े गए गद्य के अंश को अपठित गद्यांश कहते हैं। विद्यार्थियों से अपठित गद्यांश (गद्यांश) पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं। जिसका उत्तर विद्यार्थियों को अपनी भाषा में देना होता है। लेकिन इससे पहले विद्यार्थी के लिए आवश्यक है कि वह गद्यांश को दो–तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़े। प्रश्नों को बारी–बारी से पढ़कर उनके उत्तर गद्यांश में खोजने हैं। जितनी बात प्रश्न में पूछी गई हो, केवल उसी का उत्तर देना होता है। विद्यार्थियों द्वारा दिए गए उत्तर संक्षिप्त तथा सरल भाषा में होने चाहिए। इतना ही नहीं उत्तर लिखते समय वर्तनी का ध्यान रखना अति आवश्यक है। यहाँ तक कि शीर्षक भी गद्यांश के मूलभाव को व्यक्त करने वाला होना चाहिए। अतः इन्हीं सभी बातों का अनुसरण करना अति आवश्यक है।

12.3 पाठ्यपुस्तक में निर्धारित अपठित गद्यांश

अपठित का अर्थ है, जिसे पढ़ा न गया हो, अर्थात – ऐसा गद्यांश जिसे पाठ्यपुस्तकों में नहीं पढ़ा गया हो, पाठ्यपुस्तकों से न लिए गए गद्यांश 'अपठित गद्यांश' कहलाते हैं। जो विद्यार्थी की पाठ्य–पुस्तकों से संबंधित नहीं होता है। विद्यालय में अध्ययन करते हुए विद्यार्थी की पाठ्यपुस्तकों तथा पाठ्येत्तर सामग्री जैसे–समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, इंटरनेट के लेख आदि के माध्यम से अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं। पाठ्येत्तर सामग्री में अपिठत गद्यांश के माध्यम से विद्यार्थी में अर्थग्रहण तथा अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास किया जाता है। इसके अंतर्गत परीक्षा में ऐसे अवतरण दिए जाते हैं, जिन्हें विद्यार्थी की पाठ्य–पुस्तकों से नहीं लिया जाता। परीक्षक विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर के अनुरूप अपठित गद्यांशों का चयन समाचार–पत्र, पत्रिका, पाठ्येत्तर–पुस्तकों आदि से करते हैं। विद्यार्थी को अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उसी अवतरण में से चयनित कर अपनी भाषा में लिखने होते हैं। अपठित गद्यांश में निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाएंगे –

क) पहले तीन प्रश्न गद्यांश की विषय–वस्तु से संबंधित होंगे।

ख) चौथा प्रश्न गद्यांश में से दो कठिन शब्दों के अर्थ लिखने का होगा।

ग) पाँचवा प्रश्न गद्यांश का शीर्षक/केंद्रीय भाव लिखने का होगा।

गद्यांश का सार या गद्य एवं पद्य का अर्थ समझने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने से सही उत्तर तक पहुँचा जा सकता है–

1) प्रत्येक वाक्य के प्रत्येक शब्द को ध्यान से पढ़ना चाहिए।

2) प्रत्येक वाक्य के महत्वपूर्ण शब्द, शब्द–समूह को कच्ची पेंसिल से रेखांकित कर लेना चाहिए क्योंकि पूछे जाने वाले प्रश्न महत्वपूर्ण शब्दों एवं शब्द–समूहों से ही जुड़े होते हैं।

3) एक अवतरण में लेखक एक विचार का विकास करते हुए चलता है, हमें समझना चाहिए कि उसने अवतरण को कहाँ से शुरू किया है और फिर कहाँ–कहाँ होता हुआ अंत में कहाँ तक पहुँचा है। इससे लेखक की विचार–यात्रा का पता लग जाएगा। कुछ प्रश्न इसी विचार–यात्रा से संबंधित होते हैं।

4) पूरे अवतरण को लिखने में लेखक का उद्देश्य क्या है, यह जानने की कोशिश करनी चाहिए। किसी अवतरण में वह उद्देश्य शुरू में ही लिख देता है फिर आगे उसका विस्तार होता है, कभी वह उद्देश्य निष्कर्ष रूप में अंत में होता है। एक प्रश्न अवतरण के केंद्रीय विचार से संबंधित होता है। अवतरण का शीर्षक पूछने पर भी यह केंद्रीय विचार ही हमारे लिए उपयोगी होता है।

प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प ढूँढने के लिए रेखांकित किए गए महत्वपूर्ण शब्द, शब्द–समूह या केंद्रीय विचार हमारी मद्द करते हैं। इससे समय बचता है, संदेह और भ्रांति से बचते हैं तथा उत्तर भी सही तलाश लेते हैं।

12.4 हल सहित उदाहरण

मानव समाज में अनेक ऐसी मान्यताएँ और विश्वास प्रचलित हैं जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता, इन्हें अंधविश्वास के नाम से जाना जाता है जैसे किसी कार्य को प्रारंभ करते समय, घर से बारह निकलते समय छींक देना, बिल्ली का रास्ता काट जाना, घर पर उल्लू का बोलना, टूटते तारे को देखना आदि प्रमुख हैं। इन अंधिविश्वासों को मान्यता प्राप्त होने का मुख्य कारण सम्भवतः सही जानकारी का अभाव तथा धर्म का प्रभाव है। कभी–कभी ये अंधविश्वास हानि का कारण बनते हैं। बच्चे के बीमार हो जाने पर उसका इलाज करवाने की बजाय नज़र लगना बीमारी का कारण मानना तथा नज़र उतारने के लिए झाड़–फूँक करवाना एवं ताबीज़ आदि बाँधना कभी–कभी बच्चे के जीवन को खतरे में डाल देता है। कुछ महिलाएँ अपने बच्चों को नज़र लगने से बचाने के लिए उन्हें काला टीका लगाती हैं। अंधविश्वासों के चुंगल से निकलने के लिए हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तभी प्राप्त हो सकेगा जब शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार हो।

प्रश्न :– क) अंधविश्वास से आप क्या समझते हैं? अंधविश्वास के दो उदाहरण लिखिए।

ख) अंधविश्वास बुरी चीज़ें हैं, फिर भी लोग इन्हें क्यों मानते हैं?

ग) बीमार हो जाने पर लोग इलाज़ करवाने की बजाय क्या–क्या उपाय करते हैं? क्यों?

घ) अंधविश्वास से छुटकारा कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर :–क) समाज में प्रचलित वे मान्यताएँ और विश्वास जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता, अंधविश्वास कहलाता है जैसे– बिल्ली का रास्ता काटना तथा टूटते तारे को देखना।

ख) बुरी चीज़ होने पर भी लोग अज्ञानता तथा धर्म के प्रभाव के कारण अंधविश्वासों को मानते हैं।

ग) बीमार हो जाने पर लोग इलाज न करवाकर नज़र उतारना, झाड़–फूँक करवाना तथा ताबीज़ आदि बाँधने के उपाय अंधविश्वास होने के कारण होते हैं।

घ) शिक्षा के प्रचार–प्रसार द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर अंध–विश्वास से छुटकारा पाया जा सकता है।

ङ)	अशिक्षा बनाम अंधविश्वास।

2) सभ्य आचरण और व्यवहार ही शिष्टाचार कहलाता है। जीवन में शिष्टाचार का बहुत महत्व है। बातचीत करते समय सभी को एक–दूसरे से शिष्टाचार से बात करनी चाहिए। छोटों को बड़ों से और बड़ों को छोटों से बात करते समय शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिए। शिष्टाचार का पालन करने के लिए उम्र की कोई सीमा नहीं होती है। शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई गलती हो जाती है तो वे खेद प्रकट करते हैं और सहज ही अपनी गलती स्वीकार करते हैं। विद्यार्थी–जीवन में तो शिष्टाचार का और भी अधिक महत्व होता है क्योंकि यही शिक्षा जीवन का आधार बनती है। स्कूल की प्रार्थना–सभा में पंक्ति में आना–जाना, कक्षा में शोर न करना, अध्यापकों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना, सच बोलना, सहपाठियों से मिलजुल कर रहना, स्कूल को साफ–सुथरा रखना, स्कूल की सम्पत्ति को नुकसान न पहुँचाना और छुट्टी के समय धक्कामुक्की न करना शिष्ट बच्चों की निशानी है। ऐसे बच्चों को सभी पसंद करते हैं।

प्र. क)	शिष्टाचार किसे कहते हैं?

ख)	शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई गलती हो जाती है तो वे क्या करते हैं।?

ग)	कैसे बच्चों को सभी पसंद करते हैं?

घ)	'सभ्य' और 'खेद' शब्दों के अर्थ लिखें।

ङ)	उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर) क)	अच्छे आचार–व्यवहार को शिष्टाचार करते हैं।

ख)	शिष्ट व्यक्तियों से जब कोई गलत होती है तो वे अपनी गलती मानकर क्षमा माँग लेते हैं।

ग)	अच्छे चाल–चलन तथा व्यवहार का जो बच्चे पालन करते हैं उन्हें सभी पसंद करते हैं।

घ)	सभ्य–अच्छे आचार–विचार वाला, शिष्ट। खेद–दुःख, रंज।

ङ)	सदाचार।

3) नारी नर की शक्ति है। वह माता, बहन, पत्नी और पुत्री आदि रूपों में पुरुष में कर्तव्य की भावना सदा जगाती रहती है। वह ममतामयी है। अतः पुष्प के समान कोमल है किन्तु चोट खाकर जब वह अत्याचार के लिए सन्नद्ध हो जाती है, तो वज्र से भी ज्यादा कठोर हो जाती है। तब वह न माता रहती है, न प्रिया, उसका एक ही रूप होता है और वह है दुर्गा का। वास्तव में नारी सृष्टि का ही रूप है, जिसमें सभी शक्तियाँ समाहित हैं।

प्र.क) नारी किस–किस रूप में नर में शक्ति जगाती है?

ख) नारी को फूल–सी कोमल और वज्र–सी कठोर क्यों माना जाता है?

ग) नारी दुर्गा का रूप कैसे बन जाती है?

घ) रेखांकित शब्दों के अर्थ लिखिए :– ममतामयी, सन्नद्ध

ङ) उचित शीर्षक दें।

उत्तर) क) नारी नर में माता, बहन, पत्नी और पुत्री के रूप में शक्ति जगाती है।

ख) ममतामयी होने के कारण नारी फूल–सी कोमल है और जब उस पर चोट पड़ती है तो वह अत्याचार का मुकाबला करने के लिए वज्र सी कठोर हो जाती है।

ग) जब नारी अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए वज्र के समान कठोर बन जाती है तब वह दुर्गा बन जाती है।

घ) ममतामयी–ममता से भरी हुई, सन्नद्ध–तैयार, उद्यत।

ङ) नारी : नर की शक्ति।

4) मनोरंजन का जीवन में विशेष महत्त्व है। दिनभर की दिनचर्या से थका–मांदा मनुष्य रात को आराम का साधन खोजता है। यह साधन है– मनोरंजन। मनोरंजन मानव–जीवन में संजीवनी बूटी का काम करता है। यही आज के मानव के थके–हारे शरीर को आराम की सुविधा प्रदान करता है। यदि आज के मानव के पास मनोरंजन के साधन न होते हो उसका जीवन नीरस बनकर रह जाता है। यह नीरसता मानव जीवन को चक्की की तरह पीस डालती और मानव संघर्ष तथा परिश्रम करने के योग्य भी न रहता।

प्र. क) मनोरंजन क्या है?

ख) यदि मनुष्य के पास मनोरंजन के साधन न होते तो उसका जीवन कैसे होता?

ग) नीरस मानव जीवन का सबसे बड़ा नुक्सान क्या होता है?

घ) रेखांकित शब्दों के अर्थ लिखिए :– दिनचर्या, संजीवनी बूटी

ङ) उचित शीर्षक दें।

उत्तर)

क) मनोरंजन से मनुष्य के थके–मांदे शरीर में स्फूर्ति आ जाती है और यह मानव के जीवन में संजीवनी बूटी का काम करता है।

ख) यदि मनुष्य के पास मनोरंजन के साधन न होते तो उसका जीवन नीरस–सा बन जाता।

ग) नीरस मानव का जीवन परिश्रम करने के योग्य नहीं रह जाता। वह जीवन–संघर्षों का मुकाबला नहीं कर पाता।

घ) दिनचर्या– दिन भर किया जाने वाला काम–काज, संजीवनी बूटी– जीवन दान देने वाली औषध।

ङ) मनोरंजन का महत्व।

5) चरित्र–निर्माण जीवन की सफलता की कुंजी है। जो मनुष्य अपने चरित्र–निर्माण की ओर ध्यान देता है, वही जीवन में विजयी होता है। चरित्र–निर्माण से मनुष्य के भीतर ऐसी शक्ति जागृत होती है, जो उसे जीवन संघर्ष में विजयी बनाती है। ऐसा व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। वह जहाँ कहीं भी जाता है, अपने चरित्र–निर्माण की शक्ति से अपना प्रभाव स्थापित कर लेता है। वह सहस्त्रों और लाखों के बीच में भी अपना अस्तित्व रखता है। उसे देखते ही लोग उसके व्यक्तित्व के समाने अपना मस्तक झुका लेते हैं। उसके व्यक्तित्व में सूर्य का तेज, आंधी की गति और गंगा के प्रवाह की अबाधता है।

प्र.क) जीवन में चरित्र निर्माण का क्या महत्व है?

ख) अच्छे चरित्र का व्यक्ति जीवन में सफलता क्यों प्राप्त करता है?

ग) चरित्रवान् व्यक्ति की तीन विशेषताएँ लिखें।

घ) रेखांकित शब्दों के अर्थ लिखें–सहस्त्रों, व्यक्तित्व।

ङ उचित शीर्षक दें।

उत्तर) क) चरित्र–निर्माण जीवन की सफलता की कुँजी है।

ख) चरित्र–निर्माण से मनुष्य की जीवन में आने वाले संघर्षों का मुकाबला करने की शक्ति प्राप्त होती है और वह जीवन–संघर्ष में सफलता प्राप्त कर लेता है।

ग) चरित्रवान् व्यक्ति का सब लोग आदर करते हैं। उसका अपना अलग व्यक्तित्व होता है। वह जीवन में सदा सफल रहता है।

घ) सहस्त्रों : दस–सौवों (हजारों की संख्या), व्यक्तित्व : व्यक्ति का गुण

ङ चरित्र निर्माण : सफलता की कुंजी।

12.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

1) रैबीज़ एक जानलेवा खतरनाक बीमारी है। यह बीमारी मुख्य रूप से कुत्तों द्वारा फैलती है। कुत्तों में रैबीज दो प्रकार होती है– उत्तेजक और मूक। उत्तेजक रैबीज़ग्रस्त कुत्ता बगैर कारण के भौंकता और दौड़ता रहता है और लकड़ी, मिट्टी, घास आदि खाने लगता है और अधिकतम पाँच दिन के भीतर मर जाता है। मूक रैबीज में कुत्ता अनमना–सा हो जाता है और किसी अँधेरे और एकांत स्थान में बेहोशी की–सी अवस्था में पड़ा रहता है। इसी स्थिति में कुत्ता तीन चार दिन में मर जाता है। रैबीज़ के वायरस मुख्यतः कुत्ते की लार में पाए जाते हैं।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–

क) रैबीज़ बीमारी मुख्य रूप से किनके द्वारा फैलती है?

....

....

....

....

....

ख) कुत्तों में कितने प्रकार की रैबीज़ होती है?

....

....

....

....

....

ग) 'मूक रैबीज़' के क्या लक्षण हैं?

....

....

....

....

....

घ) 'उत्तेजक रैबीज़' के क्या लक्षण हैं?

....

....

....

....

....

ङ) कुत्ते में रैबीज़ के वायरस कहाँ पाए जाते हैं?

....

....

....

....

....

2) वसंत को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। प्रकृति ऋतुराज वसंत का हृदय से स्वागत करती है। वसंत प्रकृति का श्रृंगार करता है। इस ऋतु के आगमन पर वृक्षों में नए पत्ते निकल आते हैं। कलियाँ खिलकर फूलों का रूप धारण कर लेती हैं। चारों ओर मनमोहक सुगंध बिखर जाती है। कोयल कूकने

लगती है। वसंत ऋतु में 'वसंत पंचमी' का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन देवी सरस्वती की पूजा की जाती है। लोग पीले वस्त्र पहनते हैं और घरों में पीले पकवान बनाए जाते हैं। भारतीय साहित्य ऋतुराज वसंत के सौंदर्य–वर्णनों से भरा पड़ा है।

क) गद्यांश में वसंत को किस नाम से बुलाया है?

....

....

....

....

....

ख) वसंत के आते ही प्रकृति में कौन–सा बदलाव आता है?

....

....

....

....

....

ग) 'वसंत पंचमी' के दिन क्या किया जाता है?

....

....

....

....

....

घ) प्रकृति का शृंगार कौन करता है?

....

....

....

....

....

ङ) ऋतुराज का क्या अर्थ है?

....

....

....

....

....

12.6 पठनीय पुस्तकें :–

- डॉ. राघव प्रकाश– व्याख्याता– हिन्दी

अशुद्ध शब्दों/वाक्यों को शुद्ध करना तथा अनुच्छेद लेखन

13.0 रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 भाषा का स्वरूप

13.4 पाठ्यक्रम में निर्धारित अशुद्ध शब्द

13.5 पाठ्यक्रम में निर्धारित वाक्यों को शुद्ध करना

13.6 पाठ्यक्रम में निर्धारित अनुच्छेद लेखन

13.7 अनुच्छेद लेखन की विशेषताएँ

13.8 अनुच्छेद लेखन की शैलियाँ

13.9 उदाहरणार्थ प्रश्न

13.10 अभ्यासार्थ प्रश्न

13.11 पठनीय पुस्तकें

13.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के उपरान्त आप भाषा के स्वरूप से अवगत हो सकेंगे और साथ ही अशुद्ध शब्दों व अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप से परिचित हो सकेंगे। अनुच्छेद लेखन क्या होता है और इसकी विशेषताओं तथा शैलियों से भी अवगत होंगे।

13.2 प्रस्तावना

सामाजिक प्राणी होने के कारण मानव समाज में रहने वाले लोगों से हमेशा सम्पर्क में रहता है। इसी सम्पर्क के कारण उसे अपने विचार जब सामने वाले व्यक्ति तक पहुँचाने होते हैं तो वह भाषा का प्रयोग करता है। अतः मानव के अपने विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाले पद समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य को लिखते समय या बोलते समय कई प्रकार की अशुद्धियाँ होती हैं। कारण यह है कि जब हमारा उच्चारण ही सही नहीं होगा तो हम लिखित रूप में भी अनेक गलतियाँ करते हैं। व्याकरण के नियमों का सही ज्ञान न होने पर वाक्य में अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ हो जाती हैं जिन पर ध्यान देना अति आवश्यक हो जाता है।

अनुच्छेद से तात्पर्य है कि किसी एक भाव या विचार पर कुछ ही पंक्तियों में लिखा गया लेख अनुच्छेद कहलाता है। अनुच्छेद लेखन में केवल एक ही अनुच्छेद में अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप में लिखना होता है। जिसके लिए विषय के बारे में अच्छी तरह विचार करके भावों को एक क्रम में लिखना पड़ता है। इतना ही नहीं भाषा का भी ध्यान रखना पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि किसी भी विषय पर अनुच्छेद लिखते समय इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

13.3 भाषा का स्वरूप

भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का साधन है। इस साधन का शुद्ध होना आवश्यक है। भाषा के लिखित रूप का शुद्ध होना और भी आवश्यक है, क्योंकि भावों तथा विचारों को व्यक्त करने के लिए हम भाषा का ही सहारा लेते हैं। मौखिक रूप से भाषा के अशुद्ध होने पर उतनी हानि नहीं होती जितनी की लिखित रूप से भाषा के अशुद्ध होने पर होती है। मौखिक भाषा के अशुद्ध उच्चारण से कम से कम वक्ता का आशय तो जैसे–तैसे समझ में आ जाता है, परंतु अशुद्ध वर्तनी के प्रयोग करने पर कथन स्पष्ट ही नहीं हो पाता। वर्तनी की अशुद्धियाँ और गलत उच्चारण एक दूसरे पर आधारित हैं। कुछ गलत वर्तनी को पढ़ते हैं इसलिए गलत उच्चारण करते हैं। इस प्रकार दोनों एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं।

हिन्दी में गलत वर्तनियों के पीछे अनेक कारण हैं। जैसे गलत उच्चारण का प्रचलन किसी क्षेत्रीय बोली का प्रभाव होना, नियमों को न जानना, उच्चारण अव्ययों का सही प्रयोग न करना आदि।

भाषा के शुद्ध उच्चारण की सर्वाधिक महत्ता है। हिन्दी हमारी विज्ञानिक भाषा है। यह जैसी उच्चारित की जाती है। वैसे ही लिखी–पढ़ी जाती है। अतः इसमें अशुद्धियों का कारण अशुद्ध उच्चारण ही है।

हिन्दी लेखन में अशुद्ध लेखन की गंभीर समस्या है। हिन्दी भाषी राज्यों की तो बात ही क्या है, हिन्दी भाषी राज्यों में भी शुद्ध बोलना, लिखना बड़ी समस्या है। संधि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग आदि की उचित जानकारी के अभाव में प्रायः शब्दों का अशुद्ध उच्चारण किया जाता है, जैसे– अत्यधिक न बोलकर अत्याधिक बोल दिया जाता है और वैसा ही लिखा भी जाता है। नीचे ऐसे शब्द व वाक्य दिए जा रहे हैं जिनके उच्चारण में छात्र सामान्यतः अशुद्धियाँ करते हैं–

1) स्वर अथवा मात्रा सम्बन्धी अशुद्धियाँ

क) अ–आ के गलत प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**
लागान	लगान
आजकाल	आजकल
नराज़	नाराज
साहास	साहस

ख) ई–ई के गलत प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ :–

अशुद्ध	**शुद्ध**
हानी	हानि
परीचय	परिचय
निरस	नीरस
पती	पति

ग) उ–ऊ के गलत प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ :–

अशुद्ध	**शुद्ध**
सुरज	सूरज
शिशू	शिशु
साधू	साधु
प्रभू	प्रभु
पशू	पशु

घ) ए–ऐ के गलत प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ :–

अशुद्ध	**शुद्ध**
एनक	ऐनक
ऐक	एक
देनिक	दैनिक
सेनिक	सैनिक

ङ) ओ–औ के गलत प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ :–

अशुद्ध	**शुद्ध**
नोकरी	नौकरी
मौर	मोर
कोआ	कौआ
त्यौहार	त्योहार
कौयला	कोयला

2) अनुस्वार या अनुनासिक की शुद्धियाँ :–

अशुद्ध	**शुद्ध**
गनेश	गणेश
गुन	गुण
प्रान	प्राण
रामायन	रामायण
शरन	शरण

3) स्थान सम्बन्धी अशुद्धियाँ :–

अशुद्ध	**शुद्ध**
कलयाण	कल्याण
प्रशाद	प्रसाद
आसा	आशा
जात्रा	यात्रा
तृस्ना	तृष्णा

4) द्वित्व व्यंजन की अशुद्धियाँ :–

द्वित्य व्यंजन की अशुद्धि पूरे अर्थ को ही बदल डालती है। प्रायः द्वित्य वाले व्यंजनों के एकल व्यंजन रूपों का भी एक निश्चित अर्थ होता है। अतः ऐसी असावधानी अनर्थ कर डालती है।

अशुद्ध	**शुद्ध**
पका	पक्का
पटा	पट्टा
मिटी	मिट्टी

पला	पल्ला

5) **संयुक्त व्यंजन की अशुद्धियाँ :–**

संयुक्त व्यंजन के स्थान पर अन्य व्यंजनों के प्रयोग में भी अशुद्धि हो सकती है, जैसे 'लग्न' के स्थान पर 'लगन' और 'लगन' के स्थान पर 'लग्न' शब्द का प्रयोग पूरे अर्थ को बदल सकता है।

6) **विसर्ग संबंधी शुद्धियाँ :–**

अशुद्ध	**शुद्ध**
प्राय	प्रायः
प्रातकाल	प्रातःकाल
निसंतान	निःसंतान

7) **श, ष, स के प्रयोग की अशुद्धियाँ :–**

अशुद्ध	**शुद्ध**
प्रशंशा	प्रशंसा
दिनेस	दिनेश
भासा	भाषा
नास	नाश
देस	देश
कलस	कलश
सरबत	शरबत

8) **अल्पप्राण और महाप्राण की शुद्धियाँ :–**

अशुद्ध	**शुद्ध**
झूट	झूठ

भूक	भूख
धोका	धोखा
श्रेष्ट	श्रेष्ठ
घनिष्ट	घनिष्ठ
अभीष्ट	अभीष्ठ
धंदा	धंधा

9) लिंग और वचन संबंधी अशुद्धियाँ :–

1) मेरे माता जी कल जाएँगे।

मेरे माता जी कल जाएँगी।

2) यह पुस्तक मेरा है।

यह पुस्तक मेरी है।

10) कारक संबंधी अशुद्धियाँ :–

1) रोगी को दवाई लाओ।

रोगी के लिए दवाई लाओ।

2) मैंने दिल्ली जाना है।

मुझे दिल्ली जाना है।

3) मेरे को पिता जी ने डाँटा।

मुझे पिता जी ने डाँटा

11) संज्ञा सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ :–

1) तुम तुम्हारा काम करो।

तुम अपना काम करो।

2) सभी ने सबका काम कर लिया।

सभी ने अपना काम कर लिया।

12) क्रिया विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ :–

1) मुझे केवल मात्र तीस रुपए चाहिए।

मुझे मात्र तीस रुपए चाहिए।

2) वह सारी रात भर पढ़ता रहा।

वह सारी रात पढ़ता रहा।

13.4 पाठ्यक्रम में निर्धारित अशुद्ध शब्द

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अंधेरा	अँधेरा	श्रृंगार	शृंगार
आजीवका	आजीविका	ऋषी	ऋषि
आमान्य	अमान्य	ऐक्यता	एकता
आशिर्वाद	आशीर्वाद	क्रतहन	कृतहन
ईर्या	ईर्ष्या	क्षीन	क्षीण
उज्वल	उज्ज्वल	गीध	गिद्ध
उपरोक्त	उपर्युक्त	चिन्ह	चिह्न
आध्ययन	अध्ययन	चांद	चाँद
अभीराम	अभिराम	जोत्सना	ज्योत्स्ना
अनुगृह	अनुग्रह	नीरोग	निरोग
अहिल्या	अहल्या	दवाईयाँ	दवाइयाँ

कोशल्या	कौशल्या	निरिक्षण	निरीक्षण
कवित्री	कवयित्री	पुरष्कार	पुरस्कार
शिघ्र	शीघ्र	पुज्य	पूज्य
पष्ट	पष्ठ	प्रातकाल	प्रातःकाल
सामुहिक	सामूहिक	वधु	वधू
साहित्यक	साहित्यिक	मैथलीशरण	मैथिलीशरण
विशीष्ट	विशिष्ट	पार्वतीय	पर्वतीय
शंसोधन	संशोधन	पुर्नजन्म	पुनर्जन्म
रचयता	रचियता	स्रष्टि	सृष्टि

13.5 वाक्यों को शुद्ध करना

यहाँ कुछ ऐसी वाक्य अशुद्धियाँ दी जा रही हैं जो विद्यार्थियों से हो भी जाती हैं और परीक्षा में संभावित भी हैं–

1) अशुद्ध वाक्य– 'उत्साह' नामक शीर्षक निबंध अच्छा है।
   शुद्ध वाक्य – 'उत्साह' शीर्षक निबंध अच्छा है।

2) अशुद्ध वाक्य– आपके प्रश्न का समाधान मेरे पास है।
   शुद्ध वाक्य – आपके प्रश्न का उत्तर मेरे पास है।

3) अशुद्ध वाक्य– हमारे प्रांत के मनुष्य मेहनती हैं।
   शुद्ध वाक्य – हमारे प्रांत के लोग मेहनती हैं।

4) अशुद्ध वाक्य– मेरे को कुछ याद नहीं आ रहा।
   शुद्ध वाक्य – मुझे कुछ याद नहीं आ रहा।

5) अशुद्ध वाक्य– मैंने इस काम में बड़ी अशुद्धि की।

	शुद्ध वाक्य –	मैंने इस काम में बड़ी भूल की।
6)	अशुद्ध वाक्य–	रेडियो की उत्पत्ति किसने की?
	शुद्ध वाक्य –	रेडियो का आविष्कार किसने किया?
7)	अशुद्ध वाक्य–	प्राय सभी लोग दुखी हैं।
	शुद्ध वाक्य –	प्रायः सभी लोग दुखी हैं।
8)	अशुद्ध वाक्य–	आज उसके गुप्त रहस्य का राज़ खुला।
	शुद्ध वाक्य –	आज उसके रहस्या का राज़ खुला।
9)	अशुद्ध वाक्य–	वो क्या जाने हमारी मुसीबतें।
	शुद्ध वाक्य –	वे/वह क्या जाने हमारी मुसीबतें।
10)	अशुद्ध वाक्य–	उसने मेरा गाना और घर देखा।
	शुद्ध वाक्य –	उसने मेरा गाना सुना और घर देखा।

13.6 अनुच्छेद लेखन (Paragraph writing)

हम जानते हैं कि किसी विषय को सार के रूप में लिखना अनुच्छेद लेखन कहलाता है। एक ही अनुच्छेद में विषय की सारगर्भित जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। अनुच्छेद कई प्रकार से लिखा जा सकता है। वर्णन, विवरण, रूप वर्णन, जीवनी आदि। अनुच्छेद के लिए कोई भी विषय जैसे घटना या अनुभव लिया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि किसी एक भाव या विचार पर कुछ ही पंक्तियों में लिखा गया लेख अनुच्छेद कहलाता है। अनुच्छेद लेखन में केवल एक ही अनुच्छेद में अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप में लिखना होता है।

अनुच्छेद शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Paragraph' शब्द का हिंदी पर्याय है। अनुच्छेद 'निबंध' का संक्षिप्त रूप होता है। इसमें किसी विषय के किसी एक पक्ष पर 80 से 100 शब्दों में अपने विचार व्यक्त किए जाते हैं। इसका मुख्य कार्य किसी एक विचार को इस तरह लिखना होता है, जिसके सभी वाक्य एक–दूसरे से बंधे होते हैं।

अनुच्छेद अपने आप में स्वतन्त्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद के मुख्य विचार या भाव की कुंजी या तो आरम्भ में रहती है या अन्त में। उच्च कोटि के अुनच्छेद–लेखन में मुख्य विचार अन्त में दिया जाता है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

1) अनुच्छेद लिखने से पहले रूपरेखा, संकेत–बिंदु आदि बनानी चाहिए।

2) अनुच्छेद लिखते समय पुनरावृत्ति दोष से बचना चाहिए।

3) अनुच्छेद में विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन करें।

4) भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए।

5) एक ही बात को बार–बार न दोहराएँ।

6) अनावश्यक विस्तार से बचें, लेकिन विषय से न हटें।

7) शब्द–सीमा को ध्यान में रखकर ही अनुच्छेद लिखें।

8) पूरे अनुच्छेद में एकरूपता होनी चाहिए।

9) विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का प्रयोग भी कर सकते हैं।

10) मुहावरे व लोकोक्तियों आदि का प्रयोग करके भाषा को सुंदर एवं व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

13.7 अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1) अनुच्छेद किसी एक भाव या विचार या तथ्य को एक बार, एक ही स्थान पर व्यक्त करता है। इसमें अन्य विचार नहीं रहते।

2) अनुच्छेद के वाक्य–समूह में उद्देश्य की एकता रहती है। अप्रासंगिक बातों को हटा दिया जाता है।

3) अनुच्छेद के सभी वाक्य एक–दूसरे से गठित होते हैं।

4) अनुच्छेद एक स्वतन्त्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।

5) उच्च कोटि के अनुच्छेद–लेखन में विचारों को इस क्रम में रखा जाता है कि उनका आरम्भ, मध्य और अन्त आसानी से व्यक्त हो जाए।

6) अनुच्छेद सामान्यतः छोटा होता है, किन्तु इसकी लघुता या विस्तार विषयवस्तु पर निर्भर करता है।

7) अनुच्छेद की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

8) अनुच्छेद में सीमित शब्दों में यथासंभव पूरी बात कहने का प्रयास रहता है। यह गागर में सागर भरने के समान है।

13.8 अनुच्छेद–लेखन की शैलियाँ

भाषा तथा साहित्य को जोड़ने वाली संकल्पना को 'शैली' कहा जाता है। भाषा की प्रयुक्ति विशेष, विधा विशेष तथा प्रयोक्ता विशेष के अनुसार भाषा में जो विभिन्नताएँ दिखाई देती हैं, उन्हें भाषा की शैलियाँ कहा जाता है। अनुच्छेद लेखन में प्रायः निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग होता है–

1) भावात्मक शैली

2) समास शैली

3) व्यंग्य शैली

4) तरंग शैली

5) चित्र शैली

6) व्यौरा शैली

इसके अतिरिक्त लेखक अनेक प्रकार की शैलियों जैसे वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, सामान्य बोलचाल की शैली का प्रयोग कर सकता है। अपनी रूचि और विषय के अनुकूल शैली के प्रयोग से अनुच्छेद में सजीवता आ जाती है। वर्णन, विचार और भाव के अनुकूल शैली का प्रयोग होना चाहिए जिससे अनुच्छेद में प्रवाह, रमणीयता आदि गुण समाविष्ट हो जाते हैं।

निम्नलिखित अनुच्छेदों पर प्रकाश डाला जा रहा हैं–

1) समय किसी के लिए नहीं रूकता

'समय' निरंतर बीतता रहता है, कभी किसी के लिए नहीं ठहरता जो व्यक्ति समय के मोल को पहचानता है, वह अपने जीवन में उन्नति प्राप्त करता है। समय बीत जाने पर कार्य करने से भी फल की प्राप्ति नहीं होती और पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। जो विद्यार्थी समय पर उठता है, अपने दैनिक कार्य समय पर

करता है तथा समय पर सोता है वही आगे चलकर सफलता व उन्नति प्राप्त करता है। जो व्यक्ति आलस में आकर समय गँवा देता है, उसका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। संतकवि कबीरदास जी ने भी कहा है–

"कल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परलै होइगी, बहुरि करेगा कब।"

समय का एक–एक पल बहुत मूल्यवान है और बीता हुआ पल वापस लौटकर नहीं आता। इसीलिए समय का महत्त्व पहचानकर प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए और अपने लक्ष्य की प्राप्ति करनी चाहिए। जो समय बीत गया उस पर वर्तमान समय बरबाद न करके आगे की सुध लेना ही बुद्धिमानी है।

2) अभ्यास का महत्त्व

यदि निरंतर अभ्यास किया जाए तो असहाय को भी साधा जा सकता है। ईश्वर ने सभी मनुष्यों को बुद्धि दी है। उस बुद्धि का इस्तमाल तथा अभ्यास करके मनुष्य कुछ भी सीख सकता है। अर्जुन तथा एकलव्य ने निरंतर अभ्यास करके प्रत्येक आँधी का डटकर मुकाबला करते हैं। अपने अस्तित्व को पाने के लिए संघर्ष करते हैं। इसका कारण यह है कि वे संघर्ष करना चाहते हैं। उनके भीतर गहन आत्मबल है जो उन्हें टूटने नहीं देता। इसी प्रकार मनुष्य को भी अपने भीतर आत्मविश्वास पैदा करना होगा। उसे विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए संघर्ष करना होगा। अगर हमारे मन के भीतर यह विश्वास होगा, आत्मबल होगा, तभी हम हर परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। हमारी शक्ति तब समाप्त हो जाती है, जब मन में विश्वास की कमी होती है। हारे हुए मन से कोई भी जंग नहीं जीती जा सकती। हमें आशावान बनना होगा। अपनी सोच को सकारात्मक बनाना होगा। तभी हम अपने संकल्पों को पूरा कर सकते हैं।

3) खेलों का महत्व

खेल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं। चाहे बच्चा, जवान या बुजुर्ग हो, सभी को खेलना अच्छा लगता है। थके दिमाग को आराम देने के लिए खेल अच्छे साधन हैं। खेल मन को प्रसन्न रखते हैं। एक खिलाड़ी कुछ देर के लिए अपनी सारी चिंताएँ भूल जाता है। खेलने से शरीर में चुस्ती–फुर्ती आती है। कई विद्‌यार्थी खेल को पढ़ाई में बाधक समझते हैं, परंतु ऐसा सोचना उनकी भूल है। मानसिक विकास के साथ–साथ शारीरिक विकास भी आवश्यक है इसलिए शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न करने तथा मस्तिष्क को तरोताज़ा रखने के लिए प्रतिदिन खेलना आवश्यक है। आजकल सरकार भी खेलों को खूब प्रोत्साहित कर रही है। सरकार की ओर से खेलों की बड़ी–बड़ी प्रतियोगिताएँ होती हैं। खेलों से आपसी सहयोग तो बढ़ता ही है। उसी प्रकार वरदराज ने जो कि एक मंदबुद्धि बालक था, निरंतर अभ्यास द्वारा विद्या प्राप्त की और ग्रंथों की रचना की। उन्हीं पर एक प्रसिद्ध कहावते बनीं–

"करत–करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।

रसरि आवत जात में, सिल पर परत निसान।"

यानी जिस प्रकार रस्सी की रगड़ से कठोर पत्थर पर भी निशान बन जाते हैं, उसी प्रकार निरंतर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन सकता है। यदि विद्यार्थी प्रत्येक विषय का निरंतर अभ्यास करें, तो उन्हें कोई भी विषय कठिन नहीं लगेगा और वे सरलता से उस विषय में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

3) मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

हमारा मन बहुत चंचल होता है। उसमें हर पल कई तरह के विचार आते–जाते रहते हैं। तरह–तरह की चीज़ों, घटनाओं का प्रभाव हमारे मन पर भी पीड़ता है। किसी दुखद घटना से मन उदास हो जाता है। मन के भीतर उठने वाले ये विचार हमारे चेहरे पर भी स्पष्ट रूप से झलकते हैं। कोई नया खिलौना देखकर जिस प्रकार एक बच्चा चहकता है, उसी तरह नई–नई चीज़ें देखकर हम भी चहकने लगते हैं। टूटे खिलौने को देखकर बच्चे का मन खिन्न हो जाता है। जीवन की स्थितियों में भी यह उतार–चढ़ाव लगा रहता है। कभी सुख तो कभी दुख, कभी धूप तो कभी छाया लेकिन हमें परिस्थितियों से हारना नहीं चाहिए। यदि मन में निराशा, उदासी और पराजय का भाव होगा तो हमारा व्यवहार भी वैसा ही होगा। आपने आँधी–तूफान में झूमते हुए पेड़ों को तो जरूर देखा होगा। कितनी भी तेज़ आँधी क्यों न आए, वह हार नहीं मानता और स्थिर रहने का प्रयास करता है।

13.9 उदाहरणार्थ प्रश्न

प्र1) निम्नलिखित वाक्यों में कुछ अशुद्ध शब्द दिए गए हैं, वर्तनी के आधार पर उन्हें शुद्ध कीजिए।

1) हमारे स्कूल में पाँच सौ बच्चा पढ़ता है।
   हमारे स्कूल में पाँच सौ बच्चे पढ़ते हैं।

2) नदी में पुल बाँधा गया।
   नदी पर पुल बाँधा गया।

3) मेरे को पुस्तक दो।
   मुझे पुस्तक दो।

4) वह दौड़ रहे हैं।
   वे दौड़ रहे हैं।

5) मीरा प्रसिद्ध कवि है।
   मीरा प्रसिद्ध कवियत्री है।

6) बचत करना चाहिए।

बचत करनी चाहिए।

7) माता–पिता की आज्ञा को मानो।

माता–पिता की आज्ञा मानो।

8) घोड़े दौड़ रहा है।

घोड़ा दौड़ रहा है।

9) उसने हमारी बात सुना।

उसने हमारी बात सुनी।

10) हम आपको कल मिलेंगा।

हम आपको कल मिलेंगे।

13.10 अभ्यासार्थ प्रश्न

क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :–

1 मेरे को पढ़ना अच्छा लगता है।

2 मौसम बड़ी सुहावनी है।

3 गरीबों से दया करो।

4 रोगी के प्राण निकाल गया।

5 हर एक प्राणि सुख चाहता है।

6 इन सबों ने काम नहीं करा।

7 यह पुस्तक मैं पढ़ा हूँ।

8 क्या तुम सारा काम करना है।

9 कृपया करके मेरी बात सुन लो।

10 तुम तुम्हारे भाई के पास बैठो।

11 उसने इधर देखा और बोला

12 दादा हमारे घर आया है।

13 बच्चों से क्रोध मत करा।

14 हमारे से कोई बात नहीं हो सकती।

ख) अभ्यासार्थ प्रश्न

निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए।

1) मेरा प्रिय दोस्त

....

....

....

....

....

2) समय का सदुपयोग

....

....

....

....

....

3) कंप्यूटर का महत्व

....

....

....

....

....

13.8 पठनीय पुस्तकें

- डॉ. राघव प्रकाश– व्याख्याता– हिंदी